

में
स्टीव जॉब्स
बोल रहा हूँ





मैं स्टीव जॉब्स बोल रहा हूँ

सं. महेश शर्मा



प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

ISO 9001:2008 प्रकाशक

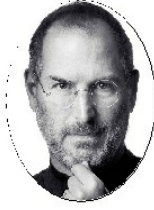
स्टीव जॉब्स की नवाचार सोच को
समर्पित,
जिसने विश्व को
अलग ढंग से सोचने की प्रेरणा दी!

संपादकीय

स्टीव जॉन्स को कंप्यूटर तकनीक का 'माइकेल एंजेलो' कहा गया है। जिन उपकरणों का आविष्कार व प्रसार उन्होंने किया, उनके पीछे सुविधा और साधन की सहजता के साथ कलात्मक प्रस्तुति अहम रहती थी। छोटे कंप्यूटर हों, संगीत सुनने के यंत्र, मोबाइल उपकरण या निपट संकुचित टैबलेट संयंत्र, सुरुचि और प्रतिभा के बल पर स्टीव जॉन्स ने अपने बनाए उपकरणों को दुनिया भर में पहचान दिलाई। ऐसी प्रतिमा कम ही लोगों में मिलती है।

अगाध कल्पनाशीलता के बल पर कंप्यूटरों के सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर से लेकर बनावट तक में उन्होंने अलग छाप छोड़ी। स्टीव जॉन्स ने आईपॉड की खोज करके संगीत की दुनिया को लोगों की जेबों में समेट दिया। आईफोन बनाया तो फोन में कंप्यूटर का जादुई अहसास भर दिया। फिर आईपैड के आविष्कार ने सूचना तकनीक की तमाम सुविधाओं को एक उपकरण में भर दिया। इस तरह उन्होंने कंप्यूटर जैसे उपकरण को रोजमर्रा बरती जानेवाली चीजों की तरह इस्तेमाल करने योग्य बना दिया। इससे दुनिया भर में सूचना क्रांति को काफी बल मिला। प्रस्तुत पुस्तक में स्टीव जॉन्स की प्रेरक सूक्तियों का संकलन किया गया है, जो प्रेरणा तो प्रदान करती ही हैं, हमारा मार्गदर्शन भी करती हैं।

□



संक्षिप्त जीवनी

स्टीव जॉब्स का जन्म 24 फरवरी, 1955 को सैन फ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया में हुआ। जन्म के कुछ सप्ताह बाद ही उनकी जैविक माता ने उन्हें कानूनी दस्तावेजों पर दस्तखत करने के बाद सैन फ्रांसिस्को के पॉल और क्लारा जॉब्स के हवाले कर दिया। इस दंपती को दस वर्षों से एक संतान की तलाश थी।

पॉल जॉब्स का व्यक्तित्व अनुशासित था। वे अमेरिकी तटवर्ती सेना में मैकेनिक थे। नौकरी से निवृत्ति के बाद पॉल जॉब्स सैन फ्रांसिस्को पहुँचे। उन्हें कबाड़ में फेंकी गई किसी पुरानी गाड़ी को खरीदकर मरम्मत करने और बेचने में आनंद आता था। ऐसी जर्जर गाड़ियों को सुधारने में वे तल्लीनता के साथ जुट जाते थे। इस तरह हर बार उन्हें अच्छा-खासा मुनाफा होता था।

कैलिफोर्निया का आकर्षण उन्हें अपनी तरफ बुला रहा था। सन् 1952 में पॉल और क्लारा सैन फ्रांसिस्को पहुँचकर समुद्र के सामने निर्मित एक अपार्टमेंट में रहने लगे। जल्दी ही एक वित्तीय कंपनी ने पॉल को नौकरी दे दी। पॉल का काम वाहन ऋण लेनेवालों से ऋण-राशि की वसूली करना था। अपने भारी-भरकम व्यक्तित्व एवं तकनीकी दक्षता के कारण वे इस कार्य में सफल साबित हुए।

गोद लिये गए बालक का नाम जॉब्स दंपती ने स्टीवन पॉल जॉब्स रखा। तीन साल की उम्र में ही स्टीवन काफी समझदार और व्यवहार-कुशल नजर आने लगा था। उसके मन में प्रत्येक वस्तु के प्रति कौतूहल का भाव था। वह सवेरे 4 बजे ही जाग जाता था और समस्याओं में फँस जाता था। एक बार उसके साथ खेल रहे एक बालक को अस्पताल लेकर जाना पड़ा, चूँकि दोनों ने चींटी मारनेवाली दवा का स्वाद जानने का प्रयास किया था। एक दूसरी घटना से स्टीव ने बिजली के सॉकेट में पिन फँसाकर खुद को जखमी कर लिया था। स्टीव की शरारतों के बावजूद उनके माता-पिता ने दूसरी संतान को गोद लेने का इरादा नहीं छोड़ा था और उन्होंने पैटी नामक बालिका को भी गोद ले लिया था, जो उम्र में स्टीव से दो वर्ष छोटी थी।



पिता पॉल जॉब्स की गोद में नन्हे स्टीव

संभवतः स्टीव को एक बालक के रूप में अधिक देखभाल की जरूरत थी; मगर शुरू से ही उसके भीतर प्रतिभा के लक्षण दिखाई देने लगे थे। अपने समय के अमेरिकी बालकों की तरह उन्हें भी शरारतें करना अच्छा लगता था। पड़ोस में बननेवाली 8 एम.एम. की होम मूवी के कैमरे के सामने मुसकराना उन्हें अच्छा लगता था। गलियों में साइकिल चलाने में उन्हें मजा आता था। वे देर तक टी.वी. के सामने बैठे रहना पसंद करते थे। उनकी इस आदत को एक संकेत समझा जा सकता है कि भावी जीवन में वे आसानी से किसी के साथ दोस्ती करनेवाले नहीं थे।

दस साल की उम्र में ही स्टीव इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रति गहरी दिलचस्पी लेने लगे थे। उन्हें इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के विभिन्न पुरजे अपनी तरफ आकर्षित करते थे और उनको लेकर उनके मन में तरह-तरह की कल्पनाएँ पैदा होती थीं।

पॉल के पड़ोस में ऐसे कई इंजीनियर रहते थे, जो हैवलेट-पैकर्ड (एच.पी.) और अन्य इलेक्ट्रॉनिक प्रतिष्ठानों में नौकरी कर रहे थे। सप्ताहांत में ऐसे इंजीनियरों को अपने गैरेज में तकनीकी दक्षता का प्रदर्शन करते हुए देखा जा सकता था। स्टीव उनके पास खड़े होकर उनके कौशल को उत्सुकता के साथ देखते रहते थे और सीखने की कोशिश करते थे। ऐसे ही एक इंजीनियर ने स्टीव को कार्बन माइक्रोफोन को छूने की इजाजत दी थी, जिसे वह लेबोरेटरी से अपने साथ लेकर आया था। स्टीव उस उपकरण को हाथ में लेकर दंग रह गए थे और उन्होंने उसके बारे में कई

सवाल इंजीनियर से पूछे थे। स्टीव उस इंजीनियर के पास अकसर जाने लगे थे और इंजीनियर उनकी योग्यता से इस कदर प्रभावित हुआ था कि उसने माइक्रोफोन तोहफे में उन्हें दे दिया था।

सीखने की प्रक्रिया में अकसर स्टीव खुद को संकट में फँसा हुआ महसूस करते थे। वे अंतर्मुखी स्वभाव के छात्र थे। उनके एक सहपाठी ने शुरुआती दिनों को याद करते हुए बाद में बताया था, “वह तनहा रहनेवाला और आँसू बहानेवाला छात्र था। हम दोनों तैराकी टीम के सदस्य थे। यही एकमात्र खेल था जिसमें स्टीव ने भागीदारी की थी। वह प्रतियोगिता में हार गया था और फिर रोने लगा था। वह सब लड़कों के साथ मेल-जोल नहीं रख सकता था। वह अलग ही किस्म का लड़का था।”



स्टीव के व्यवहार को लेकर कई तरह की समस्याएँ भी पैदा हो रही थीं। दुर्व्यवहार और शिक्षकों के आदेश की अवहेलना के आरोप में कई बार उन्हें स्कूल से निष्कासित भी होना पड़ा था। शिक्षकों के दिए गए कार्य को कई बार वे ‘वक्त की बरबादी’ कहते हुए पूरा नहीं करते थे और इस तरह उन्हें दंडित होना पड़ता था।

चौदह वर्षीय स्टीव जीवन की नई दिशाओं की खोज कर रहे थे। इलेक्ट्रॉनिक्स से ऊब महसूस होने पर वे माउंटेन व्यू डॉल्फिन क्लब में तैराकी सीखने लगे। उन्हें ‘वाटर पोलो’ आकर्षित करने लगा। मगर यह शौक भी अधिक दिनों तक नहीं रह पाया। उन्हें लगा कि वे इस तरह के खेलों के लिए उपयुक्त नहीं थे।

सोलह साल की उम्र में स्टीव के बाल लंबे हो गए थे, जो कंधों पर लहराते रहते थे। वे अकसर स्कूल से गायब रहा करते थे। वे प्रौद्योगिकी में माहिर हिप्पियों के एक दल के संपर्क में आए थे। उन हिप्पियों ने लंबी दूरी की मुफ्त फोन कॉल्स करने की विधि खोज निकाली थी। फोन के रिसीवर में निश्चित फ्रीक्वेंसी का इस्तेमाल कर इस तरह की फोन कॉल्स की जाती थीं।

इन हिप्पियों में कंच नामक हिप्पी शामिल था, जिसने फोन कंपनी के कंप्यूटर को उलझन में डालने की विधि ढूँढ़ निकाली थी। स्टीव उससे मिलना चाहते थे। उन्होंने उसका पता लगा लिया। कंच स्टीव और वोज को एक शाम अपने साथ ले गया और अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए दुनिया के विभिन्न हिस्सों में फोन पर मुफ्त बातचीत की। स्टीव और वोज ने कंच की तरह ही अपनी अलग इलेक्ट्रॉनिक मशीन बनाने का फैसला किया।

भारत में

स्टीव जॉब्स के भारत-प्रेम की शुरुआत 19 साल की उम्र में उनके दोस्त रॉबर्ट फ्रीडलैंड की प्रेरणा से हुई। बात सन् 1974 से शुरू होती है। स्टीव ने घरवालों को बताया कि वह नौकरी छोड़कर गुरु की तलाश में भारत जा रहा है, तो वे आश्चर्य में पड़ गए। बाद में वे परिवारवालों के कहने पर पहले म्यूनिख गए और वहीं से उन्होंने दिल्ली के लिए जहाज पकड़ा। दिल्ली से वे हरिद्वार गए। वहाँ कुंभ मेला चल रहा था। वहाँ से ट्रेन और बस में चढ़ते हुए वे हिमालय की तलहटी में नैनीताल के पास एक गाँव पहुँच गए। यह वही जगह थी जहाँ नीम करौली बाबा रहते थे या पहले रहते थे।



सात महीने बाद घर लौटकर भी स्टीव अपनी तलाश में लगे रहे। ज्ञान-प्राप्ति के अनेक उपागमों को साधते रहे। सुबह-शाम वे जैन दर्शन का अभ्यास करते और दिन के वक्त स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में भौतिकी व इंजीनियरिंग के कोर्स के बारे में जानकारी जुटाते।

पूरब की आध्यात्मिकता, हिंदू धर्म, जैन-बौद्ध दर्शन और ज्ञान की तलाश केवल 19 साल के लड़के के जीवन की आई-गई घटना जैसी नहीं थी। आजीवन वे पूरब के धर्मों के अनेक पहलुओं का पालन करते रहे। विशेषकर उन्होंने विश्वास के महत्त्व को समझा। स्टीव ने माना कि भारत के

गाँव के लोगों से उन्होंने तर्क बुद्धि के स्थान पर व्यावहारिक बुद्धि (इंट्यूशन) को महत्त्व देना सीखा। पश्चिम में लोग रीजन या तर्क बुद्धि को महत्त्व देते हैं, जबकि पूरब में इंट्यूशन या व्यावहारिक बुद्धि को अधिक महत्त्व दिया जाता है। स्टीव ने माना कि इंट्यूशन के महत्त्व की समझ ने उनकी सोच की दिशा बदल दी। उसने उनकी कल्पनाशीलता को नए-नए आविष्कारों की दिशा में प्रेरित किया।

ऐपल-1

भारत से लौटने के बाद स्टीव अटारी कंपनी की नौकरी में जुट गए। जब स्टीव भारत गए थे, उसी दौरान उनके मित्र वोजनियाक को हैवलेट-पैकार्ड कंपनी में नौकरी मिल गई थी। वहाँ उनकी तरह कई समर्पित इंजीनियर काम कर रहे थे। एच.पी. की नौकरी करते हुए वे खाली समय में अपने कंप्यूटर के निर्माण में जुटे रहे और जल्द ही प्रभावशाली नतीजा सामने आ गया। कीबोर्ड और स्क्रीन सहित अपने युग के एक शक्तिशाली कंप्यूटर का निर्माण उन्होंने कर दिया था।

वोज ने अपने कंप्यूटर का डिजाइन अपने मित्र स्टीव जॉब्स को दिखाया। स्टीव अत्यंत प्रभावित हुए। वह स्वयं इंजीनियरिंग के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे, मगर उनको पता था कि लिखने लायक सॉफ्टवेयरवाले कंप्यूटर की माँग सॉफ्टवेयर के शौकीनों के बीच काफी थी, इसलिए उन्होंने वोज को कंप्यूटर बनाकर बेचने की सलाह दी। यह तय किया गया कि दोनों दोस्त मिलकर कंप्यूटर सेट तैयार करेंगे और बेचेंगे।

शुरुआती बोर्ड तैयार करने के लिए 1000 डॉलर की जरूरत थी। इसके लिए स्टीव ने अपनी वोल्क्सवैगन बेच दी। इसी तरह वोज ने अपना एच.पी. 65 कैलकुलेटर बेच दिया। दोनों नई कंपनी के नाम पर विचार करने लगे। कोई अच्छा सा नाम उनके जेहन में नहीं आ रहा था। एक दिन स्टीव ने कहा कि अगर कोई दूसरा नाम नहीं मिला तो कंपनी का नाम 'ऐपल' रख देंगे। उन्हें कोई दूसरा बेहतर नाम नहीं मिल पाया। इस तरह 'ऐपल कंप्यूटर' का जन्म हुआ। ऐपल कंप्यूटर को सबसे पहला ऑर्डर होमब्रूयू कंप्यूटर क्लब के सदस्य पॉल टेरेल ने दिया। इस तरह के कंप्यूटर की माँग बाजार में बढ़नेवाली थी। स्टीव और वोज दुकानों में घूम-घूमकर कंप्यूटर बेचते रहे थे। इस तरह उन्होंने सैकड़ों कंप्यूटर बेच डाले थे। ऐपल कंप्यूटर की शुरुआत इसी तरह हुई थी।

ऐपल-2

जब वोज ने पहला कंप्यूटर बनाया, उसके बाद ही उन्होंने एक उन्नत कंप्यूटर का डिजाइन तैयार करना शुरू किया, जो ऐपल-II के रूप में बाद में दुनिया के सामने आया। ऐपल-II भले ही ऐपल-I के डिजाइन पर आधारित था, मगर कई मायनों में यह अनूठा आविष्कार था। यह कम चिप्स की सहायता से तीव्रता से कार्य करता था। यह पहला कंप्यूटर था, जो रंगीन था। इसे किसी भी रंगीन टी.वी. के साथ जोड़ा जा सकता था। ग्राफिक्स एवं ध्वनि का इस्तेमाल किया जा सकता था। इस कंप्यूटर ने पी.सी. के क्षेत्र में क्रांति ला दी थी।



ऐपल से अलगाव

ऐपल के सी.ई.ओ. जॉन स्कूली से स्टीव के रिश्तों में अब कड़वाहट आ चुकी थी और दोनों ही एक-दूसरे की खुलकर आलोचना करने लगे थे। ऐपल के भीतर स्टीव के विरोध में असंतोष बढ़ रहा था। स्कूली के साथ स्टीव की व्यक्तिगत जंग शुरू हो गई। आखिर स्टीव ने ऐपल के चेयरमैन पद से त्यागपत्र देने की घोषणा कर दी।

विवाह

सन् 1991 से 1994 की अवधि कैरियर के नजरिए से स्टीव के लिए ठीक नहीं रही थी; मगर इस अवधि में उनका व्यक्तिगत जीवन खुशहाल रहा था। जब उनकी प्रेमिका टीना रेडसे ने सन् 1990 में उनके विवाह प्रस्ताव को ठुकरा दिया, तब उनका परिचय स्टेनफोर्ड की एम.बी.ए. की छात्रा लॉरीन पॉवेल से हुआ। लॉरीन ऐसी युवती थी जिसके व्यक्तित्व से स्टीव पहली नजर में ही प्रभावित हो गए थे। वह सुंदर और स्वतंत्र स्वभाव की

थी। स्टीव ने बाद में बताया कि यह पहली नजर का प्यार था। उन्होंने लॉरीन के साथ लंच पर जाने के लिए एक जरूरी व्यावसायिक बैठक को रद्द कर दिया था।

अगले साल 18 मार्च, 1991 को स्टीव और लॉरीन का विवाह हो गया। प्रार्थना गृह में स्टीव ने गिने-चुने मेहमानों को ही आमंत्रित किया था। विवाह के सादगीपूर्ण समारोह को स्टीव के जैन गुरु कोबुन चीनो ने संपन्न करवाया था। कुछ महीने बाद लॉरीन ने एक पुत्र को जन्म दिया। स्टीव ने बेटे का नाम रीड पॉल रखा। स्टीव ने अपने कॉलेज (रीड कॉलेज) और अपने पिता (पॉल जॉब्स) के नाम को जोड़कर अपने बेटे का नाम रखा था।

□

स्टीव जॉब्स के उत्पाद

ऐपल-1

स्टीव जॉब्स और वोजनियाक के संयुक्त प्रयास से सन् 1976 में ऐपल-1 नामक कंप्यूटर तैयार हुआ। वोजनियाक ने इस कंप्यूटर को डिजाइन किया था और स्टीव ने इसके लिए वित्त व विपणन की व्यवस्था की थी। यह कंप्यूटर खास तौर पर कंप्यूटर में रुचि रखनेवालों तथा इंजीनियरों के लिए था। आम जनता तक यह कंप्यूटर नहीं पहुँच पाया। यह कंप्यूटर स्टीव के पिता की गैराज में तैयार किया गया था।

ऐपल-2

ऐपल-1 कंप्यूटर जगत् के लिए आधार बन गया, मगर इसका अधिक विकसित रूप सन् 1977 में ऐपल-II के नाम से पेश किया गया। यह पर्सनल कंप्यूटर के रूप में पहला उत्पाद था, जो आम जनता को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया था। इसका डिजाइन भी वोजनियाक ने ही तैयार किया था। सन् 1993 तक ऐपल-II बाजार में उपलब्ध रहा।

लीजा कंप्यूटर

आम जनता के लिए सन् 1983 में पेश किया गया यह पहला कमर्शियल कंप्यूटर था, जो ग्राफिकल कार्यों को भी करता था तथा एक माउस के जरिए नियंत्रित होता था। यह एक सस्ता और तेज गति से चलनेवाला कंप्यूटर था। यह कंप्यूटर आज के कंप्यूटरों के लिए आधार सिद्ध हुआ; लेकिन यह काफी महँगा था, इसलिए यह कंप्यूटर आम जनता तक नहीं पहुँच पाया। इस कंप्यूटर का नाम स्टीव ने अपनी प्रेमिका से उत्पन्न हुई पुत्री 'लीजा' के नाम पर रखा था।

मैकिंटोश

स्टीव ने 'लीजा' के बाद सन् 1984 में 'मैकिंटोश' नामक कंप्यूटर बाजार में पेश किया। स्टीव स्वयं 'लीजा' के प्रदर्शन से संतुष्ट नहीं थे। 'लीजा' की भाँति ही इस कंप्यूटर का भी ग्राफिकल इन्टरफेस इस्तेमाल किया जा सकता था। यह सस्ता तथा लीजा से भी अधिक तेज गति से चलनेवाला कंप्यूटर था।



रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव के साथ स्टीव जॉब्स

'नेक्स्ट' कंप्यूटर

ऐपल से अलग होने के बाद स्टीव ने सन् 1989 में 'नेक्स्ट' नामक कंपनी स्थापित की और इसी नाम से एक वर्क स्टेशन कंप्यूटर तैयार किया। यह कंप्यूटर बड़ी मात्रा में नहीं आ सका, लेकिन इसका सॉफ्टवेयर मैकिंटोश द्वारा आईफोन के ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए आधार बना।

आईमैक

स्टीव ने सन् 1998 में 'आईमैक' के नाम से एक पूर्ण विकसित और बहुउपयोगी कंप्यूटर बाजार में प्रस्तुत किया। यह बहुत आकर्षक डिजाइन का कंप्यूटर था। यह कंप्यूटर इंटरनेट से जुड़ा हुआ था। यह पर्सनल कंप्यूटर के क्षेत्र में काफी सफल साबित हुआ।

आईपॉड

सन् 2001 में स्टीव ने पहला डिजिटल म्यूजिक प्लेयर तैयार किया, जिसमें हार्ड डिवाइस भी थी। यह ऐपल का सफल उत्पाद साबित हुआ। यह

उत्पाद आई ट्यून्स म्यूजिक और आईफोन का आधार सिद्ध हुआ।

आई ट्यून्स स्टोर

स्टीव ने सन् 2003 में 'आई ट्यून्स स्टोर' स्थापित किया। इससे पहले संगीत के शौकीन लोगों को मनपसंद गाने की ट्यून्स सुनने के लिए अलग से सी.डी. में गाने एकत्र करने होते थे। 'आई ट्यून्स स्टोर' आने के बाद एक-एक सी.डी. में उपभोक्ता को हजारों गाने एक स्थान पर ही मिल गए।

आईफोन

सन् 2007 में स्टीव ने आईफोन तैयार कर मोबाइल सेवा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। यह एक स्मार्ट फोन सेवा बन गई। जैसे पर्सनल कंप्यूटर के क्षेत्र में मैकिंटोश सफल साबित हुआ, उसी तरह मोबाइल के क्षेत्र में आईफोन ने धूम मचा दी।

आईपैड

हालाँकि आईपैड से पहले कई कंपनियों ने टैबलेट कंप्यूटर बनाए, लेकिन लेखन के क्षेत्र में स्टीव ने आईपैड बनाकर सबको चौंका दिया। यह उत्पाद सन् 2010 में उन्होंने उस समय तैयार किया जब वह कैंसर जैसे रोग से ग्रस्त थे।

□

सफलता के मूल मंत्र

स्टीव जॉब्स की जिंदगी ने दुनिया भर में करोड़ों लोगों को प्रभावित किया है।

उनके बातचीत करने का ढंग हो या प्रस्तुतीकरण की बात हो या फिर किसी भी उत्पाद को देखने और विपणन करने का ढंग हो, सबकुछ अलग सोच लिये होता था। इसी अलग सोच ने उन्हें स्टीव जॉब्स बनाया। आइए, जानते हैं कि स्टीव जॉब्स की सफलता के मूल मंत्र क्या थे—



वही काम करें, जिससे आपको प्यार हो

स्टीव के अनुसार, अगर आप अपने काम से प्यार करते हैं, तब अच्छा है। दुनिया भर में कई लोग ऐसे हैं, जो ऐसा काम कर रहे हैं, जो उन्हें दिल से पसंद नहीं। अगर दुनिया भर में ऐसा हो जाए कि जिसे जो काम पसंद है, वही करे, तब दुनिया ही बदल जाएगी।

दुनिया को बताइए कि आप कौन हैं

स्टीव के अनुसार, दुनिया को पता चलना चाहिए कि आप कौन हैं और दुनिया को बदलने का माद्दा जब तक आप में नहीं होगा, तब तक दुनिया आपको नहीं पहचानेगी।

सभी क्षेत्रों से संबंध जोड़ें

जॉब्स ने अपने जीवनकाल में विभिन्न विषयों का अध्ययन किया। उन्होंने कैलिग्राफी भी सीखी और विभिन्न प्रकार के डिजाइंस का अध्ययन किया। इतना ही नहीं, उन्होंने हॉस्पिटैलिटी के क्षेत्र में भी हाथ आजमाए और उसका ज्ञान प्राप्त किया। यह ज्ञान उन्हें बाद में काम भी आया।

मना करना सीखें

स्टीव ने अपनी जिंदगी में मना करना खूब सीखा था और इसका फायदा भी उन्हें मिला था। जब वे सन् 1997 में वापस ऐपल में आए थे, तब कंपनी के पास 350 उत्पाद थे। मात्र दो वर्षों में उन्होंने उत्पादों की संख्या कम करके 10 कर दी। उन्होंने 10 उत्पादों पर ध्यान केंद्रित किया और सफलता पाई।

ग्राहकों को अलग तरह का अनुभव दें

स्टीव मानते थे कि जब तक आप अपने ग्राहकों को अलग तरह का अनुभव नहीं देंगे, वे आपके उत्पादों की तरफ आकर्षित बिलकुल भी नहीं होंगे। यही कारण था कि उन्होंने ऐपल स्टोर्स को कुछ अलग तरह का बनाया, जहाँ पर ग्राहकों के लिए अलग तरह का अनुभव था और ऐपल कंपनी के प्रति लोगों का भावनात्मक लगाव हो गया था।

अपनी बात रखने में पीछे न रहें

स्टीव के अनुसार, अगर आपके पास अच्छे आइडियाज हैं और आप इसे सभी के सामने रख नहीं पाए, तब ऐसे आइडियाज का क्या काम? स्टीव अपनी बात प्रस्तुतीकरण के दौरान रखते थे? और केवल अपनी बात नहीं रखते थे, बल्कि प्रस्तुतीकरण के माध्यम से कई तरह की बातें बताते थे, जिससे प्रेरणा भी मिलती थी।

सपने बेचें, उत्पाद नहीं

स्टीव हमेशा यही कहते थे कि अपने ग्राहकों को उत्पाद नहीं, सपने बेचें। उनके अनुसार, अपने ग्राहकों को आपके उत्पाद संबंधी विवरणों से कोई मतलब नहीं है। उन्हें उनकी आशाओं व आकांक्षाओं से मतलब है, और अगर आपने उनके सपनों को उत्पाद से जोड़ा, तभी आपको सफलता मिलेगी।

तीन कहानियाँ

स्टीव जॉब्स ने हमेशा अपने दिल की बात सुनी और दुनिया में एक ऐसा मुकाम हासिल किया, जिसका लोग सिर्फ सपना भर देखते हैं। स्टीव ने अपनी जिंदगी की सच्चाई को तीन कहानियों के रूप में पेश किया। और ये महज कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि एक आम आदमी के लिए आगे बढ़ने और कामयाबियों को तय करने का 'जीवन मंत्र' हैं, जिन्हें पढ़कर हर कोई आसमान को छूने का हौसला तो भर ही सकता है।

दिनांक : 12 जून, 2005; स्थान : स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया का सभागृह। स्टीव जॉब्स इसी सभागृह में विद्यार्थियों से मुखातिब होते हैं—



“दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में से एक में आपके साथ होने पर मैं खुद को सम्मानित महसूस करता हूँ। मैंने कॉलेज की पढ़ाई कभी पूरी नहीं की। और यह बात कॉलेज की ग्रेजुएशन संबंधी पढ़ाई को लेकर सबसे सच्ची बात है। आज मैं आपको अपने जीवन की तीन कहानियाँ सुनाना चाहता हूँ।

“इनमें से पहली कहानी की शुरुआत इस तरह होती है। रीड कॉलेज में पहले छह महीनों के बाद ही मैं बाहर आ गया था। करीब 18 महीनों तक मैं इसमें किसी तरह बना रहा, लेकिन बाद में वास्तव में मैंने पढ़ाई छोड़ दी। पैदा होने से पहले ही मेरी पढ़ाई की तैयारियाँ शुरू हो गई थीं। मेरी जन्मदात्री माँ एक युवा, अविवाहित कॉलेज ग्रेजुएट छात्रा थीं और उन्होंने मुझे किसी को गोद देने का फैसला किया।

“वे बड़ी शिद्दत से महसूस करती थीं कि मुझे गोद लेनेवाले कॉलेज ग्रेजुएट हों। इसीलिए जन्म से पहले ही तय हो गया था कि एक वकील और उनकी पत्नी मुझे गोद लेंगे। पर जब मैं पैदा हो गया तो उन्होंने महसूस किया था कि वे एक लड़की चाहते थे, इसलिए उसके बाद प्रतीक्षारत मेरे माता-पिता को आधी रात को फोन पहुँचा।

“उनसे पूछा गया कि हमारे पास एक लड़का है, क्या वे उसे गोद लेना चाहेंगे? उन्होंने जवाब दिया, ‘हाँ।’ मेरी जैविक माता को जब पता चला कि वे जिस माँ को मुझे गोद देने जा रही थीं, उन्होंने कभी कॉलेज की पढ़ाई नहीं की है और मेरे भावी पिता हाई स्कूल पास भी नहीं थे, तो उन्होंने गोद देने के कागजों पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया और वे इसके कुछेक महीनों बाद तभी मानीं, जब मेरे माता-पिता ने वादा किया कि वे एक दिन मुझे कॉलेज पढ़ने के लिए भेजेंगे।

“सत्रह वर्षों बाद मैं कॉलेज पढ़ने गया; लेकिन जानबूझकर ऐसा महँगा कॉलेज चुना, जोकि स्टेनफोर्ड जैसा ही महँगा था और मेरे कामगार श्रेणी के माता-पिता की सारी बचत कॉलेज की ट्यूशन फीस पर खर्च होने लगी।

“छह महीने बाद मुझे लगने लगा कि इसकी कोई कीमत नहीं है; पर मुझे यह भी पता नहीं था कि मुझे जिंदगी में करना क्या था और इस बात का तो और भी पता नहीं कि इससे कॉलेज की पढ़ाई में कैसे मदद मिलेगी; लेकिन मैंने अपने माता-पिता के जीवन की सारी कमाई को खर्च कर दिया था। इसलिए मैंने कॉलेज छोड़ने का फैसला किया और भरोसा रखा कि इससे सबकुछ ठीक हो जाएगा। हालाँकि शुरू में यह विचार डरावना था, लेकिन बाद में यह मेरे सबसे अच्छे फैसलों में से एक रहा। कॉलेज छोड़ने के बाद मैंने उन कक्षाओं में प्रवेश लेना शुरू किया, जोकि मनोरंजक लगती थीं।

“उस समय मेरे पास सोने का कमरा भी नहीं था, इसलिए मैं अपने दोस्तों के कमरों के फर्श पर सोया करता था। कोक की बोतलें इकट्ठा कर खाने का इंतजाम करता और हरे कृष्ण मंदिर में अच्छा खाना खाने के लिए प्रत्येक रविवार की रात 7 मील पैदल चलकर जाता। पर बाद में अपनी उत्सुकता और पूर्वाभ्यास को मैंने अमूल्य पाया।

“उस समय रीड कॉलेज में कैलिग्राफी की सबसे अच्छी शिक्षा दी जाती थी। इस कॉलेज के परिसर में लगे पोस्टर, प्रत्येक टावर पर लगा लेबल खूबसूरती से कैलिग्राफ्ट होता था। चूँकि मैं पहले ही कॉलेज की पढ़ाई छोड़ चुका था और अन्य कक्षाओं में मुझे जाना नहीं था, इसलिए मैंने कैलिग्राफी कक्षा में प्रवेश ले लिया।

“वहाँ रहते हुए मैंने विभिन्न टाइप फेसों के बारे में बारीकियाँ जानीं और महसूस किया कि यह किसी भी साइंस की तुलना में अधिक सुंदर और

आकर्षक है। इन बातों की मेरे जीवन में किसी तरह के व्यावहारिक उपयोग की कोई संभावना नहीं थी, लेकिन दस वर्षों के बाद मैकिंटोश के पहले कंप्यूटर को डिजाइन करते समय हमने अपना सारा ज्ञान उसमें उड़ेल दिया। यह पहला कंप्यूटर था, जिसमें सुंदर टाइपोग्राफी थी।

“अगर मैंने उस कोर्स को नहीं किया होता तो मैक का मल्टीपल टाइपफेस इतना सुंदर नहीं होता। और चूँकि विंडोज ने मैक की नकल की, इसलिए इसके बगैर किसी भी पर्सनल कंप्यूटर में यह बात नहीं होती। अगर मैंने कॉलेज नहीं छोड़ा होता तो कैलिग्राफी क्लास में नहीं गया होता और पर्सनल कंप्यूटरों में उतनी सुंदर टाइपोग्राफी नहीं होती, जितनी है।

“जब मैं कॉलेज में था तो जीवन में आगे बढ़ने की ऐसी किसी संभावना को नहीं देख पाता, लेकिन दस साल बाद बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देती थी। आम तौर पर आप भविष्य में पूर्वानुमान लगाकर आगे नहीं बढ़ सकते हैं और इस तरह के कदमों को अतीत से ही जोड़कर देख सकते हैं।

“इसलिए आपको भरोसा रखना होगा कि ये संकेत आपको भविष्य में मददगार साबित होंगे। इन्हें आप साहस, भाग्य, जीवन, कर्म या कोई भी नाम दें, लेकिन मेरे जीवन में इस प्रयोग ने कभी निराश नहीं किया और इससे मेरे जीवन में सभी महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं।

“मेरी दूसरी कहानी प्यार और पराजय के बारे में है। मैं भाग्यशाली था कि जीवन में मुझे जो कुछ करना था, उसकी जानकारी मुझे काफी पहले मिल गई थी। वोज और मैंने ‘ऐपल’ को अपने माता-पिता के गैराज में शुरू किया था और तब मैं 20 वर्ष का था।

“कड़ी मेहनत से दस वर्षों में ‘ऐपल’ मात्र दो लोगों की कंपनी से 2 अरब डॉलर की 4,000 कर्मचारियों से अधिक की कंपनी बन गई। तब हमने अपना सबसे अच्छा उत्पाद ‘मैकिंटोश’ जारी किया था। उस समय एक वर्ष पहले मैंने 30वीं सालगिरह मनाई थी और इसके बाद ही मुझे कंपनी से निकाल दिया गया।

“जब कंपनी आपने ही शुरू की हो तो कैसे आपको उससे निकाला जा सकता है? जैसे ऐपल बढ़ती गई, मैंने अपने से ज्यादा प्रतिभाशाली व्यक्ति को कंपनी चलाने के लिए रखा। एक साल तक सबकुछ ठीक चलता रहा, लेकिन बाद में भविष्य की योजनाओं को लेकर मतभेद होते गए और अंत में विवाद हो गया।

“हमारे विवाद के बाद बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने उसका पक्ष लिया और 30 वर्ष की उम्र में मैं कंपनी से बाहर हो गया। अपने वयस्क जीवन में मैंने जिस पर अपना सबकुछ लगा दिया था, वह जा चुका था और यह बहुत निराशाजनक बात थी।

“इसके बाद कुछेक महीनों तक मुझे नहीं सूझा कि क्या करूँ! मुझे लगा कि मैंने पहली पीढ़ी के उद्यमियों को निराश किया और जब बैटन मेरे हाथ में आनेवाला था, तब मैंने इसे गिरा दिया।

“मैं डेविड पैकर्ड व बॉब नॉयस से मिला और उनसे अपने व्यवहार के लिए माफी माँगने का प्रयास किया और इस समय मैंने कैलिफोर्निया से ही भागने का मन बनाया, लेकिन धीरे-धीरे कुछ बात मेरी समझ में आने लगी और मुझे वही सबकुछ अच्छा लगने लगा था, जोकि कभी अच्छा नहीं लगता था। हालाँकि इस बीच ऐपल में थोड़ा-बहुत भी बदलाव नहीं हुआ था, इसलिए मैंने सबकुछ नए सिरे से शुरू करने का फैसला किया।



“उस समय यह बात मेरी समझ में नहीं आई, लेकिन बाद में लगा कि ऐपल से हटा दिया जाना ऐसी सबसे अच्छी बात थी, जोकि मेरे लिए कभी हो सकती थी। सफल होने का बोझ फिर से खाली होने के भाव से भर गया और मैं जीवन के सबसे अधिक रचनात्मक दौर में प्रवेश कर गया।

“अगले पाँच वर्षों के दौरान मैंने कंपनी ‘नेक्स्ट’ और ‘पिक्सर’ शुरू की और मुझे एक सुंदर महिला से प्यार हुआ, जोकि मेरी पत्नी बनी। ‘पिक्सर’ ने दुनिया की सबसे पहली कंप्यूटर एनीमेटेड फीचर फिल्म ‘टॉय स्टोरी’ बनाई और अब यह दुनिया का सबसे सफल एनीमेशन स्टूडियो है।

“एक असाधारण घटना के तहत ऐपल ने ‘नेक्स्ट’ को खरीद लिया और मैं फिर ऐपल में वापस आ गया। हमने ‘नेक्स्ट’ में जो तकनीक विकसित की, वह ऐपल के वर्तमान पुनर्जीवन की आधारशिला है। इसी के साथ ही लॉरीन और मेरा परिवार भी बढ़ा।

“यह बात मैं सुनिश्चित तौर पर मानता हूँ कि अगर मुझे ऐपल से हटाया नहीं जाता तो ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा होता। यह स्वाद में एक बुरी दवा थी, लेकिन मरीज को इसकी सख्त जरूरत थी। कभी-कभी आपको जीवन में ठोकरें भी खानी पड़ती हैं; लेकिन हिम्मत न हारें।

“मुझे विश्वास है कि जिस चीज ने मुझे लगातार क्रियाशील बनाए रखा था, वह अपने काम के प्रति मेरा प्यार था। आपको जीवन में यह पता लगाना होता है कि आप किस काम से प्यार करते हैं। यह बात काम को लेकर भी उतनी ही सच है जितनी कि जीवन में प्रेमी-प्रेमिकाओं को लेकर होती है।

“आपका काम एक ऐसी चीज है, जोकि आपके जीवन के एक बड़े खाली हिस्से को भरता है। महान् काम करने की एकमात्र शर्त यही है कि आप अपने काम से प्यार करें। अगर आपको इसका पता नहीं है तो पता लगाते रहिए। दिल के सारे मामलों में आपको पता लगेगा कि यह आपको कब मिलेगा। जैसे-जैसे समय निकलता जाता है, उसके साथ आपका रिश्ता बेहतर होता चला जाता है। इसलिए रुकें नहीं, उसकी खोज करते रहें।

“मेरी तीसरी कहानी मौत के बारे में है। जब मैं 17 वर्ष का था, तब मैंने एक कथन पढ़ा था, जो कुछ इस प्रकार था—‘अगर आप अपने जीवन के प्रत्येक दिन को अंतिम मानकर जीते हैं तो किसी दिन आप निश्चित तौर पर सही सिद्ध होंगे।’



याहू के सह-संस्थापक जेरी यंग के साथ स्टीव जॉब्स

“इसका मुझ पर असर पड़ा और जीवन के पिछले 33 वर्षों में प्रत्येक दिन मैंने शीशे में अपने आपको देखा और अपने आपसे पूछा कि ‘अगर यह जीवन का आखिरी दिन हो तो क्या मैं वह सब करूँगा, जो मुझे आज करना है?’ और जब कई दिनों तक इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक रहा तो मुझे पता लगा कि मुझे कुछ बदलने की जरूरत है।

“मैंने अपने जीवन के सबसे बड़े फैसलों को करते समय अपनी मौत के विचार को सबसे महत्वपूर्ण औजार बनाया, क्योंकि मौत के सामने सभी बाहरी प्रत्याशाएँ, सारा घमंड, असफलता या व्याकुलता का डर समाप्त हो जाता है और जो कुछ वास्तविक रूप से महत्वपूर्ण है, वह बचा रह जाता है।

“मैं सोचता हूँ कि जब आप याद रखते हैं कि आप मरनेवाले हैं तो आपका सारा भय समाप्त हो जाता है कि आप कुछ खोनेवाले हैं। जब पहले से ही आपके पास कुछ नहीं है तो क्यों न अपने दिल की बात मानें!

“करीब एक वर्ष पहले मेरा कैंसर का इलाज हुआ। सुबह 7.30 बजे स्कैन किया गया और इसमें स्पष्ट रूप से पता लगा कि मेरे अग्न्याशय में एक ट्यूमर है। मुझे पता नहीं था कि अग्न्याशय कैसा होता है।

“डॉक्टरों ने मुझे बताया कि यह एक प्रकार का कैंसर है, जो असाध्य है और मैं तीन से छह माह तक ही जीवित रहूँगा। मेरे डॉक्टर ने सलाह दी कि मैं अपने अधूरे कामकाज निपटाऊँ। डॉक्टर ने कहा कि अपने बच्चों को जो आप दस साल में बतानेवाले हैं, उन बातों को कुछेक महीनों में बताएँ। इसका अर्थ है कि पहले से तैयार हो जाएँ, ताकि आपके परिवार के लिए सभी कुछ सहज रहे। इसका अर्थ है कि आप अंतिम विदा लेने की तैयारी कर लें।

“पर डॉक्टरों ने अपने परीक्षणों में पाया कि मैं ऐसे कैंसर से पीड़ित हूँ, जोकि ऑपरेशन से ठीक किया जा सकता है। मेरा ऑपरेशन किया गया और अब मैं पूरी तरह से ठीक हूँ। यह मौत के सबसे करीब होने का अनुभव था, और मैं उम्मीद करता हूँ कि इस अनुभव के बाद मैं कुछेक और दशक तक जी सकता हूँ।

“मैं आपसे कह सकता हूँ कि जब मौत उपयोगी हो, तब इसके करीब होने का विचार पूरी तरह से एक बौद्धिक विचार है। मरना कोई नहीं चाहता। जो लोग स्वर्ग जाना चाहते हैं, वे भी मरना नहीं चाहते। लेकिन यह ऐसा गंतव्य है, जहाँ हम सबको पहुँचना ही है। कोई भी इससे नहीं बचा है और इसे जीवन की सबसे अच्छी खोज होना चाहिए। जीवन बदलाव का कारक है और पुराने के स्थान पर नया स्थान लेता है। आप लोग भी बूढ़े होंगे और इसके बाद की स्थिति से भी गुजरेंगे।

“आपका समय सीमित है, इसलिए इसे ऐसे नहीं जीएँ जैसे कि किसी और का जीवन जी रहे हों। दूसरे लोगों की सोच के परिणामों से प्रभावित न हों और दूसरों के विचारों की बजाय अपने विचारों को महत्व दें। और सबसे महत्वपूर्ण बात है कि आप अपने दिल की बात सुनें। आपके दिलो-दिमाग को पहले से ही अच्छी तरह पता है कि आप वास्तव में क्या बनना चाहते हैं।

“जब मैं युवा था तब एक आश्चर्यजनक प्रकाशन ‘द होल अर्थ कैटलॉग’ बिकता था, जोकि मेरी पीढ़ी के लिए एक महत्वपूर्ण किताब थी। इसे मेनलो पार्क में रहनेवाले व्यक्ति स्टुअर्ट ब्रॉड ने प्रकाशित किया था। यह ’60 के दशक के अंतिम वर्षों की बात थी और तब पर्सनल कंप्यूटर और डेस्कटॉप प्रकाशन नहीं थे; लेकिन तब भी यह गूगल का पेपरबैक संस्करण था।

“स्टुअर्ट और उसकी टीम ने इस किताब के कई संस्करण निकाले और जब इसका समय पूरा हो गया तो इसने अंतिम संस्करण निकाला। ’70 के दशक के मध्य में यह अंक निकाला गया था और तब मैं आपकी उम्र का था।

“उस पुस्तक के अंतिम पेज पर सुबह की एक तसवीर थी, जिसमें ग्रामीण इलाका दर्शाया गया था। उस तसवीर के नीचे शब्द लिखे थे— ‘स्टे हंग्री, स्टे फुलिश’।



“यह उनका विदाई संदेश था और मैंने सदैव ही इसे अपने जीवन में अपनाया और उम्मीद करता हूँ कि आप भी ऐसा ही करेंगे। (स्टे हंग्री, स्टे फुलिश। यानी कभी न सोचें कि आपने सबकुछ पा लिया है और आप सबकुछ जान चुके हैं।)”

अनेक उतार-चढ़ावों के बाद 5 अक्टूबर, 2011 को कैसर से स्टीव जॉब्स का देहांत हो गया।

चमत्कारी शख्सियत

सिर्फ ऐपल ही नहीं बल्कि तकनीकी दुनिया में सभी लोग स्टीव जॉब्स को किसी गुरु के रूप में देखते हैं। लगता है कि उनके हाथ में जादू की छड़ी है। ऐपल ने न सिर्फ दुनिया के सबसे शानदार कंप्यूटर बनाए हैं, बल्कि उसे दुनिया का सबसे बड़ा ब्रांड भी घोषित किया और यह करिश्मा सिर्फ जॉब्स की मेहनत का नतीजा है। उनके बाद कमान सँभाल रहे कुक के सामने एक चमत्कारी शख्सियत की छाया से बाहर निकलने की चुनौती होगी ही, इस बात का भी दबाव होगा कि ऐपल जिस जगह पहुँच चुका है, उसे वहाँ बनाए रखा जाए।

बिजनेस का बाजीगर

जॉब्स प्रौद्योगिकी की दुनिया के सबसे बड़े बाजीगर रहे; लेकिन उनकी सेहत ने उनका साथ नहीं दिया और वे कैसर व लीवर की बीमारी से पीड़ित हो गए। शायद इन बीमारियों का भी असर रहा कि वे एक जिद्दी और निरंकुश लीडर बन गए, जो अपने एजेंडे को हर हाल में पूरा करना चाहता है। जॉब्स ने खराब स्वास्थ्य के बाद भी काम जारी रखा और बाजार के लिए मिसाल बने रहे। इस दौरान वे सालाना 1 डॉलर का वेतन लेते रहे। अलबत्ता उनके निजी जेट विमान और दूसरे खर्चे भी कंपनी ही उठाती थी।

महानतम आविष्कारक

स्टीव जॉब्स के निधन पर अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि दुनिया ने एक दूरदृष्टा खो दिया, जो अमेरिका के महानतम आविष्कारकों में से एक था। स्टीव की सफलता को इससे बड़ा सलाम और क्या हो सकता था कि उनके निधन का समाचार ज्यादातर लोगों को उन्हीं द्वारा ईजाद किए गए उपकरण के जरिए मिला।

ओबामा ने कहा कि स्टीव अमेरिका के महानतम आविष्कारकों में से एक थे। उनमें अलग सोचने का हौसला था। उनमें यह विश्वास करने का साहस था कि वे दुनिया को बदल सकते हैं और ऐसा करने की पर्याप्त प्रतिभा उनमें थी।

ओबामा ने कहा कि अपने गैराज से दुनिया की सबसे सफल कंपनी की नींव रखनेवाले जॉब्स ने अमेरिकी कौशल की मिसाल कायम की। कंप्यूटर को लघु आकार देकर और इंटरनेट को हमारी जेब तक पहुँचाकर उन्होंने न सिर्फ सूचना क्रांति को सुगम बनाया, बल्कि इसे सहज व मजेदार भी बना दिया।

जॉब्स ने बदला जीवन

जॉब्स के निधन पर शोक प्रकट करते हुए ऑस्ट्रेलिया की प्रधानमंत्री जूलिया गिलार्ड ने उन्हें असाधारण वैश्विक आविष्कारक बताया। जूलिया ने कहा कि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उन्होंने वस्तुतः हमारा जीवन बदल डाला।

उन्होंने कहा कि हम लोग हर दिन ऐसी बहुत सी चीजों को छूते हैं, जिनका आविष्कार उस महान् व्यक्ति ने किया। मैं उनके परिवार तथा मित्रों के प्रति संवेदना व्यक्त करती हूँ।

दुनिया को जोड़ना सिखाया

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अमेरिकी कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी कंपनी ऐपल के पूर्व सी.ई.ओ. स्टीव जॉब्स के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि जॉब्स एक ऐसे आविष्कारक थे, जिन्होंने दुनिया को संचार और संपर्क का नया तरीका सिखाया।

प्रधानमंत्री ने अपने शोक संदेश में कहा कि मैं स्टीव जॉब्स के निधन का समाचार सुनकर काफी दुःखी हूँ। वे सचमुच एक आविष्कारक थे और उन्होंने हमें एक-दूसरे के साथ संवाद एवं संपर्क का नया तरीका सिखाया।



पिक्सर एनिमेशन के कैटमुल एवं जॉन लैसेस्टर के साथ स्टीव जॉब्स

एक के बाद एक सफल उत्पाद

अपनी संपत्ति और कॉरपोरेट जगत् में सफलता के बावजूद स्टीव जॉब्स सिलिकन वैली के एक विद्रोही नायक बने रहे। उनके काम करने का तरीका ऐसा था कि उनके साथ काम करना मुश्किल हो जाता था; मगर लोगों के बीच कौन सा उपकरण लोकप्रिय होगा, इसकी समझ ने ऐपल को दुनिया के सबसे जाने-माने नामों में से एक बना दिया।



स्टीव जॉब्स के मरने से जहाँ दुनिया के सभी लोग दुःखी थे, वहीं अमेरिका के चर्चित सॉफ्टवेयर फ्रीडम एक्टिविस्ट रिचर्ड मैथ्यू स्टॉलमैन उनके जाने से काफी खुश हैं। आई.आई.टी., मद्रास में लेक्चर देने आए स्टॉलमैन ने अपने ब्लॉग पर इस बात का खुलासा किया था। जॉब्स के मरने पर उन्होंने लिखा था—‘जॉब्स के जाने से मैं बहुत खुश हूँ। हालाँकि उनके मरने से मुझे भी दुःख है। उनके जाने से जॉब्स के कंप्यूटरिंग का अंत हो गया।’

दिलचस्प है कि माइक्रोसॉफ्ट और ऐपल के कई निर्णयों को स्टॉलमैन काफी नापसंद करते हैं। उनका कहना है, “ऐपल के आई प्रोडक्ट तकनीकी दुनिया को खराब करने का काम करते हैं। इनमें स्पाई फीचर्स ही मौजूद हैं।

कई लोग जॉब्स के तानाशाही रवैए से परेशान थे। इसके चलते ऐपल कंपनी में सत्ता संघर्ष हुआ और जॉब्स को कंपनी से निकाल दिया गया। एक साल बाद जॉब्स उस कंपनी में वापस लौटे, जिसकी उन्होंने स्थापना की थी।

दो साल बाद जॉब्स का डंका फिर बजा, जब उन्होंने आईफोन लॉन्च किया। उसके लिए लोग दुनिया भर में घंटों ऐपल के शोरूम के बाहर लाइन लगाकर खड़े रहे। जॉब्स काले रंग के गोल गलेवाले जंपर और रंगहीन सी हो रही जींस में ही नए-नए उपकरण लॉन्च करते रहे और वह उनकी एक पहचान-सी बन गई।

माइक्रोसॉफ्ट के बिल गेट्स से बिल्कुल उलट स्टीव जॉब्स ने लोकहित के कामों में निजी धन का इस्तेमाल नहीं किया, साथ ही उन्होंने पर्यावरण की चिंता को भी नहीं अपनाया। ऐपल अकसर ‘ग्रीनपीस’ के निशाने पर रहता था, क्योंकि उसके उत्पाद आसानी से इस्तेमाल होनेवाले नहीं होते।

स्टीव जॉब्स अपने आप में अनोखे किस्म के व्यक्ति थे, जिनका अपनी क्षमताओं में भरोसा था। अगर उनसे कोई असहमत हुआ तो उसके प्रति

उनमें धैर्य ज्यादा नहीं था। मगर हाँ, वे उपभोक्ताओं की जरूरतों पर नजर रखते थे।

महान् कल्पनाशील आविष्कारक

कई साल पहले तक हम सोच भी नहीं सकते थे कि एक ऐसी चीज बनेगी, जिसे हम हाथ में लेकर घूमेंगे और हजार से ज्यादा गाने अपनी मुट्ठी में रखेंगे। लेकिन एक इनसान ने हमारी सभी जरूरतों और सुविधाओं को एक ही स्थान पर ला खड़ा किया। स्टीव जॉब्स ने दुनिया में मोबाइल उपभोक्ताओं और संगीत-प्रेमियों को ऐसा नायाब तोहफा दिया, जिसका आकलन नहीं किया जा सकता।

स्टीव ने भले ही किसी नई चीज का आविष्कार न किया हो, पर उन्होंने अपने आसपास पहले से मौजूद चीजों को ऐसा रूप दिया कि सब चीजें ही बदल गईं। जॉब्स की प्रतिभा, जुनून और ऊर्जा कंपनी के असंख्य आविष्कारों का आधार बनी।

ऐपल के सबसे ज्यादा प्रचलित और प्रतिष्ठित उत्पाद, जैसे आई पॉड, आईफोन और आई पैड जॉब्स की दूरदर्शिता और कौशल के ही परिणाम थे। उनके नेतृत्व में ऐपल ने आई पॉड के जरिए संगीत जगत् की नई परिभाषा गढ़ी। आईफोन ने मोबाइल की दुनिया का अंदाज बदला और आई पैड ने मनोरंजन व मीडिया जगत् को नए मायने दिए।

□

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ एवं घटनाएँ

1955

24 फरवरी को सैन फ्रांसिस्को में स्टीव जॉब्स पैदा हुए। जैविक माता जोआन सिंपसन और जैविक पिता अब्दुल फतह जॉन जंदाली। पॉल जॉब्स एवं क्लारा जॉब्स ने उन्हें गोद लिया और उनका नाम 'स्टीफन पॉल जॉब्स' रखा गया।

1966

जॉब्स परिवार कैलिफोर्निया के लॉस एंजेलोस में आकर बस गया। स्टीव जॉब्स का दाखिला होमस्टीड हाई स्कूल में किया गया, जहाँ वे संगीत और इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रति आकर्षित हुए। बॉब डीलोन और बीटल्स का संगीत उन्हें खास तौर पर भाने लगा।

1971

ऐपल के भावी सह-संस्थापक स्टीफन वोज वोजनियाक से स्टीव जॉब्स की मुलाकात हुई।

1972

स्टीव और वोज ने मिलकर 'ब्लू बॉक्सेज' नामक टोन जेनरेटर का निर्माण करना शुरू किया। वे कॉलेजी विद्यार्थियों को गैर-कानूनी तरीके से यह उपकरण बेचने लगे। विद्यार्थी मुफ्त फोन कॉल करने के लिए इस उपकरण का इस्तेमाल करते थे। ('स्क्वायर' पत्रिका के अक्टूबर 1971 के अंक में इसके निर्माण की विधि बताई गई थी।) कानून-सम्मत कार्य शुरू करने से पहले दोनों ने इस उपकरण की बिक्री से 6,000 डॉलर की कमाई की थी।

स्टीव ने हाई स्कूल की परीक्षा पूरी की और सितंबर महीने में रीड कॉलेज (पोर्टलैंड, ओरेगन) में दाखिला लिया; मगर एक सत्र पूरा होते ही उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया। इसके बाद बंजारों जैसी जिंदगी जीते हुए ऑडिट क्लास में भाग लेते रहे। रीड कॉलेज में स्टीव की मुलाकात ऐपल के भावी कर्मचारी डेन कोटके से हुई, जिसने बाद में प्रथम ऐपल-I कंप्यूटर का निर्माण और परीक्षण किया।

1974

सितंबर में स्टीव ने नोलन बुशनेल की वीडियो गेम कंपनी 'अटारी' में नौकरी शुरू की। स्टीव होमब्रीयू कंप्यूटर क्लब में जाने लगे, जहाँ इलेक्ट्रॉनिक्स के विशेषज्ञ एकत्र होते थे।



1976

ऐपल की स्थापना हुई। स्टीव जॉब्स (45 फीसदी शेयर), वोजनियाक (45 प्रतिशत शेयर) और रोनाल्ड वायने (10 फीसदी शेयर) इसके संस्थापक बने। वायने को लगा कि वह जोखिम नहीं उठा सकता, इसलिए उसने अपने 10 फीसदी शेयर स्टीव और वोज को 800 डॉलर में बेच दिए।

ऐपल कंप्यूटर का पहला व्यवस्थित कार्यालय कैलिफोर्निया के कोपरटिनो के स्टीवंस बुकी बोलवार्ड में शुरू हुआ।

कैलिफोर्निया के माउंटेन व्यू की बाइट शॉप की तरफ से स्टीव को 50 कंप्यूटर्स का ऑर्डर मिला।

स्टीव जॉब्स और कोटके ने न्यूजर्सी की अटलांटिक सिटी में आयोजित पर्सनल कंप्यूटर फेस्टिवल में ऐपल-I का प्रदर्शन किया। वहीं वोजनियाक ने ऐपल-II के निर्माण की प्रक्रिया को शुरू किया।

1977

ऐपल का एक-तिहाई स्वामित्व प्राप्त करने के बदले एक वेंचर कैपिटलिस्ट माइक मरकुला ने ऐपल कंप्यूटर में 91 हजार डॉलर का निवेश

किया और कंपनी के लिए बैंक ऑफ अमेरिका के साथ 2,50,000 डॉलर तक उधार हासिल करने की सुविधा का प्रबंध किया।

सैन फ्रांसिस्को के कंप्यूटर मेले में ऐपल ने ऐपल-II को प्रदर्शित किया, जिसकी कीमत 1,298 डॉलर थी।

1978

जनवरी में लॉस वेगास में कंप्यूटर इलेक्ट्रॉनिक्स शो के दौरान ऐपल ने ऐपल-II के लिए प्रथम फ्लॉपी डिस्क ड्राइव को प्रदर्शित किया। व्यापार की दुनिया के लिए ऐपल ने ऐपल-III पेश किया। वहीं स्टीव जॉब्स व्यापार जगत् के लिए लीजा कंप्यूटर (लोकल इंटीग्रेटेड सॉफ्टवेयर आर्किटेक्चर) बनाने में जुट गए।

ऐपल ने नेशनल सेमीकंडक्टर में कार्यरत माइक स्कॉट को अपना सी.ई.ओ. नियुक्त किया।

स्टीव की तत्कालीन प्रेमिका क्रीस एन बेनन ने प्रथम संतान लीजा ब्रेनान जॉब्स को जन्म दिया। स्टीव ने बच्ची का दायित्व स्वीकार नहीं किया और पालन-पोषण की जिम्मेदारी डी.एन.ए. टेस्ट के जरिए अदालती आदेश आने पर स्वीकार की।

1979

ऐपल को राजस्व के रूप में 4.7 करोड़ डॉलर प्राप्त हुए। स्टीव जॉब्स और ऐपल के प्रमुख सदस्यों ने 'जेरोक्स पार्क' (पालो अल्टो रिसर्च सेंटर) का दौरा किया, जहाँ उन्होंने माउस और जी.यू.आई. (ग्राफिकल यूजर इंटरफेस) सहित नई कंप्यूटर प्रौद्योगिकियों का साक्षात्कार किया।

यह दौरा स्टीव के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुआ। उन्होंने भविष्य के कंप्यूटर के बारे में सोचना शुरू कर दिया।

ऐपल ने 'एपल टू प्लान' बाजार में उतारा, जिसकी कीमत 1,195 डॉलर थी।

'विकीकॉल्क' नामक इलेक्ट्रॉनिक स्प्रेड शीट प्रोग्राम बाजार में ऐपल-II के लिए पेश किया गया, जिसकी वजह से कंप्यूटर की बिक्री बढ़ गई।



1980

ऐपल के पब्लिक आई.पी.ओ. के 46 लाख शेयर बिके। आरंभ में प्रति शेयर 22 डॉलर का भाव था। स्टॉक 29 डॉलर प्रति शेयर के भाव पर बंद हुआ। ऐपल का मूल्य 1.778 अरब डॉलर आँका गया।

1981

ऐपल ने ऐपल थ्री बाजार में उतारा। डिजाइन की त्रुटि के कारण आरंभिक 14 हजार कंप्यूटरों को बाजार से वापस लिया गया।

स्टीव के महँगे 'लीजा' कंप्यूटर के सस्ते विकल्प के रूप में मैकिंटोश बनाने में ऐपल का प्रोग्रामर एंटी हर्टफील्ड जुट गया।

ऐपल के इतिहास में 'काला बुधवार' आया, जब उसके सी.ई.ओ. माइक स्कॉट ने निदेशक मंडल की इजाजत लिये बगैर ही ऐपल टू टीम के आधे सदस्यों को नौकरी से निकाल दिया। निदेशक मंडल ने क्षुब्ध होकर माइक स्कॉट को उनके पद से हटाकर माइक मर्कुला को अंतरिम सी.ई.ओ. नियुक्त किया और नए सी.ई.ओ. की तलाश शुरू कर दी।

स्टीव जॉब्स निदेशक मंडल के चेयरमैन बने। स्कॉट की जगह मर्कुला प्रेसीडेंट बने।

आई.बी.एम. ने 1,565 डॉलर का पर्सनल कंप्यूटर आई.बी.एम. पी.सी. 5150 बाजार में उतारा। स्टीव जॉब्स ने इस कंप्यूटर को तकनीकी रूप से कमजोर बताया, मगर उनके आकलन को झुठलाते हुए व्यावसायिक समुदाय ने ऐपल के उत्पाद की जगह उसे तरजीह देना शुरू कर दिया।

1982

मैकिंटोश के तीन पहलुओं—स्प्रेडशीट, डाटाबेस और बिजनेस ग्राफिक्स—का विकास करने के लिए बिल गेट्स की कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने एक करार किया।

'टाइम' पत्रिका की कवर स्टोरी का विषय स्टीव जॉब्स को बनाया गया और शीर्षक दिया गया—'अमेरिकाज रिस्क टेकर्स : स्टीवन जॉब्स'

ऑफ ऐपल कंप्यूटर'।

न्यूयॉर्क सिटी के सेन रेमो इलाके में स्टीव जॉब्स ने एक अपार्टमेंट खरीदा। इस इमारत में मशहूर हस्तियाँ रहती थीं। ऊपरी दो मंजिल को स्टीव ने खरीदा था और काफी राशि खर्च कर आर्किटेक्ट आई.एम.पेई. ने इसे सजाया था। मगर जॉब्स इस अपार्टमेंट में रहने के लिए कभी नहीं आए और बाद में उसे उन्होंने बेच दिया।

‘टाइम’ पत्रिका में स्टीव को ‘मैन ऑफ दि ईयर’ घोषित करने की जगह उनके बनाए पर्सनल कंप्यूटर को ‘मशीन ऑफ दि ईयर’ घोषित किया।

1983

स्टीव जॉब्स न्यूयॉर्क सिटी में मीडिया के समक्ष शक्तिशाली बिजनेस कंप्यूटर ‘लीजा’ को प्रदर्शित करने के लिए गए। वहाँ उनकी मुलाकात पेप्सिको के अधिकारी जॉन स्कूली से हुई। स्कूली से वे काफी प्रभावित हुए और बाद में वे स्कूली को ऐपल में लेकर गए।

19 जनवरी को ऐपल ने बाजार में ‘लीजा’ कंप्यूटर को पेश किया, जिसकी कीमत 9995 डॉलर थी।

ऐपल ने ‘ऐपल टू प्लस’ कंप्यूटर बनाना बंद कर ‘ऐपल टू ई’ बनाना शुरू किया।

ऐपल ने जॉन स्कूली को 8 अप्रैल को अपना सी.ई.ओ. नियुक्त किया।

1984

ऐपल ने पहला मैकिंटोश कंप्यूटर बाजार में पेश किया। इसका प्रचार करने के लिए ‘1984’ शीर्षक से कॉमर्शियल विज्ञापन का निर्माण 12 लाख डॉलर की लागत से किया गया, जिसका निर्देशन रिडली स्कॉट ने किया था। इसे टी.वी. पर प्रदर्शित किया गया। मैकिंटोश विश्व का पहला जी.यू.आई. (ग्राफिकल यूजर इंटरफेस) कंप्यूटर था। इसकी कीमत 1,995 डॉलर से 2,395 डॉलर के बीच थी।

14 जनवरी को ‘लीजा टू’ को बाजार में पेश किया गया। अलग-अलग मॉडल की कीमत 3,495 डॉलर, 4,495 डॉलर और 5,495 डॉलर थी।

स्टीव जॉब्स ने कैलिफोर्निया के वुडसाइड में 17 हजार वर्ग फीट का मकान ‘जैकलिंग हाउस’ खरीदा।

नवंबर-दिसंबर में मैकिंटोश का विज्ञापन प्रकाशित करने के लिए ऐपल ने ‘न्यूजवीक’ के चुनाव अंक में उपलब्ध 39 पृष्ठों का विज्ञापन अधिकार खरीद लिया।

1985

लेजर टाइपर को बाजार में पेश किया गया, जिसकी कीमत 6,995 डॉलर थी।

लीजा को ‘मैकिंटोश एक्सएल’ के नाम से बाजार में इस उम्मीद से पेश किया गया कि बिक्री बढ़ेगी, मगर वैसा नहीं हो पाया।

ऐपल के सह-संस्थापक स्टीव वोजनियाक ने अपनी सांकेतिक भूमिका से दुःखी होकर 6 फरवरी को इस्तीफा दे दिया, ताकि अपनी अलग कंपनी खोल सकें और इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों की खोज करने की तरफ ध्यान दे सकें।

ऐपल निदेशक मंडल की अनुमति लेने के बाद जॉन स्कूली ने मैक डिवीजन के प्रमुख के दायित्व से स्टीव जॉब्स को मुक्त कर दिया। (सन् 2010 में लिण्डर केनी को दिए गए साक्षात्कार में स्कूली ने जॉब्स को पद पर नहीं बनाए रखने के अपने निर्णय पर खेद जताया, “उस समय वही करना उचित लगा था, मगर हमें वैसा नहीं करना चाहिए था। उस गलती के लिए मैं खुद को दोषी समझता हूँ। वैसा नहीं होने पर ऐपल को बुरे दौर से होकर नहीं गुजरना पड़ता।”)

अपने साथ धोखा होने के अहसास और ऐपल के भविष्य को लेकर नाउम्मीदी के चलते स्टीव जॉब्स ने ऐपल का एक शेयर अपने पास रखते हुए बाकी शेयरों को 7.15 करोड़ डॉलर में बेच दिया।

जेरोक्स पार्क के ऐलन के ने स्टीव को बताया कि जॉर्ज लुकास पिक्सर को बेचना चाहते थे। स्टीव उसे खरीदना चाहते थे, मगर 3 करोड़ डॉलर कीमत देने के लिए तैयार नहीं थे।

14 जून को ऐपल के 12 कर्मचारियों को निकाला गया।

1 अगस्त से ‘मैकिंटोश एक्सएल’ की बिक्री बंद हुई।

13 सितंबर को स्टीव ने ऐपल के निदेशक मंडल को बताया कि वे ‘नेक्स्ट’ नामक नई कंप्यूटर कंपनी की स्थापना करने जा रहे हैं। ऐपल ने

उन्हें प्रोत्साहित किया और निवेश पार्टनर बनने का प्रस्ताव दिया।

राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने स्टीव जॉब्स और स्टीव वोजनियाक को 'नेशनल मेडल ऑफ टेक्नोलॉजी' पुरस्कार से सम्मानित किया।



1986

ऐपल के प्रेसीडेंट और सी.ई.ओ. जॉन स्कूली ने 29 जनवरी को निदेशक मंडल के चेयरमैन का पद सँभाला।

ऐपल ने मूल मैकिंटोश का निर्माण बंद कर अप्रैल में 'मैकिंटोश 512' को बाजार में उतारा, जिसकी कीमत 2,000 डॉलर थी।

स्टीव ने 1 करोड़ डॉलर में लुकास से 'ग्राफिक्स ग्रुप' (बाद में जिसका नाम 'पिक्सर एनिमेशन स्टूडियोज' रखा गया) खरीद लिया। स्टीव उसके सी.ई.ओ. थे और उनके पास सर्वाधिक शेयर (50.1 प्रतिशत) थे।

'पिक्सर' ने ग्राफिक्स वर्क स्टेशन के रूप में 'पिक्सर इमेज कंप्यूटर' बाजार में उतारा, जिसकी कीमत 1,25,000 डॉलर थी।

1987

ऐपल ने बाजार में मैकिंटोश एसई और पहला कलर ग्राफिक्स कंप्यूटर 'मैकिंटोश टू' उतारा।

'पिक्सर इमेज कंप्यूटर' (पी-2) बाजार में पेश किया गया।

1988

12 अक्टूबर को 'नेक्स्ट' कंप्यूटर बाजार में पेश किया गया, जिसकी कीमत 6,500 डॉलर थी।

1989

पिक्सर की एनीमेटेड फिल्म 'टिनी टॉय' को 'एकेडमी पुरस्कार' मिला।

ऐपल ने बाजार में 6,500 डॉलर की कीमतवाला 'मैकिंटोश पोर्टेबल' उतारा, जिसका वजन 7.23 किलोग्राम था।

1990

स्टीव जॉब्स ने पिक्सर इमेज कंप्यूटर के विकास और विक्रय से ध्यान हटाकर उसके सॉफ्टवेयर 'रेंडरमैन' को तैयार करने की तरफ ध्यान देना शुरू किया।

1991

स्टीव जॉब्स ने 18 मार्च को कैलिफोर्निया के पोसेमिटे में स्थित एक लॉज में लॉरीन पॉवेल के साथ विवाह रचाया। विवाह-संस्कार स्टीव के मित्र जैन बौद्ध भिक्षु कोबीन चीनो ने संपन्न करवाया।

तीन फीचर आकार की एनीमेटेड फिल्में बनाने के लिए पिक्सर और वॉल्ट डिज्नी स्टूडियोज के बीच करार हुआ।



1992

'फॉर्च्यून' पत्रिका ने 9 अप्रैल को स्टीव जॉब्स का नाम 'नेशनल बिजनेस हॉल ऑफ फेम' की सूची में शामिल किया।

स्टीव जॉब्स की जैविक बहन मोना सिंपसन का उपन्यास 'द लॉस्ट फादर' प्रकाशित हुआ।

मई में शिकागो में ऐपल के पर्सनल डिजिटल एसिस्टेंट 'न्यूटन' का प्रदर्शन किया गया।

1993

विक्रय के क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम सामने न आने पर 'नेक्स्ट' ने हार्डवेयर लाइन को छोड़कर पूरी तरह सॉफ्टवेयर विकास की तरफ ध्यान देना शुरू किया।

18 जून को स्कूली को हटाकर माइकल स्पींडलर को ऐपल का सी.ई.ओ. बनाया गया।

जुलाई में ऐपल ने दुनिया भर में अपने 2,500 कर्मचारियों की छँटनी की घोषणा की।

अगस्त में 'न्यूटन' बाजार में उतारा गया।

ऐपल ने अपने लोकप्रिय 'ऐपल टू' कंप्यूटर को बनाना बंद किया।



1994

ऐपल ने पहला पावर पी.सी. प्रोडक्ट बनाया, जो उसके मैक कंप्यूटर के लिए उपयोगी था।

ऐपल ने दूसरे कंप्यूटर निर्माताओं को अपने 'सिस्टम 7' का लाइसेंस देने का ऐलान किया। 'रेडियस' और 'पावर कंप्यूटिंग' उसके शुरुआती ग्राहक थे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्टीव जॉब्स ने 'पिक्सर' को बेचने की नाकाम कोशिश की। संभावित खरीदारों में माइक्रोसॉफ्ट भी शामिल था।

1995

10 जून को न्यूयॉर्क सिटी के सेंट्रल पार्क में 'पोकाहोंटस' का प्रीव्यू आयोजित।

डिज्नी ने 'टॉय स्टोरी' रिलीज की, जो हिट साबित हुई और जिसने 19.17 करोड़ डॉलर की कमाई की।

पिक्सर के आई.पी.ओ. के 69 लाख शेयर बिके।

1996

स्पींडलर की जगह गिलबर्ट अमेलियो को ऐपल का सी.ई.ओ. बनाया गया। जल्द ही अमेलियो ने चेयरमैन का पदभार भी सँभाल लिया।

जून में सिलिकन वैली और कंप्यूटर के बारे में बनाई गई एक पी.बी.एस. डॉक्यूमेंटरी में स्टीव जॉब्स का प्रमुखता के साथ चित्रण किया गया।

स्टीव जॉब्स ने दिसंबर में ऐपल के निदेशक मंडल को 42.7 करोड़ डॉलर में 'नेक्स्ट' खरीदने के लिए सहमत कर लिया। निदेशक मंडल में परामर्शक की हैसियत से स्टीव की वापसी हुई।

1997

लंबे अंतराल के बाद जनवरी में स्टीव जॉब्स और स्टीव वोजनियाक ऐपल में प्राण फूँकने के लिए वापस लौटे।

अमेलियो ने घोषणा की कि 'न्यूटन' का निर्माण बंद किया जाएगा।

फरवरी में एक्जीक्यूटिव कमेटी के नए सदस्य स्टीव जॉब्स और स्टीव वोजनियाक को गिल अमेलियो का परामर्शक बनाया गया।

अमेलियो ने 9 जुलाई को त्यागपत्र दिया और स्टीव जॉब्स को अंतरिम सी.ई.ओ. बनाया गया। उन्हें जब सी.ई.ओ. का पद स्वीकार करने के लिए कहा गया तो 'पिक्सर' के प्रति अपने दायित्व को ध्यान में रखते हुए उन्होंने इस पद को स्वीकार करने से इनकार कर दिया।



माइक्रोसॉफ्ट के बिल गेट्स के साथ स्टीव जॉब्स

स्टीव जॉब्स ने ऐपल के चार दर्जन कंप्यूटर मॉडलों की संख्या 10 तक सीमित करते हुए उत्पादों का सरलीकरण करने की प्रक्रिया शुरू की।

अगस्त में स्टीव जॉब्स ने जब माइक्रोसॉफ्ट के साथ नए करार का ऐलान किया तो ऐपल के प्रशंसकों के बीच मिश्रित प्रतिक्रिया हुई। सितंबर में ऐपल ने औपचारिक तौर पर स्टीव जॉब्स को अपना अंतरिम सी.ई.ओ. घोषित किया। (जॉन स्कूली ने 2010 में लिण्डर कानी को दिए गए साक्षात्कार में बताया, “मैं मानता हूँ कि अगर उस समय स्टीव लौटकर नहीं आए होते—कम-से-कम छह महीने की भी देर हो गई होती—तो ऐपल का नामोनिशान मिट चुका होता।”)

नवंबर में ऐपल ने ‘पावर बुक’ बाजार में पेश किया, जो पावर पी.सी.जी. 3 चिप द्वारा संचालित होता था।

स्टीव जॉब्स ने एक साथ ऐपल और पिक्सर के सी.ई.ओ. के पद की जिम्मेदारी सँभाली थी।

1998

‘नेक्स्ट स्टेप’ का अधिग्रहण करने के बाद ऐपल ने ‘मैक ओएस एक्स’ नामक प्रमुख सॉफ्टवेयर का विकास शुरू किया।

5 जनवरी को सैन फ्रांसिस्को के मेकवर्ल्ड में ऐपल ने पावर मैक ‘ब्लू एंड ह्वाइट’ जी 3 टावर यूनिट बनाने की घोषणा की।

पी.बी.एस. की डॉक्यूमेंटरी ‘ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ इंटरनेट’ में स्टीव जॉब्स का प्रमुखता के साथ चित्रण किया गया।

स्टीव जॉब्स ने मार्च में ऐपल के उत्पादों की संख्या घटाई, ‘न्यूटन’ जैसे उत्पादों का निर्माण बंद किया; सॉफ्टवेयर लाइसेंसिंग प्रोग्राम को बंद किया और कई कर्मचारियों को कार्य-मुक्त कर दिया।

20 नवंबर को पिक्सर की एनीमेटेड फिल्म ‘ए बग्स लाइफ’ प्रदर्शित हुई, जिसने 16.2 करोड़ डॉलर की कमाई की।

1999

ऐपल ने पाँच अलग-अलग रंगों में ‘आई मैक जी 3’ और ‘पावर मैक जी 3 टावर यूनिट’ बनाने की घोषणा की।

नोवा वीले ने 20 जून को टी.वी. डॉक्यू-ड्रामा ‘पाइरेट्स ऑफ सिलिकन वैली’ में स्टीव जॉब्स का चित्रण किया।

21 जुलाई को ऐपल ने ‘पोर्टेबल आईबुक’ और इसके प्रथम वायरलेस नेटवर्क एयरपोर्ट बेस स्टेशन को बाजार में पेश किया।

13 नवंबर को पिक्सर की एनीमेटेड फिल्म ‘टॉय स्टोरी 2’ प्रदर्शित हुई, जिससे 24.58 करोड़ डॉलर की कमाई हुई।

2000

5 जनवरी को मेकवर्ल्ड में स्टीव जॉब्स ने ऐलान किया कि अब वे ऐपल के अंतरिम सी.ई.ओ. की जगह स्थायी सी.ई.ओ. बन गए हैं।

स्टीव जॉब्स ने पब्लिक बेस्ड ‘मैक ओ.एस. एक्स.’ को बाजार में पेश किया, जिसका निर्माण ‘नेक्स्ट’ के सॉफ्टवेयर की मदद से किया गया था।

ऐपल ने जब कहा कि चौथी तिमाही की उसकी बिक्री अपेक्षा के अनुरूप नहीं होगी तो उसके प्रति शेयर में 28 डॉलर की गिरावट आई।

2001

मैकवर्ल्ड में स्टीव जॉब्स ने मैक ओ.एस.एक्स. क्विक सिल्वर जी 4 टावर कंप्यूटर और टाइटेनियम पावर बुक जी 4 कंप्यूटर को प्रदर्शित किया।

मई में ऐपल ने न्यूयॉर्क सिटी में अपना फ्लैगशिप रिटेल स्टोर खोला। (अगले 10 वर्षों में दुनिया भर में ऐसे 300 से अधिक स्टोर खुल गए।)

पिक्सर की एनीमेटेड फिल्म ‘मोन्स्टर इंक’ 28 अक्टूबर को प्रदर्शित हुई, जिससे 25.5 करोड़ डॉलर की कमाई हुई।

10 नवंबर को आईपॉड बाजार में पेश किया गया, जिसकी एड लाइन थी— ‘आपकी जेब में 1,000 गाने।’



इंटेल के सी.ई.ओ. एंडी के साथ स्टीव जॉब्स

2002

29 अप्रैल को ऐपल ने 'ईमैक' पेश किया। इसका निर्माण खास तौर पर शैक्षणिक बाजार को ध्यान में रखकर किया गया था।

2003

7 जनवरी को मैकवर्ल्ड में ऐपल ने सफारी वेब ब्राउजर आई लाइफ सॉफ्टवेयर और नया पावर बुक बनाने की घोषणा की। महीने के अंत में ऐपल ने हाई-इंड टावर यूनिट बनाने की घोषणा की।

पिक्सर की एनीमेटेड फिल्म 'फाइंडिंग नीमो' 30 मई को प्रदर्शित हुई। इस फिल्म ने 33.97 करोड़ डॉलर की कमाई की। इसे सर्वश्रेष्ठ एनीमेटेड फिल्म का 'एकेडमी पुरस्कार' मिला।

28 अप्रैल को ऐपल ने केवल मैक कंप्यूटर के लिए 'आई ट्यून म्यूजिक स्टोर' शुरू किया।

ऐपल ने 24 जून को 'पावर मैक जी 5' बाजार में पेश किया।

माइकल आइज़नर से मतभेद बढ़ने के कारण स्टीव जॉब्स ने घोषणा की कि 16 अक्टूबर को स्टीव जॉब्स ने विंडोज के लिए आई ट्यून पेश किया और बताया कि किस तरह डिजिटल संगीत व्यवसाय के क्षेत्र में ऐपल अपने प्रतिस्पर्धियों को मात दे रही थी।

चिकित्सकीय जाँच में पता चला कि स्टीव जॉब्स को अग्न्याशय का कैंसर था। कई महीनों तक उन्होंने आधुनिक उपचार को अपनाने से इनकार किया और वैकल्पिक आहार को अपनाने का प्रयास किया।

2004

6 जनवरी को मैकवर्ल्ड में स्टीव जॉब्स ने 'आई पॉड मिनी' और 'आई लाइफ सूट' प्रदर्शित किया। जल्द ही 'आई पॉड मिनी' दुनिया में सबसे अधिक बिकनेवाला एम.पी. 3 प्लेयर बननेवाला था और ऐपल का बाजार पर वर्चस्व बढ़ानेवाला था।

अगस्त में शल्य-क्रिया के जरिए स्टीव जॉब्स के अग्न्याशय के ट्यूमर को हटाया गया।

2005

11 जनवरी को सैन फ्रांसिस्को के मैकवर्ल्ड में स्टीव जॉब्स ने आईवर्क, नया मैक मिनी और आई पॉड शफल प्रदर्शित किया। यह 49 डॉलर का आई पॉड सबसे सस्ता था।

29 अप्रैल को ऐपल ने 'मैक ओ.एस.एक्स.10.4 टाइगर' बाजार में प्रस्तुत किया।

6 जून को स्टीव जॉब्स ने ऐलान किया कि ऐपल अपने मैक कंप्यूटरों में मोटोरोला और आई.बी.एम. के पावर पी.सी. आर्किटेक्चर की जगह इंटेल प्रोसेसर का इस्तेमाल करेगी।

12 जून को स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में स्टीव जॉब्स ने ऐतिहासिक भाषण दिया, जिसका संदेश था—'स्टे हंग्री, स्टे फुलिश।'

7 सितंबर को स्टीव जॉब्स ने मोटोरोला रॉकस्टार नामक आई ट्यून की क्षमतावाला सेल फोन और 'आई पॉड नैनो' बाजार में पेश किया।

12 अक्टूबर को ऐपल के संगीत समारोह में स्टीव जॉब्स ने डिज्नी के नए सी.ई.ओ. बॉब इगर को मंच पर आमंत्रित किया तथा 'आई पॉड वीडियो' और 'आई ट्यून मूवी स्टोर' का परिचय दिया।



2006

10 जनवरी को मैक विले में स्टीव जॉब्स ने 'आईमैक' और 'मैकबुक प्रो' नामक प्रथम दो इंटेल मैक कंप्यूटरों को प्रदर्शित किया।

24 जनवरी को वॉल्ट डिज्नी कंपनी ने पिक्सर को 7.4 अरब डॉलर की कीमत पर खरीद लिया। पिक्सर के सबसे बड़े शेयरधारक स्टीव जॉब्स को डिज्नी निदेशक मंडल में शामिल किया गया, जबकि एंड्रे कैटमुल वॉल्ट डिज्नी एनीमेशन स्टूडियो के प्रेसीडेंट बनाए गए।

28 फरवरी को ऐपल ने प्रथम लिविंग रूम उत्पाद 'आई पॉड हाई-फाई' बाजार में पेश किया। डेढ़ वर्ष बाद इसका निर्माण बंद कर दिया गया।

ऐपल ने टी.वी. विज्ञापनों के जरिए 'मैक वर्सेज पी.सी.' अभियान शुरू किया। यह अभियान तीन वर्षों तक चलाया गया।

7 अगस्त को नया 'मैक' प्रो बाजार में पेश करते हुए ऐपल ने अपने सारे उत्पादों को इंटेल आधारित बनाने की प्रक्रिया पूरी होने की घोषणा की।

2007

9 जनवरी को मैकवर्ल्ड में स्टीव जॉब्स ने क्रांतिकारी टच स्क्रीन इंटरफेस के साथ आईफोन प्रदर्शित किया। उन्होंने ऐपल टी.वी. भी प्रदर्शित किया और कंपनी का नाम 'ऐपल कंप्यूटर इंक' की जगह 'ऐपल इंक' रखने का ऐलान किया।

29 जून को अमेरिका के बाजार में आईफोन पेश किया गया और उसी दिन पिक्सर की आठवीं एनीमेटेड फीचर फिल्म 'रेटेल' प्रदर्शित की गई।

5 दिसंबर को स्टीव जॉब्स को कैलिफोर्निया के 'हॉल ऑफ फेम' में शामिल किया गया।

2008

15 जनवरी को मैकवर्ल्ड में स्टीव जॉब्स ने 'मैक बुक एयर' प्रदर्शित किया।

6 मार्च को ऐपल ने ऐलान किया कि वह बाहरी डेवलपर्स के लिए आईफोन प्लेटफॉर्म मुहैया करवाएगी।

9 मई को स्टीव जॉब्स ने आईफोन 3जी प्रदर्शित किया। मीडिया ने उनके कमजोर स्वास्थ्य के बारे में चर्चा की।



2009

5 जनवरी को स्टीव जॉब्स ने घोषणा की कि खराब सेहत की वजह से वे 'मैकवर्ल्ड' को संबोधित नहीं करेंगे और छह महीने का चिकित्सा अवकाश लेंगे।

अप्रैल में मेथोडिस्ट यूनिवर्सिटी अस्पताल में स्टीव जॉब्स के जिगर का प्रत्यारोपण किया गया।

3 अगस्त को एंड्राइड के मसले पर मतभेद होने के कारण गूगल के सी.ई.ओ. इरीक स्कर्मिट ऐपल निदेशक मंडल से मुक्त हो गए।

28 अगस्त को ऐपल ने 'मैक ओ.एस.एक्स.10.6 स्नो लियोपार्ड' बाजार में पेश किया।

9 सितंबर को शल्य-क्रिया के बाद स्टीव जॉब्स पहली बार सार्वजनिक रूप से नजर आए, जब उन्होंने नया आई पॉड प्रदर्शित किया।

2010

27 जनवरी को स्टीव जॉब्स ने नया आई पॉड प्रदर्शित किया। इस दौरान उनकी सेहत को लेकर कई तरह की अफवाहें फैल रही थीं।

16 जुलाई को स्मार्ट फोन से जुड़े मुद्दों को लेकर स्टीव जॉब्स ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया।

2011

17 जनवरी को अनिश्चितकाल के लिए चिकित्सा अवकाश पर जाने की घोषणा कर स्टीव जॉब्स ने सबको अवाकू कर दिया।

27 मार्च को चिकित्सा अवकाश के बावजूद स्टीव जॉब्स ने मंच पर आकर आई पैड 2 को प्रदर्शित किया।

6 जून को डब्ल्यू.डी.सी. 2011 में अंतिम वक्तव्य पेश करते हुए स्टीव जॉब्स ने 'आई क्लाउड' को प्रदर्शित किया।

7 जून को कोपरटिनो सिटी काउंसिल में स्टीव जॉब्स ने 'स्पेशलिफ कैपस' की योजना को पेश किया। सार्वजनिक तौर पर उनका यह आखिरी कार्यक्रम था।

24 अगस्त को स्टीव जॉब्स ने ऐपल के सी.ई.ओ. पद से त्यागपत्र दे दिया।

5 अक्टूबर को अपने घर में परिजनों की मौजूदगी के बीच स्टीव जॉब्स का देहांत हो गया।

□

प्रसिद्ध व्यक्तियों के विचार

“स्टीव जॉब्स उन महान् अमेरिकी आविष्कारकों में से एक थे, जिन्होंने भिन्न तरीके से चिंतन किया था। उन्हें दुनिया को बदलने में यकीन था और ऐसा करने लायक प्रतिभा भी उनमें थी।”

— बराक ओबामा



“मैं उन खुशकिस्मत लोगों में से एक हूँ, जिसे स्टीव के साथ काम करने का अवसर मिला।”

— बिल गेट्स

“स्टीव जॉब्स कंप्यूटर युग के ‘माइकल एंजेलो’ थे। उन्होंने साबित कर दिखाया कि प्रतिभाशाली इनसान के लिए महँगी और अभिजात शिक्षा बेमानी होती है।”

— नारायणमूर्ति

“स्टीव जॉब्स अपनी पीढ़ी के महानतम सी.ई.ओ. थे।”

— रूपोर्ट मर्डोक

“दुनिया ने एक दूरदर्शी हस्ती को खो दिया है। प्रौद्योगिकी उद्योग ने अपना दिग्गज खो दिया है और मैंने अपना एक मित्र खो दिया। भावी पीढ़ियाँ स्टीव जॉब्स की विरासत को याद रखेंगी।”

— माइकल डेल

“स्टीव जॉब्स आश्चर्यजनक उपलब्धियों और हैरतअंगेज प्रतिभावाले महान् व्यक्ति थे। उनके पास बहुत ही कम शब्दों में बताने की कला थी कि आपको कैसे सोचना चाहिए।”

— लैरी पेज

“स्टीव, मार्गदर्शक और मित्र होने के लिए शुक्रिया। आपने जो चीजें बनाई, वे दुनिया बदल सकती हैं। मुझे हमेशा आपकी कमी खलेगी।”

— मार्क जुकरबर्ग

“स्टीव जॉब्स थॉमस एडीसन के बाद सबसे महान् आविष्कारक थे।”

— स्टीवन स्पिलबर्ग

□

पुरस्कार व सम्मान

1982 : 'टाइम' पत्रिका द्वारा जॉब्स के ऐपल में निर्मित कंप्यूटर को 'मशीन ऑफ दि ईयर' खिताब।

'टाइम' में 'द मोस्ट फेमस मैस्ट्रो ऑफ द माइक्रो' शीर्षक से स्टीव जॉब्स की लंबी जीवनी प्रकाशित।

1985 : संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन द्वारा ऐपल के संस्थापक स्टीव जॉब्स एवं स्टीव वोज को 'नेशनल मेडल ऑफ टेक्नोलॉजी' से सम्मानित।

1987 : 'ग्रेटेस्ट पब्लिक सर्विस बाई एन इंडिविजुअल 35 ईयर ऑर अंडर' वर्ग के अंतर्गत 'जेफरसन अवार्ड ऑफ पब्लिक सर्विस'।

1989 : इमर्सन मैगजीन द्वारा 'दशक उद्यमी' सम्मान से सम्मानित।

27 नवंबर, 2007 : 'फॉर्च्यून' मैगजीन द्वारा 'मोस्ट पावरफुल पर्सन इन बिजनेस' के रूप में नामित।

5 दिसंबर, 2007 : कैलिफोर्निया के गवर्नर अर्नोल्ड श्वेज़नेगर और प्रथम महिला मारिया श्रीवेर द्वारा जॉब्स 'कैलिफोर्निया हॉल ऑफ फेम' में शामिल।

अगस्त 2009 : 'मोस्ट एडमायर्ड इंटरप्रेनर अमंग टीनएजर' (युवाओं के सबसे प्रशंसित उद्यमी) के रूप में सम्मानित।



5 नवंबर, 2009 : स्टीव जॉब्स 'फॉर्च्यून' मैगजीन द्वारा 'सी.ई.ओ. ऑफ डिकेड' (दशक का मुख्य कार्यकारी) के रूप में नामित।

नवंबर 2010 : 'फॉर्ब्स' की विश्व के सबसे शक्तिशाली लोगों की सूची में जॉब्स 17वें स्थान पर नामित।

दिसंबर 2010 : 'फाइनेंशियल टाइम्स' ने जॉब्स को सन् 2010 का 'पर्सन ऑफ दि ईयर' नामित किया।

21 दिसंबर, 2011 : बुडापेस्ट की 'ग्रेफीसॉफ्ट' कंपनी द्वारा स्टीव जॉब्स को 'आधुनिक युग की महानतम शख्सियत' कहा और उनकी विश्व की पहली कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया।

जॉब्स को स्वप्नद्रष्टा, नवप्रवर्तक और प्रतिभाशाली व्यक्ति कहा गया।

उन्हें अपने समय का 'थॉमस अल्वा एडीसन' और 'हेनरी फोर्ड' कहा गया।

जनवरी 2012 : 16-25 आयु वर्ग के लोगों में स्टीव जॉब्स थॉमस एडीसन के बाद दूसरे 'सदाबहार महान् नव-प्रवर्तक' के रूप में चुने गए।

12 फरवरी, 2012 : मरणोपरांत 'ग्रैमी ट्रस्टी अवार्ड' से सम्मानित।

मार्च 2012 : 'फॉर्च्यून मैगजीन' द्वारा 'सदाबहार महानतम उद्यमी' के रूप में नामित। डिज्नी की मूवी 'जॉन कार्टर' स्टीव जॉब्स को समर्पित।



मैं स्टीव जॉब्स बोल रहा हूँ



- जिंदगी छोटी है और हम सभी एक-न-एक दिन मरनेवाले हैं। यह हकीकत है, आप जानते ही हैं।
- जब कंपनियाँ बड़ी बन जाती हैं तो अक्सर अपनी आत्मा को खो बैठती हैं और मेरे सामने यही सबसे बड़ी कसौटी रहेगी—क्या हम ऐसी 10 अरब डॉलर की कंपनी बन सकते हैं, जिसकी आत्मा सुरक्षित हो?
- आविष्कार से साफ हो जाता है कि लीडर कौन है और अनुयायी कौन।
- आविष्कार का मतलब यह नहीं होता कि आपके पास कितने डॉलर हैं।
- यह पाइरेसी है, न कि प्रत्यक्ष रूप में मौजूद ऑनलाइन म्यूजिक स्टोर, जो हमारा प्रमुख प्रतिद्वंद्वी है।
- जिन कंपनियों में कर्मियों की निजी राय को प्रोत्साहित करने की जगह नजर-अंदाज किया जाता है, तब उम्दा किस्म के कर्मियों के लिए अनुकूल माहौल तैयार नहीं हो पाता।
- प्रतिभाशाली लोगों की उपेक्षा कर आप औसत प्रतिभावाले लोगों को तरजीह देने लगते हैं। मैं यह बात जानता हूँ, क्योंकि इसी तरह ऐपल का निर्माण किया गया। इसका निर्माण अन्य कंपनियों के शरणार्थियों को नियुक्त कर किया गया। ये लोग विलक्षण अन्वेषक हैं, जिन्हें अन्य कंपनियों ने कोई भाव देना जरूरी नहीं समझा था।
- जब मैं बड़ा हो रहा था तब एक लड़के को जानता था, जिसके पास वोल्क्स वैगन कार थी। वह उस कार को पोर्च के रूप में तब्दील कर देना चाहता था। उसने अपना सारा धन व समय इस काम के लिए लगाया और वाहन की ऊपरी साज-सज्जा में परिवर्तन किया। उस कार की आवाज तेज हो गई और हुलिया भी बदल गया। मगर वह कार पोर्च नहीं बन पाई, बल्कि वह एक बदसूरत वोल्क्स वैगन बनकर रह गई।
- हमारा उद्देश्य संसार का सर्वश्रेष्ठ उपकरण बनाना है, सबसे बड़ा उपकरण बनाना नहीं।
- जब लोग आईफोन को देखते हैं तो कहते हैं, हम लोग सही अर्थों में उद्योग जगत् को दिशा दिखानेवाले उत्पादों का निर्माण कर सकते हैं। यह चमत्कार या शख्सियत का मामला नहीं है, बल्कि परिणाम और उम्दा उत्पाद का मामला है। यही वजह है कि ऐपल के अंदर और बाहर के लोग इस कंपनी को लेकर इस कदर उत्सुक नजर आते हैं। इसी से ऐपल की शक्ति का अंदाजा भी लगाया जा सकता है।
- मैं कई बार कहता रहा हूँ कि व्यापार के मामले में ऐपल को सोनी की तरह होना चाहिए, मगर हकीकत यही है कि इस व्यापार में ऐपल को ऐपल की तरह ही होना चाहिए।
- फोकस ग्रुपों को साथ लेकर उत्पादों का डिजाइन तैयार करना कठिन काम है। जब तक आप लोगों को बताएँ नहीं, वे समझ नहीं पाते कि उन्हें करना क्या है।



- संगठन को स्पष्ट और सरल होना चाहिए, साथ ही अत्यंत जवाबदेह भी। इस तरह हर काम आसान हो जाता है।
- एकाग्रता और सरलता—ये दो प्रमुख सूत्र हैं।
- सरल होना जटिलता की तुलना में अधिक मुश्किल हो सकता है।
- आपको अपने विचार को स्पष्ट और सरल रूप से व्यक्त करने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ सकती है। मगर एक बार ऐसा कर लेने के बाद आप असंभव को भी संभव बना सकते हैं।
- मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि ऐपल के प्रति ग्राहक इतने वफादार क्यों होते हैं? ऐसा इसलिए नहीं होता कि वे मैं रूपी चर्च के प्रति श्रद्धा रखते हैं। ऐसा सोचना गलत होगा। ऐसा इसलिए होता है कि जब आप हमारा कोई उत्पाद खरीदते हैं और तीन महीने बाद उत्पाद को लेकर कोई परेशानी होती है तो आसानी से उसे हल करने में आपको सफलता मिल जाती है। तब आप सोचते हैं कि ऐपल के लोगों ने किस तरह ऐसी परेशानियों के बारे में पहले ही अंदाजा लगा लिया था। और फिर तीन महीने के बाद आप कुछ ऐसा करना चाहते हैं, जैसा आपने पहले कभी

नहीं किया है और ऐसी कोशिश में भी आप कामयाब हो जाते हैं। तब आप सोचते हैं कि ऐपल के लोग इस बात को भी जानते थे और फिर छह महीने के बाद वैसा ही होता है। दुनिया में ऐसा कोई दूसरा उत्पाद नहीं है, जो आपको इस तरह संतुष्टि प्रदान करे; मगर मैं आपका नए अनुभव के साथ साक्षात्कार करवाता हूँ।

- एकाधिकार का खात्मा किस प्रकार होता है? जरा सोचकर देखिए। बेहतरीन उत्पादन में दक्ष कुछ लोग कुछ बेहतरीन उत्पाद तैयार करते हैं और फिर कंपनी एकाधिकार कायम कर लेती है। लेकिन उत्पादन से जुड़े लोग उत्पादन करने के बाद कंपनी को आगे की तरफ नहीं ले जा सकते। यह तो मार्केटिंग से जुड़े लोगों की दक्षता होती है, जो कारोबार को लातिन अमेरिका या किसी और क्षेत्र तक पहुँचाते हैं।

- हम सभी व्यस्त हैं और हम लोगों के पास इतनी फुरसत नहीं है कि वाशिंग मशीन या फोन की कार्यशैली को ठीक से समझने की कोशिश करें। अगर आपके पास एक फोन है तो आप कभी भी उसकी 5 प्रतिशत से ज्यादा खूबियों के बारे में जान नहीं पाएँगे और न ही आप उसकी 5 प्रतिशत खूबियों से अधिक का इस्तेमाल कर पाएँगे, चूँकि यह आपको जटिल कार्य प्रतीत होगा। यह अजीब स्थिति है।



माइकल ऐशनर एवं रॉय डिज्जी के साथ स्टीव जॉब्स

- हम सभी व्यस्त जीवन गुजारते हैं। हमारी नौकरियाँ हैं, शौक हैं, बच्चे हैं, हर किसी का जीवन निरंतर व्यस्त ही होता जा रहा है; पूरा समाज ही व्यस्त नजर आ रहा है। आपके पास उपकरणों के ब्योरो को सीखने के लिए समय नहीं होता और आपको हर चीज पहली जैसी नजर आने लगती है।

- हम भटक न जाएँ या कई चीजों में उलझ न जाएँ, इसके लिए हमें हजारों बार कई बातों को ठुकराना पड़ता है। हम हमेशा नए बाजार में प्रवेश करने के बारे में सोचते रहते हैं; मगर ऐसा करने के लिए हमें गैर-जरूरी बातों को न कहते हुए महत्वपूर्ण बातों की तरफ ध्यान देना पड़ता है।



- कैसर के अनुभव से मुझे कुछ सबक सीखने का मौका मिला है। मैं समझ सका हूँ कि मैं जिंदगी से प्यार करता हूँ, बेहद प्यार करता हूँ। मेरे पास खुशहाल परिवार है और मेरे पास महत्वपूर्ण काम है। मुझे इनमें रमे रहना अच्छा लगता है। मैं ज्यादा समारोहों में नहीं जाता। मैं अपने परिवार को चाहता हूँ। मुझे ऐपल से प्यार है और मुझे पिक्सर से प्यार है। मुझे ऐपल का संचालन करना अच्छा लगता है। ऐसा करते हुए मैं खुद को खुशकिस्मत महसूस करता हूँ।

- मैंने हमेशा यही चाहा है कि जो कुछ भी हम करते हैं, उन सबकी बुनियादी प्रौद्योगिकी पर हमारा नियंत्रण रहे।

- हमारी निजी धारणा है कि सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल लिविंग रूम के लिए भी किया जाना चाहिए; मगर कंप्यूटर और टी.वी. का आपस में विलय करना ठीक नहीं रहेगा। दोनों अलग-अलग चीजें हैं। जो लोग लिविंग रूम में कंप्यूटर की जगह बनाने की योजना बना रहे हैं, मेरी राय में उन्हें उल्लेखनीय सफलता नहीं मिलनेवाली है।

- मैं ऐपल में दोबारा इसलिए वापस आया, क्योंकि मेरा मानना है कि ऐपल के होने से दुनिया बेहतरीन बन सकती है। अब ऐपल-विहीन दुनिया की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

- सॉफ्टवेयर ग्राहकों के अनुभव का हिस्सा बन जाता है। आईपॉड और आईट्यून्स से यह बात साबित हो चुकी है। वह केवल कंप्यूटरों के लिए ही नहीं बल्कि अन्य इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के लिए भी प्रेरक प्रौद्योगिकी बन चुकी है।

- हम अभी भी ज्यादातर बॉक्स पर निर्भर कर रहे हैं। हमें बॉक्स पसंद है। आज हमारे पास शानदार कंप्यूटर हैं और अनूठे हार्डवेयर का हम निर्माण कर रहे हैं। मैं अभी भी काफी समय नए कंप्यूटर बनाने में जुटा रहता हूँ और ऐपल का यही अहम मकसद बना रहेगा। लेकिन हम लोग उपभोक्ताओं के अनुभव को सबसे ज्यादा अहमियत देते हैं और हम उस अनुभव का बॉक्स से परे विस्तार कर रहे हैं और इसके लिए इंटरनेट के उम्दा इस्तेमाल पर गौर कर रहे हैं।

- ग्राहकों का अनुभव चार पहलुओं पर केंद्रित होता है—हार्डवेयर, ऑपरेटिंग सिस्टम, एप्लीकेशंस और नेट। हम अपने ग्राहकों को इन चारों मामलों में संतुष्टि प्रदान करना चाहते हैं।

- जब आप आविष्कार करते हैं तो आपसे गलतियाँ भी होती हैं। गलतियों को तुरंत स्वीकार कर लेना चाहिए और अपने अन्वेषण की प्रक्रिया में सुधार करना चाहिए।
- कब्रिस्तान का सबसे अमीर मुरदा बनने का कोई मतलब नहीं है। रात में सोते समय खुद से यह कहना कि मैंने आज कमाल का काम किया है, मेरे लिए यही बात सबसे अधिक अहमियत रखती है।
- जब हम ऑपरेटिंग सिस्टम तैयार कर रहे थे तब हमने इस बात पर जोर दिया कि इसे किस तरह सरल और शक्तिशाली बनाया जा सकता है।
- गुणवत्ता के प्रतीक बनें। कुछ लोग ऐसे माहौल के आदी नहीं होते, जहाँ उत्कृष्टता की अपेक्षा रखी जाती है।
- जब मैं 23 साल का था तब मेरे पास 10 लाख डॉलर थे, 24 साल की उम्र में 1 करोड़ डॉलर थे और 25 साल की उम्र में 10 करोड़ डॉलर थे। मगर धन की मेरे लिए कोई अहमियत नहीं थी, क्योंकि सिर्फ पैसे के लिए मैंने कोई काम नहीं किया था।
- बिल गेट्स ने जवानी का कुछ वक्त आश्रम में गुजारा होता तो वह अधिक खुले दिल का आदमी बन सकता था।
- जब मैं किसी वरिष्ठ आदमी को नियुक्ति देता हूँ तो उसकी योग्यता के आधार पर ही ऐसा करता हूँ। उनका स्मार्ट होना जरूरी है। मगर सबसे अहम सवाल यह होता है कि क्या वे ऐपल से गहरा लगाव महसूस करेंगे? अगर उन्हें ऐपल से प्यार हो गया तो बाकी चीजें अपने आप आसान हो जाएँगी। तब वे ऐपल के हित के लिए लगातार काम करेंगे। तब वे अपने हित के बारे में, स्टीव के हित के बारे में या किसी और के हित के बारे में सोचना बंद कर देंगे।
- हम लोग 'अटारी' में गए और कहा, "हमारे पास यह जोरदार चीज है। इसे बनाते समय हमने तुम्हारे पुरजों का भी इस्तेमाल किया है, क्या तुम हमें इसे बनाने के लिए धन मुहैया करोगे? या इसे बनाकर हम तुम्हें दे देंगे, हम सिर्फ इसे बनाना चाहते हैं। हमें वेतन पर रख लो, हम तुम्हारे लिए काम करेंगे।" उन लोगों ने कहा, "नहीं।" तब हम लोग हेवलेट-पैकर्ड के पास गए और उन्होंने कहा, "हमें तुम्हारी जरूरत नहीं है। तुमने तो कॉलेज की पढ़ाई भी पूरी नहीं की है।"
- उम्र के तीसवें या चालीसवें साल में कम ही कलाकार ऐसे होते हैं, जो उम्रदा चीज बना पाते हैं।
- मुझे ऐसा लगता है, मानो किसी ने मेरे पेट में जोरदार घूँसा मारकर मेरे अंदर की सारी हवा निकाल दी हो। मैं महज 30 साल का हूँ और मैं नई चीजें बनाना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि मैं एक और उम्रदा कंप्यूटर बना सकता हूँ और ऐपल मुझे वैसा करने का मौका नहीं देनेवाली है।
- मैंने अपने पद से जुड़े 'अंतरिम' शब्द को हटा दिया। मुझे आज भी आई.सी.ई.ओ. कहकर पुकारा जाता है, क्योंकि यह संबोधन वाकई असरदार है।
- ज्यादातर लोगों के शब्दकोश में डिजाइन का मतलब बाहरी रंग होता है, इंटीरियर डेकोरेटिंग होता है या परदे और सोफे का रंग होता है। लेकिन मेरे लिए डिजाइन का यही मतलब नहीं है। डिजाइन तो मानव-निर्मित वस्तु की बुनियादी आत्मा है, जिसके जरिए व्यक्ति अपना आंतरिक सौंदर्य सृजन के जरिए व्यक्त करता है, चाहे वह सृजन उत्पाद के रूप में हो या सेवा के रूप में हो।
- 'मैक' का मतलब कोई खास रंग या कोई खास आकार नहीं है। आईमैक की विशिष्टता यही है कि इसे ग्राहकों के लिए सर्वाधिक उपयोगी कंप्यूटर के तौर पर विकसित किया गया है, जिसमें सभी तत्वों का संगम हुआ है। हमने जो नया आईपैड बनाया है, इसे बनाते समय मैंने तय किया कि फैन से इसे मुक्त रखना है।



- ऐसे कंप्यूटर के साथ काम करना अधिक सुखद होगा, जो हमेशा शोर न मचाए। मगर यह सिर्फ मेरे फैसले से ही मुमकिन नहीं होनेवाला था। इसके लिए काफी तकनीकी दक्षता का प्रयोग करना पड़ा। बिजली का बेहतर प्रबंधन करने के लिए काफी पसीना बहाना पड़ा। यह प्रयोग रंग से ताल्लुक नहीं रखता। जिस दिन से हमने शुरुआत की, उत्पाद के केंद्र में हमारा यही मकसद रहा है।
- जब मैंने शुरुआत की तब मेरी उम्र 20 या 21 साल की थी। सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में काम करनेवाले इंटरल के रॉबर्ट नोएस, एंडी ग्रेव और बिल हेवलेट तथा डेविड पैकर्ड मेरे आदर्श थे। ये लोग ऐसे थे, जो महज पैसे कमाना नहीं चाहते थे बल्कि दुनिया को बदल देना चाहते थे और ऐसी कंपनियों की स्थापना करना चाहते थे, जो उत्तरोत्तर उन्नति करे और बदलाव लाए। वे अपने पीछे अनमोल विरासत छोड़कर गए।
- कोई कंपनी खोल लेना या उसके शेयरों को बेचना ही अहम बात नहीं है। यह माता-पिता की भूमिका की तरह है।
- बच्चे की पैदाइश कुदरत का करिश्मा है, मगर अपने बच्चे के साथ रहने और पाल-पोसकर उसे बड़ा करने में हरेक माता-पिता को अपार खुशी महसूस होती है।

• जब हम कोई चीज या अवसर देखते हैं तो उसका लाभ उठाना चाहते हैं। हमने ऐसे कई अवसरों का लाभ उठाया भी है, जैसे—डेस्कटॉप फिल्में, वायरलेस नेटवर्किंग और आईट्रल्स। इस तरह की रचनात्मक अवधि अधिक-से-अधिक दस सालों तक बनी रह सकती है। लेकिन अगर हम सदुपयोग कर सकें तो यह सुनहरा युग साबित हो सकता है।

• हर चीज में वक्त लगता है। आप जानते हैं, ऐसा ही होता है। प्रौद्योगिकी की लहरों को साकार होने से पहले ही आप भाँप सकते हैं। तब आपको बुद्धिमत्ता के साथ चुनना होता है कि आपको किस दिशा में काम करना है। अगर आप चुनने में गलती करेंगे तो आपकी ऊर्जा बेकार खर्च होगी। लेकिन अगर आप बुद्धिमत्ता के साथ चुनेंगे तो फिर यह प्रक्रिया धीमी होगी। कई साल लग जाएँगे।

• वर्षों पहले हमने जो यह निर्णय लिया था कि हम ऐसे किसी उत्पाद का निर्माण नहीं करेंगे, जिसकी बुनियादी प्रौद्योगिकी पर हमारा नियंत्रण न हो, यह बिल्कुल सही निर्णय था; क्योंकि ऐसा करने पर आपको दूसरों की मरजी पर निर्भर रहना पड़ता है।

• यह कोई पॉप कल्चर की बात नहीं है, न ही यह लोगों को बेवकूफ बनाने की बात है। हम लोगों को कोई ऐसा उत्पाद खरीदने के लिए उकसाना भी नहीं चाहते, जिस उत्पाद की उन्हें जरूरत नहीं है। असल में, हम यह पता लगाते हैं कि हमें क्या चाहिए। जब हमें लगता है कि कोई उत्पाद हमारे लिए उपयोगी साबित होगा, तो फिर हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि दूसरों के लिए भी वह उत्पाद उपयोगी साबित होगा। इसी तरह हमें कामयाबी मिलती रही है।

• हम बाहर निकलकर लोगों से यह पूछ नहीं सकते कि भविष्य का महान् उत्पाद क्या हो सकता है। इस मामले में हम हेनरी फोर्ड के कथन का उल्लेख कर सकते हैं। उन्होंने कहा था, “अगर मैंने अपने ग्राहकों से पूछा होता कि उन्हें किस चीज की जरूरत है तो संभवतः वे एक तेज दौड़नेवाले घोड़े की फरमाइश करते।”

• हम एकाग्र होने पर ज्यादा जोर देते हैं। लोग सोचते हैं कि हरेक बात पर एकाग्र होना जरूरी होता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं होता। इसका मतलब होता है सैकड़ों अच्छे विचारों को छोड़कर एक उम्दा विचार को चुनना। आपको सावधानीपूर्वक चुनाव करना होता है। मुझे सचमुच गर्व है कि मैंने कई उत्पादों को बनाने की तरफ ध्यान नहीं दिया, जिस तरह कई उत्पादों के निर्माण पर मैं गर्व महसूस करता हूँ।

• मैं दूसरों के प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाता। मैं उन्हें बेहतर बनाना चाहता हूँ। मेरा काम है—कंपनी के अलग-अलग हिस्से से चीजों को एकत्रित करना, रास्ता बनाना और परियोजनाओं को साकार करने के लिए संसाधन जुटाना। मेरा काम है अपने दक्ष कर्मचारियों को प्रेरित करना और उनके कौशल में वृद्धिकरना।

• कर्मचारियों की नियुक्ति करना कठिन काम होता है। यह कूड़े के ढेर से सुई ढूँढ़ने की तरह होता है। हम यह काम स्वयं करते हैं और ऐसा करते हुए काफी समय लगाते हैं। मैंने जीवन में 5,000 से ज्यादा लोगों की नियुक्ति की प्रक्रिया में भाग लिया है। इसलिए इस काम को मैं अत्यंत गंभीरता से लेता हूँ। एक घंटे के इंटरव्यू में ही आप सबकुछ जान नहीं सकते। अंत में यह पूरी तरह आपके अपने विवेक पर निर्भर करता है।

• मुझे सामनेवाला आदमी कैसा लग रहा है? वह संकट की स्थिति में किस तरह का बरताव कर सकता है? वह यहाँ क्या करने आया है? मैं सभी से यही पूछता हूँ—तुम यहाँ क्या करने आए हो? जवाब से ही आपको पता चल जाता है कि आप जिसे ढूँढ़ रहे हैं, वह वैसा शख्स नहीं है। यही असली कसौटी है।

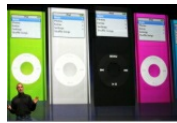
• हमारे साथ ऐपल में दक्ष लोगों की टीम है। मैंने टिम कुक को सी.ई.ओ. बनाया और मैक डिवीजन का दायित्व सौंप दिया। उसने शानदार प्रदर्शन किया। मेरा मतलब है, कुछ लोग कहते हैं—‘हे भगवान्! अगर किसी दिन स्टीव जॉब्स को बस कुचल दे, ऐपल तो तबाह हो जाएगी।’ मगर मैं आपको बताना चाहता हूँ कि ऐसी बात नहीं है। ऐपल के साथ सचमुच काबिल लोग जुड़े हुए हैं। निदेशक मंडल उनमें से किसी भी योग्य व्यक्ति को सी.ई.ओ. चुन सकता है। मेरा काम है वरिष्ठ अधिकारियों को इस कदर दक्ष बना देना कि वे आसानी से उत्तराधिकार को सँभाल सकें।

• ऐपल में 25,000 लोग काम करते हैं। उनमें से 10,000 लोग स्टोर्स में काम करते हैं। मेरा काम शीर्ष के 100 व्यक्तियों को साथ लेकर चलना है। मैं उनके साथ काम करता हूँ। इसका मतलब यह नहीं है कि वे सभी वाइस प्रेसिडेंट हैं। उनमें से कुछ महज तकनीकी विशेषज्ञ हैं।



• जब भी कोई नया विचार मुझे सूझता है, मैं उसके बारे में सबकी राय पूछता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि दूसरे उसके बारे में क्या सोचते हैं। मैं 100 लोगों के समूह के साथ नए विचार पर बहस करता हूँ, विचार को लेकर अलग-अलग लोगों के नजरिए को समझने की कोशिश करता हूँ। इस तरह नया अन्वेषण कर पाना मुमकिन होता है।

- हम लोग मार्केट रिसर्च नहीं करते, न ही कंसल्टेंट की सेवा लेते हैं। दस वर्षों की अवधि में मैंने सिर्फ एक बार कंसल्टेंट की सेवा ली, जब मुझे गेटवे की रिटेल रणनीति का विश्लेषण करना था, क्योंकि ऐपल रिटेल स्टोर खोलते समय मैं गेटवे की गलतियों को दोहराना नहीं चाहता था। इसके बाद हमने कभी कंसल्टेंट की सेवा नहीं ली; क्योंकि हम श्रेष्ठ उत्पाद बनाने में यकीन रखते हैं।
- हमें कई काम करने का मौका नहीं मिल पाता, न ही हम प्रत्येक काम को सर्वश्रेष्ठ बना सकते हैं, क्योंकि यही जिंदगी का खेल है। छोटी सी जिंदगी है, फिर मौत आ जाती है। हमने अपनी जिंदगी का यही मकसद चुना है, नहीं तो हम जापान के किसी बौद्ध मठ में बैठे हुए होते।
- ऐपल की कुल रणनीति अभी यही है कि अगर बनना है तो कंप्यूटर कारोबार का 'सोनी' बनकर दिखाओ।
- आविष्कार का संबंध इस बात से नहीं होता कि आपके बटुए में कितने डॉलर हैं। जब ऐपल ने मैक बनाया था, उस समय कंप्यूटर निर्माण के लिए आई.बी.एम. ऐपल की तुलना में सौ गुना अधिक रकम खर्च कर रही थी। इस मामले का पैसे से कोई संबंध नहीं है। यह निर्भर करता है कि आपके साथ कैसे लोग हैं, आपका नेतृत्व कैसा है और आप क्या हासिल कर सकते हैं।
- मैंने साल भर पहले कुछ लोगों को ऐपल से निकाला था। किसी को नौकरी से निकालना मेरे लिए अब कठिन काम होता जा रहा है। मुझे अपने पद के दायित्व के हिसाब से ऐसा करना पड़ता है। लेकिन जब मैं उन लोगों की तरफ देखता हूँ तो पाँच साल के एक बच्चे के नजरिए से भी सोचता हूँ। मुझे लगता है कि उस व्यक्ति की जगह मैं ही हूँ और घर लौटकर पत्नी व बच्चों से कह रहा हूँ कि मुझे नौकरी से निकाल दिया गया है। 20 सालों में ऐसा मेरे बच्चों के साथ भी हो सकता है। अब तक मैंने इस मसले पर इतनी संजीदगी के साथ विचार नहीं किया था।
- जब आप दिमाग को बंद करना चाहते हैं तो टी.वी. के सामने बैठ जाते हैं। जब आप दिमाग का इस्तेमाल करना चाहते हैं तो कंप्यूटर के सामने बैठते हैं। दोनों चीजें एक जैसी नहीं हैं।
- कंपनी की स्थापना के पीछे मेरा एक ही मकसद है कि श्रेष्ठ उत्पाद तैयार किए जा सकें। श्रेष्ठ उत्पाद बनाते रहने के लिए मजबूत कंपनी की स्थापना करना और उसके साथ प्रतिभाओं को जोड़ना आवश्यक है। दूसरी तरफ, मेरे लिए कंपनी का अर्थ मानवता का अनूठा आविष्कार है। यह पूरी तरह अमूर्त है।
- यह सच है कि लोगों को एकजुट रखने के लिए आपको ईंट-सीमेंट के ढाँचे की भी जरूरत होती है। मगर मूल रूप से कंपनी हमारे लिए एक अमूर्त खोज है, जो अत्यंत शक्तिशाली है।



- मेरे आदर्श नायक डेव पैकर्ड अपना सारा धन अपने फाउंडेशन के पास छोड़ गए। इंटेल के सह-संस्थापक बॉब नोएस ने भी ऐसा ही किया। यह मेरी खुशकिस्मती है कि मैं ऐसे लोगों से परिचित हो सका। जब मैं 21 साल का था, तब एंडी ग्रोप से मिला था। मैं उनसे मिला और मैंने कहा कि ऑपरेशंस के मामले में उनका जवाब नहीं था। मैंने उन्हें अपने साथ लंच पर चलने का अनुरोध किया। ऐसा मैंने दूसरे लोगों के साथ भी किया। ये तमाम लोग कंपनियों के निर्माता थे और उस समय सिलिकन वैली के माहौल का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा था। अब यहाँ ऐसे लोग भी हैं, जो महज पैसे कमाने के लिए कंपनी चला रहे हैं; मगर वे महान् कंपनियों का निर्माण नहीं कर सकते।
- मैं यह नहीं सोचता कि मुझे और कितने दिनों तक जिंदा रहना है। जब मैं सुबह जागता हूँ तो एक नया दिन मेरे सामने होता है। जब मैं 17 साल का था तब किसी ने मुझे बताया था कि हर दिन को जीवन के अंतिम दिन की तरह जीना चाहिए। ऐसा मानने पर एक दिन यह बात जरूर सही साबित होगी।
- मैं अभी जिस मुकाम पर हूँ, मैं यँ ही कोई काम नहीं कर सकता; मगर मैं हमेशा से ऐसा ही रहा हूँ, क्योंकि मैंने कभी पैसे की परवाह नहीं की है। मैं यही कहने की कोशिश कर रहा हूँ कि आज भी मैं वैसा ही महसूस करता हूँ, जैसा 17 साल की उम्र में महसूस करता था।
- एक ऐसी घड़ी आती है जब किसी कलाकार को अपनी पहचान के बारे में सोचना पड़ता है। अगर कलाकार भविष्य को लेकर जोखिम उठाते हैं तो भी वे कलाकार ही रहते हैं। डायकोन और पिकासो ने हमेशा भविष्य को लेकर जोखिम उठाया। ऐपल की परिघटना मेरे लिए वैसी ही रही है।
- यह सच है कि मैं असफल नहीं होना चाहता। हो सकता है, मुझे कई बुरे अनुभवों से होकर गुजरना पड़ा हो; मगर 'हाँ' कहने से पहले मैं काफी सोच-विचार करना जरूरी समझता हूँ। मैंने तय किया कि मुझे कोई परवाह नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यही वह काम है, जो मैं करना चाहता हूँ।
- अगर मैं पुरजोर कोशिश करके भी नाकाम होता हूँ तो मुझे तसल्ली होगी कि मेरी कोशिश में कोई कसर बाकी नहीं थी।

- जब आपको कुछ खोने का डर होता है, तभी आपका संकल्प डगमगाने लगता है।
- ‘होल अर्थ कैटलॉग’ के अंतिम संस्करण में पिछले पन्ने पर एक ग्रामीण इलाके की सड़क की तसवीर प्रकाशित हुई थी। ओरेगन की यात्रा करते समय आपको वह सड़क मिल सकती है। यह एक खूबसूरत तसवीर थी और उसके नीचे जो शीर्षक छपा था, उसने मुझे काफी प्रभावित किया था, ‘स्टे हंग्री स्टे फुलिश!’ यह कोई विज्ञापन नहीं था, बल्कि स्टीवर्ट ब्रांड का महान् संदेश था। यह एक सूक्ति थी—‘स्टे हंग्री, स्टे फुलिश।’



- आपका अपना अलग व्यक्तित्व होता है और आपको दूसरों के साथ काम करना पड़ता है। जब आप दूसरों को प्रेरित करते हैं तो लोगों पर आपका प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के तौर पर, डिज्नी में मैं लोगों को कहते हुए सुनता हूँ कि वाल्ट के साथ कार्य करने का आनंद ही अलग था। सभी वाल्ट को चाहते थे। मैं जानता हूँ कि पिक्सर में भी लोग उसी तरह जॉन लेसेस्टर के बारे में बात करेंगे। कौन जानता है, किसी दिन कोई मेरे बारे में भी इसी तरह की बातें कहे। मैं इसके बारे में नहीं जानता।
- मुझे लगता है, जीवन में कई काम न करने पर आपको अफसोस होता है। जैसे आपको कोई लड़की पसंद थी, मगर आप उससे अपने साथ डांस करने के लिए नहीं कह पाए।
- व्यापार में, आज मैं जितना जानता हूँ, अगर पहले जानता होता तो कुछ कार्यों को मैं अधिक बेहतरीन तरीके से कर सकता था; लेकिन ऐसा भी हो सकता था कि मैं कुछ कार्यों को बुरे तरीके से करता।
- वर्तमान में जीना ही सबसे महत्वपूर्ण बात है।
- छुट्टियों के दौरान मैंने नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिकशास्त्री रिचर्ड फेनमैन की पुस्तक पढ़ी। उन्हें कैसर था। इस पुस्तक में उन्होंने मृत्यु से पहले अपनी आखिरी शल्यक्रिया का वर्णन किया है। डॉक्टर ने उनसे कहा था, “रिचर्ड, मैं इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं हूँ कि तुम जिंदा बचोगे या नहीं।” तब फेनमैन ने डॉक्टर से अनुरोध किया कि अगर उसे लगे फेनमैन की जान बचनेवाली नहीं है तो एनेस्थेटिक हटा लिया जाए, ऐसा उन्होंने क्यों कहा? फेनमैन का कहना था, “मैं महसूस करना चाहता हूँ कि मृत्यु कैसी होती है।”
- वर्तमान का सामना करने का यह बेहतरीन तरीका है—आपके साथ अभी जो हो रहा है, उसे स्वीकार करना और उसके प्रति उत्सुक बने रहना, भले ही आपके साथ बुरा ही क्यों नहीं हो रहा हो।
- ग्राहक नहीं जानते कि प्रौद्योगिकी उनके लिए क्या कर सकती है। जो चीजें उन्हें असंभव लगती हैं, वे वैसी चीजों की माँग आपसे नहीं करेंगे। मगर प्रौद्योगिकी ग्राहकों से आगे निकल सकती है। अगर आप किसी ऐसे उत्पाद का उल्लेख करेंगे तो ग्राहक कहेंगे, “जरूर, मैं उसे खरीदूँगा। क्या आपका कहना है कि वह चीज भी मैं खरीद सकता हूँ?”



स्टीव जॉब्स और टाइगर वुड्स

- यह कहना तर्कसंगत लगता है कि ग्राहकों की इच्छा पूछकर उत्पाद दिया जाए। मगर ऐसा कम ही होता है जब ग्राहक को अपनी जरूरत का सही-सही अंदाजा होता है।
- आप पूछ सकते हैं कि गुणवत्ता से संबंधित फैसले किस तरह लिये जाते हैं? ऐसी कई चीजें हैं। उदाहरण के तौर पर, उच्च प्रदर्शन करनेवाले वाहन, जिनके निर्माण के आरंभिक चरण से ही गुणवत्ता का ध्यान रखा जाता है, और मुझे लगता है कि इलेक्ट्रॉनिक्स का क्षेत्र भी गुणवत्ता पर आधारित होता है।
- मैंने देखा है कि श्रेष्ठ कंपनियाँ गुणवत्ता पर विशेष रूप से ध्यान देती हैं। वे उत्पाद को विश्वसनीय बनाने के लिए अधिक समय लगाती हैं। इसका सकारात्मक परिणाम कंपनियों को प्राप्त होता है।
- उत्पाद की गुणवत्ता के जरिए कंपनियाँ अपनी विशिष्टता को भी दुनिया के सामने प्रदर्शित कर पाती हैं। गुणवत्ता से पता चल जाता है कि इंजीनियरिंग के क्षेत्र में किस तरह का अनुशासन बरता गया है और कंपनी का संचालन किन नीतियों के आधार पर किया जा रहा है।



स्टीव जॉब्स और अर्नोल्ड श्वेजनाइजर

• अगर हमारे कर्मचारी ऐसे वातावरण में कार्य कर रहे हैं, जहाँ उत्कृष्टता की अपेक्षा की जाती है तो वे स्व-प्रेरणा से उत्कृष्ट कार्य कर सकते हैं। मैं एक ऐसे वातावरण की बात कर रहा हूँ, जहाँ उत्कृष्टता झलकती है और जहाँ की कार्य-संस्कृति में उत्कृष्टता का सम्मान किया जाता है। अगर ऐसा वातावरण हो तो आपको किसी से उत्कृष्ट कार्य करने के लिए कहने की जरूरत नहीं पड़ती। लोग अपने आसपास के वातावरण से ही इस बात को समझ जाते हैं।

• ‘नेक्स्ट’ की जो संस्कृति है, उसमें स्वतंत्र सोच की खास अहमियत है और अक्सर हमारे बीच रचनात्मक असहमतियाँ पैदा होती हैं। ऐसा हरेक स्तर पर होता है। किसी भी नए आदमी को यह समझने में ज्यादा वक्त नहीं लगता कि कोई भी व्यक्ति खुलकर मेरे सामने अपनी असहमति व्यक्त कर सकता है। इसका मतलब यह नहीं कि मैं उन लोगों से असहमत नहीं हो सकता, बल्कि इसका अर्थ है कि हमेशा श्रेष्ठ विचार की जीत होती है।

• हमारा उद्देश्य है श्रेष्ठता को हासिल करना। इस बात पर अधिक गौर करने की जरूरत नहीं है कि मूल विचार किसका था। श्रेष्ठ विचार को चुनना है और उस पर अमल करना है।

• किसी ने एक बार मुझे कहा था, “शीर्ष स्तर का सही प्रबंधन करने पर निचले स्तर का प्रबंधन अपने आप हो जाता है।” यह शीर्ष स्तर क्या होता है? अगर यही बात है तो हम कार्य का आरंभ इस तरह क्यों करते हैं? हमारी रणनीति क्या होती है? ग्राहकों की क्या राय होती है? हम उनकी राय पर कितना ध्यान देते हैं? क्या हमारे पास उम्दा उत्पाद और उम्दा लोग हैं? ये ऐसे सवाल हैं, जिन पर आपको सबसे अधिक गौर करना चाहिए।

• अगर आप एक श्रेष्ठ कंपनी का संचालन करना चाहते हैं तो आपको उसी सोच का इस्तेमाल हर मामले में करना होगा, जिस सोच का इस्तेमाल उत्पाद बनाने के लिए किया जाता है। उदाहरण के तौर पर मैं उत्पादन का उल्लेख करना चाहता हूँ, जिसकी तरफ वैसी ही सोच और रणनीति की जरूरत होती है, जैसी उत्पाद के लिए जरूरी होती है।

• कुछ कंपनियाँ उत्पादन को नापसंद करती हैं तो कुछ कंपनियाँ इसके प्रति उदासीनता बरतती हैं। मगर हम इसे सुनहरे अवसर के रूप में देखते हैं, जिसके जरिए प्रतिस्पर्धी लाभ हासिल किया जा सकता है। '80 के दशक में जापान की यात्रा करने के बाद से मेरी यही राय रही है।

• बिक्री और मार्केटिंग के लिए भी ठोस रणनीति की जरूरत होती है। आपके पास बिक्री और मार्केटिंग का ऐसा संगठन होना चाहिए, जो ग्राहकों से महज ऑर्डर लेने की जगह ग्राहकों को जागरूक बना सके।

• हमारी यह बुनियादी मान्यता रही है कि किसी उत्पाद को बार-बार ठीक करने की जगह पहली बार ही दोष-मुक्त रूप से प्रस्तुत किया जाए। टालने के रवैए का खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। मेरे कारोबारी जीवन का यही अनुभव रहा है।

• आप सर्वश्रेष्ठ उत्पाद बनाने की कोशिश करें और तब तक प्रयत्न न छोड़ें जब तक आपको तसल्ली न हो जाए। लेकिन वैचारिक रूप से चाहे जितनी दृढ़ता रहे, मगर आपके उत्पाद को जब लोगों के सामने प्रदर्शित किया जा रहा हो, उससे पहले आपके दिल की धड़कन का तेज हो जाना स्वाभाविक है।

• मेरा मानना है कि जब आप प्रयत्न करते हुए कोई अच्छी चीज बनाते हैं तो उसके बाद आपको कोई और विलक्षण चीज बनाने में जुट जाना चाहिए।

• एक ही जगह ठिठके रहने की जगह अगले लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

• मैं समझ नहीं पाता कि ये वैली क्या है? मैं ऐपल में काम करता हूँ। मैं वहाँ घंटों काम करता रहता हूँ और किसी दूसरी जगह नहीं जाता, इसलिए मैं सिलिकन वैली के बारे में ज्यादा नहीं जानता। मुझे ऐसा लगता है कि कुछ लोगों का एक समूह यहाँ है, जो लोग कलाकार हैं और जो किसी और चीज की अपेक्षा अपनी कला पर सबसे ज्यादा ध्यान देते हैं।

• एक प्रेमिका की खोज करना महत्वपूर्ण होता है, शानदार व्यंजन तैयार करना महत्वपूर्ण होता है, नौसेना की नौकरी कर लेना महत्वपूर्ण होता है —और भी कई महत्वपूर्ण बातें हो सकती हैं। इन कलाकारों की कार्यशैली पर गौर कीजिए। वे दुनिया के ‘संतुलित’ लोगों की श्रेणी में शामिल नहीं किए जा सकते। वे अपने काम में डूबे रहनेवाले ऐसे लोग हैं, जो दूसरी बातों की परवाह नहीं करते। मगर इनमें से ज्यादातर लोगों ने काफी सोच-समझकर जीवन के इस रास्ते को चुना है।

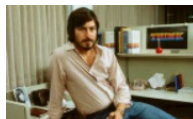
- मैं अर्द्ध-प्रतिभावाला एक कवि भी बन सकता था। इतेफाक से मैं इस क्षेत्र में चला आया।
- सिलिकन वैली के लोगों को 'सनकी' कहकर पुकारना उचित नहीं है। '60 के दशक में ऐसे लोग थे, जिन्हें सनकी कहा जा सकता था और '70 के दशक के पूर्वार्द्ध में भी ऐसे लोग थे। मगर आज के लोग वैसे नहीं हैं। ये वैसे लोग हैं, जो अगर '60 के दशक में रहते तो कवि बन गए होते। वे कंप्यूटर को महज भाषा का माध्यम मानने की जगह अभिव्यक्ति का माध्यम मान रहे हैं। वे कंप्यूटर को गणितज्ञ या समाज-शास्त्री के माध्यम के रूप में नहीं देख रहे हैं।
- भले ही कुछ लोग उम्दा उत्पाद बना लेते हैं, पर अगर उनकी कंपनी कमजोर या अस्थिर होती है तो अधिक सफलता नहीं मिल पाती। याद रखें, इस मामले में हैवलेट-पैकर्ड आदर्श कंपनी रही है। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि उन्होंने सही मायने में एक कंपनी का निर्माण किया। किसी को याद नहीं कि उस कंपनी का पहला उत्पाद फ्रीक्वेंसी काउंटर था। न ही पहले ऑडियो ऑस्सीलेटर की याद है। वह कंपनी इतने सारे उत्पाद बेचती है कि किसी उत्पाद विशेष के साथ उस कंपनी के नाम को जोड़कर नहीं देखा जा सकता। उन्होंने एक कंपनी का निर्माण किया और 35-40 सालों तक इस सिद्धांत का पालन किया, इसीलिए वह कंपनी एक उदाहरण बन पाई।
- हैवलेट-पैकर्ड ने जिस सिद्धांत को अपनाया, उसी के आधार पर वैली की तसवीर मुकम्मल हो पाई।
- एक बात को हमेशा याद रखें कि हमने आदर्शवादी नजरिए के साथ शुरुआत की है—हम जो भी करेंगे, उच्च गुणवत्ता का ध्यान रखेंगे और किसी तरह की त्रुटि नहीं रहने देंगे।
- मैं हमेशा एक छोटे से बॉक्स का निर्माण करने के बारे में सोचता रहा हूँ, एक किस्म का ऐसा स्लेट, जिसे आप अपने साथ लेकर चल सकें।
- आई पॉड ऐपल का ऐसा उत्पाद है, जैसा उत्पाद उसने पहले कभी नहीं बनाया था।
- ऐसे कई उदाहरण हैं, जब उम्दा उत्पाद की जीत नहीं हो पाती है। विंडोज का उल्लेख इस सिलसिले में किया जा सकता है। लेकिन ऐसे भी उदाहरण हैं जब उम्दा उत्पादों की जीत होती है। आई पॉड इस बात का अहम उदाहरण है।
- मेरी जिंदगी सहज-सरल है। मेरे पास परिवार है, ऐपल और पिक्सर है। इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं करता।
- जब आप किसी समस्या का हल ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं तो पहला हल हमेशा जटिल किस्म का होता है और ज्यादातर लोग तब प्रयास करना छोड़ देते हैं।
- अगर समस्या के साथ जुझना जारी रखा जाए और प्याज के छिलके उतारने की तरह उसका विश्लेषण किया जाए तो व्यावहारिक और सरल समाधान को ढूँढ़ा जा सकता है।
- ज्यादातर लोग हल ढूँढ़ने के लिए पर्याप्त समय या ऊर्जा खर्च करना नहीं चाहते। हम मानते हैं कि ग्राहक समझदार होते हैं और वे ऐसे उत्पाद को अपनाते हैं जिस उत्पाद का निर्माण काफी सोच-समझकर किया गया हो।
- मैं खुशकिस्मत हूँ कि जब मैं बड़ा हो रहा था तब संगीत की अहमियत को समझ जाता था। तब संगीत सिर्फ पृष्ठभूमि में मौजूद नहीं था। संगीत का असर छोटे बच्चों पर भी पड़ता था। इससे सचमुच काफी फर्क पड़ता था। मुझे लगता है कि संगीत की अहमियत कुछ समय के लिए धुँधली हो गई थी।
- आई पॉड ने संगीत को सार्थक तरीके से लोगों की जिंदगी का हिस्सा बना दिया है।
- संगीत हमारे भीतर रचा-बसा होता है; मगर कई बार महीनों तक लोगों को संगीत सुने बगैर रहना पड़ सकता है। आई पॉड ने लाखों लोगों की जिंदगी बदल डाली है और यह सोचकर मुझे सचमुच तसल्ली मिलती है, क्योंकि मैं संगीत को आत्मा के लिए उपयोगी मानता हूँ।
- अगर ऐपल ऐसी जगह बन जाए, जहाँ कंप्यूटर को महज उपभोक्ताओं का उत्पाद समझा जाए और किसी तरह का रोमांच बचा नहीं रह जाए और लोग भूल जाएँ कि कंप्यूटर एक विलक्षण अन्वेषण है, तो मैं समझूँगा कि मैंने ऐपल को खो दिया है। लेकिन अगर मैं हजारों मील दूर रहूँ और लोग पहले जैसी अनुभूति को बनाए रखें और अधिक उन्नत कंप्यूटर के निर्माण में जुटे रहें तो मैं समझूँगा कि मेरे ध्येय को जीवित रखा गया है।
- मैं अपनी तरफ देखता हूँ और अपने आपसे पूछता हूँ, “मैं कौन सा काम अच्छी तरह कर सकता हूँ और किस काम को करते हुए मुझे खुशी मिलती है?” मुझे लगता है, नए उत्पादों की खोज करना मुझे अच्छा लगता है।
- यह सच है कि विभिन्न उद्योगों में कई तरह के आविष्कार करनेवाले व्यक्ति अत्यंत दक्ष नहीं भी हो सकते हैं या बड़े उपक्रम को संचालित करनेवाले व्यक्ति नहीं भी हो सकते हैं। 'पोलराइड' के डॉ. लैंड इस बात के सटीक उदाहरण हैं।
- मैं प्रतिभाशाली लोगों का समूह जुटाने और उनके साथ कार्य करने में माहिर हूँ। ऐपल जिस दिशा में जा रही है, मैं उसका आदर करता हूँ।
- निजी तौर पर मैं नई चीजें बनाने में विश्वास करता हूँ और जहाँ मैं नई चीजें नहीं बना सकता तो मैं हर हाल में नई चीजें बनाने के विकल्प की

तलाश करूँगा।

- मेरे कंधे पर कोई अजीब चिप नहीं लगा हुआ है, जिसके जरिए मैं खुद के बारे में या दूसरे के बारे में कुछ सिद्ध करना नहीं चाहता। बाहरी दुनिया सफलता की तरफ अलग नजरिए से देखती है; जबकि मेरा नजरिया अलग हो सकता है।
- मेरा नजरिया है कि जहाँ जो भी कंप्यूटर बने, वह कम-से-कम उत्कृष्टता के मामले में मैकिंटोश के समान हो।
- ऐपल सिलिकन वैली की वैसी आदर्श कंपनी रही है, जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं। हमने एक गैराज से शुरुआत की थी। वोज के साथ मैं सिलिकन वैली में बड़ा हुआ।
- हमारे लिए आदर्श हैवलेट-पैकड थी। इसी तर्ज पर हम लोग सोचते थे कि हैवलेट-पैकड की तरह जॉन्स-वोजनियाक की भी एक कंपनी बनेगी।
- मैं नहीं मानता कि जीवन में मेरी भूमिका बड़े संगठनों का संचालन करना और वेतन-वृद्धि के फैसले लेने तक सीमित है।
- मैं कोई 62 साल का राजनेता नहीं हूँ, जिसने समूची दुनिया घूम ली हो। लेकिन इतना तो तय है कि जब मैं 25 साल का था तब ऐसी स्थिति थी। अगर तब मैं आज की तरह जानकार होता तो बेहतर फैसले ले सकता था। मैं यह भी जानता हूँ कि 35 साल का हो जाने पर वर्तमान के बारे में भी मैं इसी तरह सोचूँगा। मैं अपने निष्कर्षों पर अटूट विश्वास रख सकता हूँ। हो सकता है कि मैं अपने आपको पसंद करता हूँ और बदलाव को लेकर ज्यादा परेशान नहीं होता।
- जैसाकि आप जानते होंगे, मेरा जीवन-दर्शन हमेशा अत्यंत सरल रहा है। इसमें एक किस्म का प्रवाह रहा है, जिसके सहारे मैं आगे बढ़ता रहा हूँ।
- मेरा दर्शन है कि हर चीज की शुरुआत एक महान् उत्पाद से होती है। इसलिए स्वाभाविक रूप से मैं ग्राहकों की राय सुनने में विश्वास रखता हूँ। मगर ग्राहक आपको यह नहीं बता सकते कि अगले साल क्या धमाका होनेवाला है, जिस धमाके के चलते समूचे उद्योग की तसवीर बदलनेवाली है।
- आपको ग्राहकों की बातें ध्यान से सुननी होंगी, लेकिन उसके बाद आपको खुद विश्लेषण करना होगा, ऐसे लोगों के साथ विचार-विमर्श करना होगा, जो सही अर्थों में प्रौद्योगिकी को समझते हैं, जो ग्राहकों के हितों की परवाह करते हैं, और जो अगले धमाके की कल्पना भी करते हैं। और यही मेरा नजरिया है कि हर चीज की शुरुआत एक महान् उत्पाद से होती है। यही उसका प्रवाह होता है।
- मुझ पर आरोप लगाया जाता रहा है कि मैं ग्राहकों की परवाह नहीं करता और मैं स्वीकार करता हूँ कि कुछ हद तक इस बात में दम भी है।
- मैंने सोचा था कि मेरी जिंदगी इस तरह आगे बढ़ेगी कि मैं ऐपल से आवाजाही कर पाऊँगा। मैं वहाँ कुछ दिनों तक रहूँगा, फिर बाहर निकलकर कुछ नई चीज बनाऊँगा; लेकिन ऐपल से जुड़ा रहूँगा। फिर ऐपल में लौटकर लंबे अरसे तक बना रहूँगा और फिर बाहर निकलकर काम करूँगा। मगर वैसा हो नहीं पा रहा है। मैंने अपनी जिंदगी के 10 बेहतरीन साल गुजारे हैं और मुझे किसी भी बात का अफसोस नहीं है।



- ऐपल में लोग 18 घंटे तक काम करते हैं। हम भिन्न प्रवृत्ति के लोगों को अपने साथ रखते हैं। उनमें ऐसे भी लोग हैं, जो 5 या 10 साल तक इस बात के लिए इंतजार नहीं करना चाहते कि कोई उनको लेकर जोखिम उठाएगा। ऐसे लोग, जो अपनी प्रतिभा के जरिए संसार में अपनी जगह बनाना चाहते हैं।
- हम जानते हैं कि हम लोग कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। हम ऐपल में शुरुआत से हैं और चीजों की दिशा तय कर सकते हैं। यहाँ मौजूद हर आदमी को इस बात का अहसास रहता है कि वर्तमान का यह पल ऐसा है, जब हम लोग भविष्य को प्रभावित कर सकते हैं।
- कुछ लोग कह रहे हैं कि वे उत्पादकता को बढ़ाने के लिए अमेरिका के प्रत्येक डेस्क पर आई.बी.एम. पी.सी. को रख देना चाहते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़नेवाला है। इस समय प्रयोग की निर्देशावली को पढ़ पाना कठिन काम है। अत्यंत लोकप्रिय वर्ड प्रोसेसिंग प्रोग्राम वर्डस्टार का मैनुअल 400 पन्नों का है। एक उपन्यास लिखने के लिए आपको एक उपन्यास पढ़ना पड़ेगा, जो आम जनता के लिए रहस्यपूर्ण उपन्यास पढ़ने के समान है। इस तरह लोग कुछ समझ नहीं पाएँगे। इसी उलझन को सुलझाने के लिए मैकिंटोश का निर्माण किया गया है।



- मैंने एक वीडियो टेप देखा है, जिसे देखने की हमने अपेक्षा नहीं की थी। इसे सेना प्रमुख ने तैयार करवाया है। इस टेप को देखकर हमें पता चला कि कुछ वर्ष पहले तक यूरोप के प्रत्येक परमाणु अस्त्र को, जहाँ अमेरिकी कर्मी तैनात हैं, ऐपल-2 कंप्यूटर के जरिए निशाने पर रखा गया था। हम सेना को कंप्यूटर नहीं बेचते, मगर डीलरों के जरिए कंप्यूटर वहाँ पहुँच गए।
- यह सोचकर अच्छा नहीं लगता कि हमारे कंप्यूटर का इस्तेमाल यूरोप के परमाणु अस्त्रों को निशाना बनाने के लिए किया जा रहा है। अच्छी बात यही है कि उन कंप्यूटरों में टी.आई.एस. 80 का प्रावधान नहीं है। इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद!
- मैक ग्रुप के बनाए मैक और आई.बी.एम. के बनाए पी.सी. जूनियर में क्या फर्क है? मैं मानता हूँ कि मैक की धुआँधार बिक्री होगी, जबकि मैक का निर्माण हमने दूसरों के नजरिए से नहीं किया है। इसका निर्माण हमने अपने नजरिए से किया है। हम लोगों ने सामूहिक रूप से तय किया कि यह उत्पाद उत्कृष्ट होगा या नहीं। इसके लिए हम बाहर नहीं गए और न ही बाजार का अध्ययन किया। हम तो सिर्फ उम्दा उत्पाद का निर्माण करना चाहते थे।
- अगर आप एक बढ़ई हैं और एक खूबसूरत ड्रॉअर का निर्माण कर रहे हैं तो आप पिछले हिस्से में प्लाईवुड का इस्तेमाल हरगिज नहीं करना चाहेंगे, भले ही पिछला हिस्सा दीवार से सटा रहेगा और दिखाई नहीं देगा। इसकी बजाय आप लकड़ी के मजबूत टुकड़े का ही इस्तेमाल करेंगे। आपको रात में सुकून की नींद आ सके, इसके लिए हमेशा गुणवत्ता को प्राथमिकता देना जरूरी है।
- एक महान् उत्पाद बनाने के लिए उसकी प्रक्रिया के साथ कई बातें जुड़ी रहती हैं। आप किस तरह सीखते हैं, किस तरह नए विचारों को ग्रहण करते हैं और पुराने विचारों को छोड़ते हैं। जिन लोगों ने मैक बनाया, उन्हें लगभग इसी तरह की प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ा।
- मेरे पिता एक मैकेनिक थे और उनके हाथों में जादू था। वे किसी भी चीज को ठीक कर सकते थे और उसे उपयोगी बना सकते थे, किसी भी चीज को खोलकर नए सिरे से जोड़ सकते थे। यह मेरे लिए पहला अनुभव था। मैं इलेक्ट्रॉनिक्स की तरफ आकर्षित होता चला गया और पिता मुझे चीजों को खोलकर नए सिरे से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करने लगे।



- स्कूल जाने से पहले मेरी माँ ने मुझे पढ़ना सिखाया, इसीलिए स्कूल में मैं ऊब जाता था और इस तरह मैं बिगड़ैल लड़का बन गया था। थर्ड ग्रेड में आप मुझे देख पाते, तब मैंने शिक्षकों की नाक में दम कर रखा था। हम कक्षा में सॉप छोड़ देते थे या आतिशबाजी करते थे।
- चौथी ग्रेड में हालात में बदलाव आया। मेरे जीवन में आनेवाली उस संत महिला का नाम इमोजेन हिल था, जो चौथी ग्रेड की शिक्षिका थीं। एक महीने में ही उन्होंने मेरी समस्या को समझ लिया और मेरे भीतर सीखने की ललक पैदा की। मैंने उस वर्ष स्कूल में जितना सीखा उतना किसी और वर्ष में नहीं।
- वोज और मेरे बीच काफी फर्क है, मगर कई मामलों में हमारे बीच काफी समानता है और इस तरह हम दोनों एक-दूसरे के काफी करीब हैं। हम दोनों अलग-अलग नक्शों की तरह हैं, जो बीच-बीच में एक-दूसरे के नजदीक आ जाते हैं। यह केवल कंप्यूटर का ही मामला नहीं है। हम दोनों को बॉब डायलन की कविता पसंद है और हम अकसर इसकी चर्चा करते रहे हैं।
- यह कैलिफोर्निया है। यहाँ आप स्टेनफोर्ड का ताजा बना हुआ एल.एस.डी. पा सकते हैं, अपनी माशूका के साथ समुद्र-तट पर रात गुजार सकते हैं। कैलिफोर्निया में एक किस्म की प्रयोगधर्मिता रही है और एक किस्म का खुलापन रहा है—नई संभावनाओं के प्रति खुलापन रहा है।
- डायलन के अलावा मैं पूर्व के रहस्यवाद में दिलचस्पी रखता था, जिसका प्रभाव उसी समय नजर आने लगा था।
- जब मैं ऑरिगन के रीड कॉलेज में पढ़ रहा था तब टिमोथी लैरी, रिचर्ड एलपर्ट और गैरी स्नीडर जैसे बुद्धिजीवियों का व्याख्यान अकसर होता रहता था और वे जीवन की सच्चाई की पड़ताल करते थे। उस जमाने में इस देश के सभी कॉलेजी विद्यार्थियों ने 'बी हेयर नाऊ' और 'डाइट फॉर ए स्माल प्लानेट' जैसी किताबें पढ़ी थीं।
- मैं साल भर में 1,00,000 कंप्यूटर बेचने की कल्पना करता रहा हूँ; मगर यह मेरी कल्पना ही रही है। जब वास्तव में बिक्री का नतीजा सामने आता है तो वह बिलकुल अलग होता है। हम कहते हैं कि यह सच्चाई नहीं है, इसे तो कुछ और होना था। अगले वर्ष मेरे कार्यकाल के 10 वर्ष पूरे हो जाएँगे। मैंने अपने जीवन में कोई काम एक साल से ज्यादा समय तक नहीं किया है।
- जब हमने ऐपल की शुरुआत की, तब मेरे लिए छह महीने का वक्त काफी लंबा वक्त था। जब से मैंने होश सँभाला, मेरी जिंदगी इसी तरह के ढर्रे पर चलती रही है। हर साल इतने अनुभव मिले हैं, इतनी समस्याएँ सामने आई हैं, इतनी सफलताएँ मिली हैं, इतने सारे मानवीय अनुभव प्राप्त हुए हैं कि ऐपल में गुजरा एक-एक वर्ष एक-एक जीवनकाल के बराबर रहा है। इस तरह मेरे लिए 10 वर्ष दस जीवनकाल के समान रहे हैं।

- मुझे लगता है कि अनाथ व्यक्तियों के मन में अपनी जड़ की तलाश करने की स्वाभाविक उत्सुकता रहती है, लेकिन मैं मूल रूप से माहौल पर भरोसा करता रहा हूँ। मुझे लगता है कि जिस तरह आपका पालन-पोषण किया जाता है और जिस तरह के मूल्य आपको सिखाए जाते हैं, उसी के आधार पर आपके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। मगर कुछ चीजें होती हैं, जो अलग होती हैं। वैसी चीजों के प्रति कौतूहल का भाव होना मैं स्वाभाविक समझता हूँ।
- मेरी जिंदगी की प्रिय चीजें किताबें, संगीत आदि हैं। जो चीजें मुझे प्रिय हैं, उनके लिए धन खर्च करने की जरूरत नहीं है।
- यह स्पष्ट है कि हमारे पास जो सबसे अनमोल संसाधन है, वह समय है। इसकी कीमत को चुकाते हुए निजी जिंदगी के लिए मैं अधिक समय निकाल नहीं पाता।
- मेरे पास प्रेम-संबंध बनाने के लिए या इटली के छोटे नगरों में घूमते हुए कैफे में बैठकर टमाटर और मोजारेला सलाद खाने के लिए समय नहीं है। अकसर मैं समय बचाने के लिए कुछ धन खर्च करता हूँ। बस, इतनी ही बात है।
- मैंने न्यूयॉर्क में एक अपार्टमेंट खरीदा है, क्योंकि मैं उस शहर से प्यार करता हूँ। मैं अपने आपको शिक्षित करने का प्रयास कर रहा हूँ, क्योंकि मैं कैलिफोर्निया के एक छोटे शहर में बड़ा हुआ और बड़े शहर के आभिजात्य और संस्कृति से दूर रहा हूँ। मैं इसे अपनी शिक्षा का एक हिस्सा समझता हूँ।
- आप जानते हैं कि ऐपल में ऐसे कई लोग हैं, जो अपनी मरजी से कोई भी चीज खरीद सकते हैं और अपनी ख्वाहिश पूरी कर सकते हैं। इसके बावजूद वे धनवान् बने रह सकते हैं।
- जब कंपनियाँ अरबों डॉलर की सत्ता बनने लगती हैं, अकसर अपनी दृष्टि को खो बैठती हैं।
- कंपनी का संचालन करनेवाले और कर्मचारियों के बीच मध्यम स्तर के तंत्र का विकास कर लिया जाता है, तब लोगों में उत्पाद के प्रति जुनून का भाव बचा नहीं रह जाता।
- रचनात्मक लोगों को पाँच अधिकारियों से अपने आविष्कार की परियोजना के लिए इजाजत लेनी पड़ती है।
- वास्तव में लोग समझना नहीं चाहते कि कंप्यूटर किस तरह काम करता है। अधिकतर लोगों को पता नहीं है कि किस तरह ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन काम करता है, जबकि उन लोगों को कार चलाना अच्छी तरह आता है। कार चलाने के लिए आपको भौतिकशास्त्र पढ़कर गति के नियम को सीखने की जरूरत नहीं होती, उसी तरह मैकिंतोश का प्रयोग करने के लिए आपको किसी नियम को सीखने की जरूरत नहीं है।
- प्रचार के जरिए लोगों को जागरूक बनाया जा सकता है। इस धंधे में आप लोगों को बुद्धि नहीं बना सकते।
- उत्पाद अपनी खूबी का बयान खुद ही कर देता है।
- उम्र बढ़ने के साथ-साथ लोगों की जड़ता बढ़ती जाती है। हमारा दिमाग इलेक्ट्रॉनिक रासायनिक कंप्यूटर की तरह होता है। आपके विचारों की परतें आपके दिमाग में एकत्र होती रहती हैं। इन्हें हम रासायनिक परतें कह सकते हैं। ज्यादातर मामलों में लोग उन परतों के अधीन होकर रह जाते हैं।
- जैसे पुराने रिकॉर्ड में धूल जम जाती है, उसी तरह लोग उन परतों से कभी मुक्त नहीं हो पाते। ऐसे कुछ ही लोग होते हैं, जो उस धूल को झाड़ने में कामयाब होते हैं और चीजों की तरफ अलग नजरिए से देख पाते हैं।
- आप उम्र के तीसवें या चालीसवें साल में किसी कलाकार को जोरदार कृति बनाते हुए कम ही देख सकते हैं। बेशक कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो उम्र भर जिज्ञासु बने रहते हैं। उनके भीतर एक बच्चे जैसी उत्सुकता बची रहती है; मगर ऐसे लोग कम ही होते हैं।
- डॉ. एडविन लैंड एक बेचैन रूह का नाम था। उन्होंने हार्वर्ड की पढ़ाई बीच में छोड़ दी और 'पोलाराइड' की स्थापना की। वे हमारे युग के महान् आविष्कारकों में से एक थे। उन्होंने कला, विज्ञान व व्यवसाय के अंतःसंबंध को समझा था और एक मजबूत संगठन का निर्माण किया था। 'पोलाराइड' ने उनकी सोच को कई वर्षों तक अपनाया। मगर डॉ. लैंड जैसे महान् आविष्कारक से अपनी ही कंपनी को छोड़कर जाने के लिए कहा गया—ऐसी अजीब बात मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। उन्हें हम एक 'राष्ट्रीय निधि' कह सकते हैं। पता नहीं लोग उन्हें एक आदर्श नायक क्यों नहीं मानते? अंतरिक्ष यात्री या फुटबॉल खिलाड़ी बनने की जगह डॉ. लैंड बनना अधिक महत्वपूर्ण है।



- मेरा मानना है कि मृत्यु जीवन की सबसे विलक्षण खोज है। यह पुरानी चीजों की प्रणाली को मिटा देती है, जो चीजें अप्रासंगिक हो चुकी होती

हैं। मैं इसे ऐपल की वास्तविक चुनौती मानता हूँ। अगर कोई दो नौजवान कोई उपकरण लेकर हमारे पास आएँ तो क्या हम कह पाएँगे—बहुत खूब?

- क्या हम पुरानी चीजों को छोड़ने के लिए तैयार हैं? मेरा मानना है कि ऐसा हम बेहतर तरीके से कर सकते हैं, चूँकि हम इसको लेकर जागरूक बने हुए हैं।
- जितना धन आप जीवन भर में खर्च कर सकें, उससे ज्यादा धन का होना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मुझे लगता है कि जीते-जी सारा धन मुझे खर्च कर देना चाहिए।
- आप अपने पीछे ढेर सारी दौलत छोड़कर नहीं जा सकते। ऐसी दौलत आपके बच्चों को बरबाद कर सकती है। अगर आप बेऔलाद मरते हैं तो सारी दौलत सरकार के पास चली जाती है।
- सभी लोग यही सोचते हैं कि वे सरकार की तुलना में मानवता की सेवा के लिए धन का निवेश अधिक बेहतरीन तरीके से कर सकते हैं। चुनौती होती है कि जीते-जी धन का किस तरह इस्तेमाल किया जाए और किस तरह समाज को अपना धन लौटा दिया जाए?
- मैं यह समझता हूँ कि 1 डॉलर कमाने की जगह 1 डॉलर किसी को दे देना कठिन काम है।
- जब मैं कैपस में भाषण देता हूँ और छात्रों के मन में यह खयाल उभरते हुए पाता हूँ कि भाषण देनेवाला कोई करोड़पति है, तो मैं खुद को उम्रदराज महसूस करने लगता हूँ।
- जब मैं स्कूल में पढ़ने गया तब '60 के दशक के आदर्शवाद और व्यावहारिक उद्देश्यपूर्ण जीवन-दर्शन का गहरा प्रभाव नई पीढ़ी पर पड़ रहा था।
- आज के छात्र आदर्श के नजरिए में नहीं सोचते। वे अपने दैनंदिन जीवन में किसी सिद्धांत या दर्शन को हावी होने देना नहीं चाहते। वहीं '60 के दशक का प्रभाव अभी भी मेरे व्यक्तित्व में घुला हुआ है। उस समय के जितने लोगों को मैं जानता हूँ, सबके व्यक्तित्व में यह प्रभाव स्थायी रूप से महसूस किया जा सकता है।



- लोग अपने घर के लिए कंप्यूटर खरीदने के लिए इसलिए मजबूर हो जाएँगे, क्योंकि वे इसके जरिए राष्ट्रव्यापी संचार नेटवर्क से जुड़ पाएँगे। फोन की तरह जो महत्वपूर्ण परिघटना जनमानस के बीच घटनेवाली है, हम अभी उसके शुरुआती चरण में हैं।
- अभी तक हम लोग कंप्यूटर का इस्तेमाल आज्ञाकारी सेवक के रूप में करते रहे हैं। हम उससे कुछ करने के लिए कहते हैं। हम उससे स्प्रेड शीट तैयार करने के लिए कहते हैं, पत्र लिखने के लिए कहते हैं। आप पाते हैं कि सेवक के रूप में कंप्यूटर की दक्षता का कोई जवाब नहीं है। मगर अब कंप्यूटर मार्गदर्शक या एजेंट की भूमिका निभानेवाला है।
- मैं हमेशा ऐपल के साथ जुड़ा रहूँगा। मैंने यही चाहा है कि मेरे जीवन का सूत्र ऐपल के सूत्र से जुड़ा रहे। हो सकता है, बीच के कुछ सालों तक मैं वहाँ नहीं रहूँ; मगर मैं हमेशा वहीं लौटकर आऊँगा। ऐसा ही मैं करने की कोशिश करता रहा हूँ।
- मेरे बारे में यह बात याद रखने की जरूरत है कि मैं अभी भी एक छात्र हूँ। मैं अभी भी सीखने की कोशिश कर रहा हूँ।
- मेरी बातों को गंभीरता से लेने की जरूरत नहीं है।
- अगर आप रचनात्मक तरीके से अपना जीवन गुजारना चाहते हैं, एक कलाकार बनना चाहते हैं, तो आपको पीछे मुड़कर ज्यादा देखने की जरूरत नहीं।



- आपको अपने सारे कर्मों का दायित्व स्वीकार करना होगा।
- कंप्यूटर लोगों को कई तरह की पेचीदगियों से बचाता है। इसके अलावा यह लोगों की रचनात्मक प्रवृत्ति को भी उभारता है।
- याद रखना चाहिए कि कंप्यूटर एक उपकरण है। उपकरण से हमें अपने कार्य को बेहतर तरीके से निपटाने में मदद मिलती है।

• जापान सचमुच दिलचस्प है। कुछ लोग सोचते हैं कि वहाँ के लोग नकल उतारते हैं। मैं ऐसा नहीं सोचता। मेरा मानना है कि वे लोग किसी भी चीज का नए सिरे से आविष्कार करते हैं। जब उन्हें कोई नई चीज मिलती है तो वे उसका तब तक अध्ययन करते हैं जब तक उसके हरेक पहलू को समझ नहीं जाते। कई बार तो वे उत्पाद के मूल आविष्कारक से भी ज्यादा ज्ञान जुटा लेते हैं। समझ विकसित होने के बाद वे उसी उत्पाद को अधिक उन्नत तरीके से बनाते हैं। यह रणनीति तभी उपयोगी साबित होती है, जब बनाए जानेवाले उत्पाद में अधिक परिवर्तन न हो। स्टीरियो और ऑटोमोबाइल उद्योग का उल्लेख उदाहरण के तौर पर किया जा सकता है। जब उत्पाद में तेजी से बदलाव हो रहा हो, तब उनका काम मुश्किल हो जाता है, क्योंकि नए सिरे से किसी चीज को बनाने में कई वर्ष लग जाते हैं। जिस रफ्तार से पर्सनल कंप्यूटर की परिभाषा में परिवर्तन हो रहा है, जापानियों के लिए नकल उतारना आसान नहीं हो पाएगा।

• अगर कोई हमारे उत्पाद को अप्रासंगिक बना सकता है तो वह हम खुद ही कर सकते हैं।

• मैं आपको माइक्रोसॉफ्ट के बारे में अपनी राय बताना चाहता हूँ। वर्षों से मैक में कोई खास बदलाव नहीं आया है। इसमें महज 10 प्रतिशत बदलाव आया है। अचरज की बात है कि मैक की नकल बनाने में माइक्रोसॉफ्ट को 10 साल लग गए।

• मैं माइक्रोसॉफ्ट को '90 के दशक की आई.बी.एम. क्यों कहता हूँ? यह मुख्यधारा की कंपनी है, और जो लोग उत्पाद के बारे में अधिक सोच-विचार नहीं करना चाहते, वे उसके उत्पाद को खरीदते हैं। उसका बाजार पर ऐसा वर्चस्व बना हुआ है कि उससे उद्योग को क्षति पहुँच रही है। मैं इस बहस को तूल देना नहीं चाहता कि वह काबिल है या नहीं, दूसरे लोग इसका फैसला करेंगे। मैं तो एक दर्शक की तरह देख रहा हूँ और इसे देश-हित के विपरीत समझ रहा हूँ।

• लोग कई बार कहते हैं, 'आप दुनिया के सबसे तेजी से गतिशील उद्योग में काम करते हैं।' मैं ऐसा नहीं समझता।

• मुझे तो लगता है कि मैं धीमी गति के उद्योग में काम कर रहा हूँ। यहाँ कुछ करने के लिए काफी वक्त लगाने की जरूरत है।

• वेतनमान में वृद्धि के प्रति मेरे मन में आदर का भाव है और मैंने जिंदगी में ऐसी चीजों का अनुभव भी किया है; मगर मैं हमेशा अधिक क्रांतिकारी बदलावों की तरफ आकर्षित होता रहा हूँ। शायद इसलिए कि वैसे बदलाव कठिन होते हैं। वे भावनात्मक रूप से अत्यंत बोझिल साबित होते हैं। आपको ऐसे दौर से होकर गुजरना पड़ता है, जब सभी आपके नाकाम होने की बात कहने लगते हैं।

• जिस तरह आप जीवन में किसी से प्यार करते हैं, मैकिंटोश का निर्माण उसी तरह की प्रक्रिया थी और उसकी 1 करोड़ संतानें पैदा हुईं। यह सिलसिला थमनेवाला नहीं है। मगर अभी भी हर सुबह आप इसके लगाव को अपने भीतर महसूस कर सकते हैं।

• प्रौद्योगिकी कुछ नहीं है। सबसे अहम है लोगों के ऊपर आपका विश्वास, कि मूल रूप से वे भले और बुद्धिमान हैं। अगर आप उन्हें उपकरण देंगे तो वे उनका बेहतर तरीके से इस्तेमाल करेंगे।

• आपको महज उपकरण पर विश्वास नहीं होना चाहिए। वे तो केवल यंत्र होते हैं। वे काम करते हैं या नहीं करते हैं। असली चीज है लोगों के ऊपर आपका विश्वास। हाँ, यह सच है कि मैं अभी भी आशावादी हूँ। यह सच है कि बीच-बीच में मैं निराश हो जाता हूँ।

• मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है—इस सवाल का जवाब मैं कैसे दे सकता हूँ। व्यापक परिप्रेक्ष्य में निर्वाण प्राप्त करना हो सकता है—चाहे आप इसे जिस रूप में परिभाषित करें। ये निजी बातें हैं। इस तरह की बातों की चर्चा मैं नहीं करना चाहता।

• इंटरनेट कोई नई चीज नहीं है। 10 सालों से इसका वजूद रहा है। अब आम कंप्यूटर उपभोक्ताओं को यह भाने लगा है, जो मुझे अच्छा लग रहा है।



• मुझे ड्राइंग रूम की तुलना में गुफा अधिक आकर्षक लगती है।

• इंटरनेट को लोगों के घरों तक पहुँचाने का अर्थ है सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार करना। यह सेटटॉप बॉक्स को डिजिटल बनाने जैसी बात नहीं है। इससे ज्यादा-से-ज्यादा वीडियो रेंटल शॉप बंद हो जाएँगे और फिल्म देखने के लिए हमें बाहर जाने की जहमत नहीं उठानी पड़ेगी। इस बात को लेकर मैं अधिक उत्साहित नहीं हूँ। मैं होम शॉपिंग को लेकर भी अधिक उत्साहित नहीं हूँ। मगर अपनी गुफा में इंटरनेट के आगमन को लेकर मैं अत्यंत उत्साहित हूँ।

• कंपनी के रूप में हम यही चाहते रहे हैं कि प्रौद्योगिकी ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुँचे। ऐसा करते हुए हमें खुशी मिलती रही है। 'ऐपल-2' के जरिए हमने ऐसा किया और फिर 'मैक' के जरिए हम ऐसा करने जा रहे हैं।



- इस दशक में पहली बार समाज व कंप्यूटर के बीच डेटिंग हो रही है और इस रोमांस को कामयाब बनाने के लिए हम लोग सही समय पर सही जगह मौजूद हैं।
- मैं ऐपल को 1 करोड़ डॉलर की महान् कंपनी बनाना चाहता हूँ। ऐपल के सामने अवसर है कि वह दिखा दे कि एक महान् अमेरिकी कॉर्पोरेशन का निर्माण किस तरह हो सकता है, विज्ञान और गुणवत्ता का समन्वय किस तरह हो सकता है।
- ग्रुप के लिए मेरा सबसे अहम योगदान यह है कि मैं हमेशा उत्कृष्ट चीज बनाने पर जोर देता हूँ। कई बार जब लोगों से महान् चीजों की अपेक्षा नहीं रखी जाती तो वे महान् चीजें बना भी नहीं पाते। कोई उनसे ऐसी चीज की फरमाइश भी नहीं करता, न ही कहता है—‘यहाँ की ऐसी ही कार्य-संस्कृति है।’
- जब आप उत्कृष्टता का पैमाना सामने रखेंगे तो लोग उत्कृष्ट चीजें बनाकर दिखाएँगे। ऐसी उत्कृष्ट चीजें ही इतिहास बनाती हैं।
- पी.सी. कंपनियों के बीच ऐपल सर्वाधिक सर्जनात्मक कंपनी है, वहीं पिक्सर तकनीकी रूप से सर्वाधिक विकसित मनोरंजन कंपनी है। कुछ महीनों के अंतराल पर ऐपल नए उत्पाद बाजार में पेश करती है। इसके शीर्ष अधिकारी रोज दस महत्वपूर्ण फैसले करते हैं। जबकि पिक्सर साल में सिर्फ एक फिल्म बनाती है और इसके सी.ई.ओ. के रूप में साल भर में मैं सिर्फ तीन अहम फैसले लेता हूँ, जिन्हें बदल पाना बहुत कठिन होता है।
- जब मैं '70 के दशक के डेट्राइट के बारे में सोचता हूँ तो मुझे लगता है, वह खराब कारों का दौर था। क्यों? क्योंकि कंपनी का संचालन करनेवालों को कार से लगाव नहीं था।
- आज पी.सी. उद्योग से जुड़े ज्यादातर जो लोग कंपनियाँ चला रहे हैं, उन्हें पी.सी. से कोई लगाव नहीं है। क्या स्टीव बालमेट को पी.सी. से लगाव है? क्या क्रेग बैरट को पी.सी. से लगाव है? क्या माइकल डेल को पी.सी. से लगाव है? अगर डेल पी.सी. नहीं बेच रहे होते तो कुछ और बेचते। ये लोग उस चीज से प्यार नहीं करते हैं, जिस चीज का वे निर्माण करते हैं।
- हम अभी जो ऐपल में कर रहे हैं, वह मुझे बेहद अच्छा लग रहा है। मुझे यह ऐपल का अब तक का सर्वश्रेष्ठ कार्य लगता है। हमारे कैरियर के लिए मैक का निर्माण करना एक ऊँचाई का स्पर्श करने के समान रहा है। जिस तरह बीटल्स ने शी स्टेडियम में कार्यक्रम पेश किया, कुछ वैसा अनुभव हमें भी हुआ। हमने 14 से 18 घंटे तक रोजाना काम किया, हफ्ते में सात दिन काम किया, दो साल, तीन साल तक इसी तरह काम किया। वही हमारी जिंदगी बन गई थी। हमें वैसा करना अच्छा लग रहा था। जवान होने के नाते हम वैसा कर सकते थे।



- हमारी पीढ़ी बेहतर जिंदगी गुजारने की जगह जिंदगी के अर्थ को समझने में अधिक दिलचस्पी रखती थी, इसलिए हम लोग समाधान की तलाश में निकलते थे। हमने उन अनुभवों से समझा कि '50 और '60 के दशक के भोगवाद से परे भी जीवन का कोई गहरा अर्थ हो सकता है। हम अधिक गहराई में जाकर सच का पता लगाना चाहते थे।
- मुझे ऊब बेहद पसंद है। ऊब के चलते उत्सुकता पैदा होती है और उत्सुकता से ही हर चीज पैदा होती है। सारी प्रौद्योगिकी कमाल ही है, मगर निठल्ले बैठकर चिंतन करना भी कमाल का अनुभव होता है।
- हमारे कारोबार में ज्यादातर लोगों के पास अनेकानेक प्रकार के अनुभव नहीं हैं। लिहाजा उनके पास इतने बिंदु नहीं हैं, जिन्हें वे जोड़ सकें और उनकी सोच एक ही परिपाटी के समाधान पर आकर खत्म हो जाती है। वे यह समझ ही नहीं पाते कि उस समस्या का एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य भी है।
- इनसान के अनुभवों को जितनी गहराई से समझने की क्षमता होगी, हमारा डिजाइन भी उतना ही बेहतर होगा।
- आप बिंदुओं को आगे की तरफ देखकर नहीं जोड़ सकते। उन्हें जोड़ने के लिए आपको पीछे की तरफ मुड़कर यानी बीते समय की ओर देखना होगा। इससे आप में ये भरोसा पैदा होगा कि हाँ, ये बिंदु भविष्य में कहीं-न-कहीं जुड़ जाएँगे।
- आपको किसी चीज पर तो विश्वास करना ही होगा—अपने अंदर की आवाज, भाग्य, जीवन, कर्म या और कुछ भी। इस सोच ने मुझे कभी निराश नहीं होने दिया है, और इसी ने मेरी जिंदगी को पूरी तरह बदलकर रख दिया।

- एक आई पॉड, एक फोन, एक इंटरनेट मोबाइल संदेशवाहक—ये तीनों अलग-अलग उपकरण नहीं हैं! और हम इन्हें 'आई फोन' कहते हैं! आज ऐपल फोन को फिर से नया रूप देनेवाला है। यह नए रूप में आ भी गया है।
- हम यहाँ तक 1,000 चीजों को न कहते हुए पहुँचे हैं, क्योंकि हम ये इत्मीनान कर लेना चाहते थे कि हम गलत रास्ते पर न चले जाएँ या कुछ ज्यादा ही न कर बैठें।
- हम हमेशा नए बाजार के बारे में सोचते रहते हैं, जहाँ हमें दाखिल होने का मौका मिल सके; लेकिन सिर्फ न कहने के बाद ही आप उन चीजों पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जो सही मायने में महत्वपूर्ण हैं।
- हम यह भी नहीं जानते कि नए बाजार के बारे में सोच हमें कहाँ ले जाएगी। हम बस इतना जानते हैं कि कुछ ऐसा है, जो हम सबसे कहीं ज्यादा बड़ा है।
- ऐपल की बाजार में हिस्सेदारी बी.एम.डब्ल्यू., मर्सिडीज या पोर्श की वाहनों के बाजार में हिस्सेदारी के मुकाबले ज्यादा है। बी.एम.डब्ल्यू. या मर्सिडीज में बुरा क्या है?
- व्यक्तिगत तौर पर लोग अंदर से अच्छे होते हैं। मैं लोगों को समूह के तौर पर देखता हूँ तो मेरा नजरिया कुछ हद तक नकारात्मक होता है। और मैं जब देखता हूँ कि हमारे देश में क्या हो रहा है, तो बहुत चिंतित हो जाता हूँ; जबकि यह दुनिया का सबसे खुशकिस्मत देश है। हम अपने देश को अपने बच्चों के लिए एक बेहतर जगह बनाने को लेकर उत्साहित नहीं दिखते।
- खुद को गुणवत्ता का पैमाना बनाओ। कुछ लोग उस माहौल के अभ्यस्त नहीं होते, जहाँ उत्कृष्टता की अपेक्षा की जाती है।
- नयापन उन लोगों से आता है, जो हॉल तक जानेवाले गलियारों में मिलते हैं या रात के 10.30 बजे एक-दूसरे से फोन पर किसी नए आइडिया की बात करते हैं, या चूँकि उन्होंने यह महसूस कर लिया कि किसी समस्या के बारे में जिस तरह वे सोच रहे थे, उसमें कुछ ऐसा था, जो कमियाँ पैदा कर रहा था।
- कंप्यूटर से या सॉफ्टवेयर से, जो अभी विकसित किए जाने हैं, उनसे हमारे सीखने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव आएँगे।
- सृजनात्मकता बस चीजों को जोड़ने का एक तरीका है। जब आप किसी नई चीज को बनानेवाले से ये पूछेंगे कि उन्होंने ऐसा कैसे किया, तो उन्हें थोड़ा अपराध-बोध होगा, क्योंकि वास्तव में उन्होंने खुद इसे नहीं बनाया है, उन्होंने बस ऐसा कुछ देखा था। कुछ समय बाद उन्हें ये स्वाभाविक लगने लगता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि वे अपने अनुभवों को जोड़ पाते हैं और नई चीजों में उन्हें तब्दील करते हैं।
- मैं नहीं समझता कि मैंने किसी चीज के लिए कभी इतनी मेहनत की है; लेकिन मैकिंतोश के लिए काम करना मेरी जिंदगी का सबसे उम्दा अनुभव था। उसमें जितने भी लोगों ने काम किया, सब यही कहेंगे। अंत में हममें से कोई भी नहीं चाहता था कि यह बाजार में आए। हमें ऐसा लग रहा था कि एक बार यह हमारे हाथों से बाहर गया तो फिर ये हमारा नहीं रह जाएगा।
- मैं समझता हूँ, मैकिंतोश ने दुनिया को काफी करीब ला दिया है और ये दूरी आगे और कम होती जाएगी। हर चीज का एक नकारात्मक पहलू भी होता है; हर चीज का एक अनचाहा नतीजा सामने आता है। तकनीकी का जो सबसे नाश करनेवाला उदाहरण मैंने आज तक देखा है, वह है टेलीविजन; लेकिन हाँ, टेलीविजन अपने उत्कृष्ट रूप में एक शानदार आविष्कार भी है।
- मैं समझता हूँ कि इस वक्त एक जंग छिड़ी हुई है, जो नए उत्पाद विकसित करनेवालों की सोच और ग्राहकों की सोच के बीच चल रही है और फिलहाल आईफोन और एंड्रॉइड इस जंग में जीत रहे हैं।



- मैं चाहता हूँ कि ब्रह्मांड में टन-टनाटन घंटियाँ बज उठें।
- मैं आशावादी हूँ, इस लिहाज से कि मैं मानता हूँ कि लोग शरीफ व इज्जतदार होते हैं और उनमें से कुछ सही में काबिल होते हैं। व्यक्तियों के लिए मेरी सोच काफी आशावादी है।
- मुझे दुःख है, पर ये सच है। आपके बच्चे हों तो इन चीजों के प्रति आपका नजरिया बदल जाता है। हम पैदा होते हैं, कुछ देर के लिए जिंदा रहते हैं और फिर मर जाते हैं। यह लंबे समय से होता चला आ रहा है। तकनीक ने इसे ज्यादा नहीं बदला है, कहीं तो थोड़ा भी नहीं।
- मैं अपने कक्ष में इंटरनेट के होने से बेहद रोमांचित रहता हूँ।
- मैं हमेशा चाहता हूँ कि हम जो कुछ भी करते हैं, उसकी शुरुआती तकनीक पर मेरा स्वामित्व और नियंत्रण हो।

• अगर यह आपको अब तक नहीं मिली है तो इसकी तलाश करते रहिए। हार मत मानिए। जैसाकि दिल की हर बात के साथ होता है, जब आपको मिल जाएगा, आप खुद-ब-खुद समझ जाएँगे। और, किसी भी यादगार रिश्ते की तरह जैसे-जैसे वर्ष बीतते जाते हैं, यह बेहतर और बेहतर होता चला जाता है।

• इसके लिए एक साधारण सोचवाले निर्देश की जरूरत पड़ती है कि जाओ, ये नंबर लाओ। अब इस नंबर में जोड़ दो, नतीजा वहाँ लिख दो, सोचो, क्या ये उस दूसरे नंबर से ज्यादा बड़ा है? लेकिन इसे कार्यान्वित करने की दर क्या हो, मान लीजिए 10,00,000 प्रति सेकंड 110,00,000 प्रति सेकंड की दर से, नतीजा किसी जादू की तरह लगने लगता है।

• हमें 'नेक्स्ट कंप्यूटर' बनाने में तीन साल लग गए। अगर हम ग्राहकों को वे कंप्यूटर दे देते, जो उन्होंने माँगा था तो हम वह कंप्यूटर बनाते, जो उन्हें हमसे बातचीत के बाद सिर्फ एक साल तक खुश रख सकता था, न कि अब तक जैसी कि आज उनकी माँग है।



• इंटरनेट की इन शुरुआतों को देखकर यह बता पाना मुश्किल है कि वे कंपनियाँ बनाने में ज्यादा दिलचस्पी ले रहे हैं या उन्हें सिर्फ पैसे बनाने से मतलब है। मैं आपको बता सकता हूँ, कम-से-कम इतना कि—अगर वे सचमुच कंपनी नहीं बनाना चाहते तो वे यहाँ नहीं टिक सके। इसकी वजह यह है कि अगर आपके अंदर जुनून नहीं है तो आप हार मानकर इसे छोड़ देंगे।

• यह तकनीक पर भरोसा करने की बात नहीं है। यह लोगों पर भरोसा करने की बात है।

• यह करिश्मा और हस्ती की बात नहीं है, यह नतीजों और उत्पादों की बात है और उन आधारभूत चीजों की बात है, जिसकी वजह से ऐपल में काम करनेवाले और ऐपल के बाहर के लोग इस कंपनी के बारे में उत्साहित होते जा रहे हैं, क्योंकि वे यह समझ रहे हैं कि ऐपल क्या है और उद्योग जगत् में योगदान की इसमें कितनी क्षमता है।

• यह उन औजारों पर भरोसे की बात नहीं है जिनसे आप काम करते हैं। औजार तो बस औजार होते हैं। या तो वे काम करते हैं या काम नहीं करते।

• ये तो लोग हैं जिन पर या तो आपको भरोसा होता है या नहीं होता। हाँ, बिल्कुल, मैं अब भी आशावादी हूँ, मेरा मतलब है, मैं कभी-कभी निराशावादी हो जाता हूँ, पर ज्यादा देर के लिए नहीं।

• अब हम 50 लाख गाने हर दिन बेच रहे हैं। क्या यह अविश्वसनीय नहीं लगता? इसका मतलब है—हर दिन के हर घंटे के एक सेकंड में 58 गाने।

• बूढ़े लोग पूछते हैं, 'ये क्या है?' लेकिन लड़का पूछता है, 'मैं इससे क्या कर सकता हूँ?'

• हमारी डी.एन.ए. एक उपभोक्ता कंपनी है, उन अलग-अलग ग्राहकों के लिए, जो या तो हमें सही कहता है या गलत कहता है। हम उन लोगों के बारे में ही सोचते हैं। और हम समझते हैं कि हमारा काम उपभोक्ताओं के अनुभवों की पूरी जिम्मेदारी लेना है। और अगर ये उम्मीदों के मुताबिक नहीं है तो यह हमारी गलती है—सीधे और साफ तौर पर।

• संकेत करनेवाले उपकरणों से हम सभी वाकिफ हैं। हमने उनपर कई अध्ययन और परीक्षण किए हैं। उनसे विभिन्न प्रकार के कार्य करना आसान हो जाता है, जैसे कि कट और पेस्ट करना, वह भी माउस की मदद से। लिहाजा ये इस्तेमाल में न सिर्फ आसान हैं बल्कि ज्यादा कारगर भी हैं।

• काफी हद तक ऐपल और डेल ही इस कारोबार में पैसा कमा रहे हैं। डेल की कमाई इस उद्योग का वॉल-मार्ट होने की वजह से है। हमारी कमाई नए प्रयोगों की वजह से होती है।

• हम किसी सुई का इस्तेमाल नहीं करेंगे। हम दुनिया के सबसे अच्छे पॉइंटिंग डिवाइस यानी संकेतक उपकरण का इस्तेमाल करेंगे। हम ऐसे संकेतक उपकरण का इस्तेमाल करनेवाले हैं, जिसके साथ हम सभी पैदा हुए हैं। एक नहीं, दस-दस के साथ पैदा हुए हैं। हम अपनी उँगलियों को इस्तेमाल करनेवाले हैं। हम इसे अपनी उँगलियों से छूनेवाले हैं। और हमने एक नई तकनीक का आविष्कार किया है, जिसे 'मल्टी टच' कहते हैं, जो अद्भुत है। यह जादू की तरह काम करता है।

• लिहाजा जब ये लोग अपने उत्पाद बेचेंगे, बेचकर आश्चर्यजनक रूप से अमीर हो जाएँगे, तब भी वे खुद को जिंदगी के सबसे माला-माल करनेवाले अनुभव से वंचित और लुटा हुआ महसूस करेंगे। इसके बिना उन्हें कभी अपनी कीमत का पता नहीं चल पाएगा या अपनी ताजा कमाई गई दौलत को किस नजरिए से देखें, यह भी समझ नहीं पाएँगे।

- कभी-कभी जिंदगी आपके दिमाग पर किसी ईंट की तरह आकर चोट करती है। उस वक्त भरोसा मत खोना।
- कभी-कभी जब आप आविष्कार करते हैं, आपसे गलतियाँ होती हैं। अपनी गलतियों को तुरंत मान लेना चाहिए और आविष्कार को बेहतर बनाने में जुट जाना चाहिए।
- यह मेरे कुछ मंत्रों में से एक रहा है—केंद्रित ध्यान और सहजता। साधारण चीज उलझी चीजों से भी मुश्किल हो सकती है—सोच को साफ और साधारण बनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यह मेहनत अंत में सार्थक होती है, क्योंकि एक बार आपने उसे हासिल कर लिया तो आप पहाड़ों को भी हिला सकते हैं।
- मैक का डिजाइन ऐसा नहीं था जैसाकि वह दिखता था, हालाँकि वह उसका ही एक हिस्सा था। शुरू में यह वैसा ही था जैसा काम करता था।
- वाकई में कुछ अच्छा डिजाइन करने के लिए आपको उसकी तह तक जाना पड़ता है। आपको यह समझना पड़ता है कि यह किस काम के लिए है।
- किसी चीज को पूरी तरह समझने के लिए दिल में एक जुनून होना चाहिए। कहे तो किसी चीज को अच्छी तरह चबाओ, सिर्फ जल्दी से निगल जाने से नहीं होगा।
- डेस्कटॉप कंप्यूटर का उद्योग मृतप्राय हो चुका है। आविष्कार लगभग बंद हो चुके हैं। माइक्रोसॉफ्ट ने सिर्फ थोड़े से आविष्कार की बदौलत वर्चस्व को कायम रखा है। ये अध्याय खत्म हो गया। यहाँ ऐपल की हार हुई।
- डेस्कटॉप का बाजार अंधकार-युग में प्रवेश कर चुका है और अगले 10 वर्ष तक वह अंधकार-युग में ही रहेगा, या कम-से-कम इस पूरे दशक तक।
- डेस्कटॉप का आविष्कार इस वजह से हुआ, क्योंकि एक तो यह इकलौता उपकरण था और दूसरा, आपको अपने आँकड़े अपने पास ही रखने थे। ये डेस्कटॉप की दुनिया के लिए बहुत बड़ी बात थी। और अब इसकी जरूरत खत्म हो सकती है। आपको अपने पास सहेजकर कुछ भी रखने की जरूरत नहीं पड़ेगी। वह दिन दूर नहीं, जब आपको कुछ भी इकट्ठा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
- ज्यादातर पर्सनल कंप्यूटर कंपनियों से इंजीनियरिंग खत्म हो चुकी है। उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक सामान बनानेवाली कंपनियों में सामानों में लगे सॉफ्टवेयर को लेकर कोई समझ नहीं है। यही वजह है कि आप वह सामान कहीं और नहीं बना सकते, जो ऐपल में बनाए जा सकते हैं। ऐपल एकमात्र ऐसी कंपनी है, जहाँ एक ही छत के नीचे सबकुछ है।
- वर्ड स्टार, जो सबसे मशहूर वर्ड प्रोसेसिंग प्रोग्राम है, उसका मैनुअल 400 पेज मोटा है। एक उपन्यास लिखने के लिए, आपको एक उपन्यास पढ़ना पड़ता है, वह भी ऐसा, जो लोगों को किसी रहस्य के जैसा लगे। लोग अब स्लैश क्यू-जेड नहीं सीखनेवाले, ठीक उसी तरह जैसे मोर्स कोड सीखने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। मैकिंटोश की उपयोगिता यहीं साबित होती है।
- कुल मिलाकर बात इतनी है कि नई तकनीक जरूरी नहीं कि पुरानी तकनीक को बदल दे; लेकिन उसमें बदलाव जरूर लाएगी, वह भी एक नई परिभाषा के साथ। और अंततः इसे बदल देगी। ये वैसे ही होगा जैसे कुछ लोगों के पास तब तक ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी. था, जब तक कि रंगीन टेलीविजन नहीं आ गया। अंततः उन्होंने फैसला किया कि नई तकनीक में पैसा लगाना सही है या नहीं।
- जिन लोगों ने मैकिंटोश के लिए काम किया, उसकी असली ताकत वही लोग हैं। मेरा काम तो उनके लिए अवसर पैदा करना है, संगठन के बाकी लोगों को योजना से बाहर रखना और काम करनेवालों से दूर रखना।
- हम 7 इंच का टैबलेट इस वजह से नहीं बनाएँगे, क्योंकि हम नहीं चाहते कि कम कीमतों पर कोई होड़ मचे, बल्कि हम समझते हैं कि 7 इंच की स्क्रीन के साथ एक जबरदस्त टैबलेट नहीं बनाया जा सकता।
- 7 इंचवाले टैबलेट आकार की वजह से बीच में फँस गए हैं—इतने बड़े हैं कि स्मार्टफोन को टक्कर नहीं दे सकते और इतने छोटे हैं कि आई पैड से उनका कोई मुकाबला नहीं है।
- इन तकनीकों से जिंदगी आसान बन गई है, हम लोगों तक पहुँच सकते हैं, जो हमारे लिए पहले मुमकिन नहीं था। ये कुछ ऐसा है, जैसे आपका बच्चा जन्मजात विसंगतियों को लेकर पैदा हुआ और फिर दूसरे माँ-बाप से जुड़ा और मदद करनेवाले समूह सामने आए, इलाज करवाया और उसे आविष्कार के बाद आई नई-नई दवाइयाँ मिल गईं। इन चीजों का जिंदगी पर एक बड़ा असर होता है। मैं उस बात को कम महत्वपूर्ण नहीं मानता।
- यह जरूरी नहीं कि कोई चीज दुनिया न बदल दे तो वह महत्वपूर्ण नहीं।
- यह क्रांति, सूचना की क्रांति, यह उन्मुक्त ऊर्जा की क्रांति भी है। इसका एक और रूप है—उन्मुक्त बौद्धिक ऊर्जा।
- यह आज बड़ा बेडौल दिखता है। फिर भी हमारे मैकिंटोश कंप्यूटर 100 वॉट के बल्ब से कम बिजली पर चलते हैं और इनसे आप कई घंटे की बिजली बचा सकते हैं। आज से दस या बीस साल बाद यह किस काम का रह जाएगा, या आज से 50 साल बाद इसका क्या होगा?



- दिलचस्पी पैदा करनेवाले विचारों और नवीनतम तकनीकों को एक ऐसी कंपनी के रूप में ढालने में, जो वर्षों तक नए आविष्कार करती रहे, अनुशासन की जरूरत पड़ती है।
- हम उन लोगों को चुनते हैं, जो दुनिया की सबसे अच्छी चीज बनाना चाहते हैं।
- हमने स्क्रीन के बटन इतने खूबसूरत बनाए हैं कि आपका मन उन्हें चूमने को करेगा।
- हम समझते हैं कि एंड्रॉइड कई-कई गुना बँटा हुआ है और हर दिन पुरजों में बँटता चला जा रहा है। और जैसाकि आप जानते हैं, ऐपल की ये कोशिश होती है कि एक ऐसा मॉडल तैयार हो, जिसमें हर खूबी एक साथ हो, ताकि इस्तेमाल करनेवाला अलग-अलग सिस्टमों को जोड़नेवाला बनकर न रह जाए।
- हम समझते हैं कि मैक की बिक्री असंख्य तक पहुँच जाएगी, लेकिन हमने किसी और के लिए मैक को नहीं बनाया। हमने इसे अपने लिए बनाया है। हम एक समूह में काम करनेवाले लोग थे, जो ये फैसला करते थे कि ये अद्भुत होगा या नहीं। हम बाहर नहीं निकल सकते थे और न मार्केट रिसर्च कर सकते थे। हम बस इतना चाहते थे कि हम जो सर्वोत्तम चीज बना सकते हैं, वह बना लें।
- हम फोन पर एक नया प्रयोग करना चाहते हैं। ये किलर एप्लिकेशन क्या है? किलर एप्लिकेशन से कॉल किए जा रहे हैं! यह हैरान करनेवाला है कि ज्यादातर फोन पर कॉल करना कितना कठिन होता है।
- हम चाहते हैं कि आप अपने संपर्कों का इस्तेमाल ऐसे करें, जैसा पहले कभी नहीं किया। अपने आईफोन को आप अपने कंप्यूटर या मैक के साथ जोड़ दें।
- हम इस काबिल बननेवाले हैं कि हम अपने कंप्यूटर को चीजों पर नजर रखने का निर्देश दे सकें और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो कि कोई परिवर्तन हो, तो कंप्यूटर काररवाई कर सके और हमें तथ्यों की जानकारी दे सके।
- हम अपनी पूँजी के इस्तेमाल को लेकर बेहद अनुशासित हैं और एक लंबी अवधि में हमारी उपब्धियों से ये बात साबित भी हो चुकी है। हम पैसों को पानी की तरह नहीं बहाते, हम पैसों के वश में आकर फिज़ूल के धंधे नहीं शुरू करते। इसलिए, हम चाहेंगे कि हम अपने पैसे को बचाकर रखें, क्योंकि हमें लगता है कि भविष्य में कोई-न-कोई बड़ा मौका जरूर आता है।
- जैसाकि हम जानते हैं, ऐपल ने पर्सनल कंप्यूटर को ईजाद किया और फिर इसने ग्राफिकल यूजर इंटरफ़ेस का आविष्कार किया, जो आठ साल बाद सामने आया (मैक के बाजार में आने के बाद)। लेकिन इस दौरान कंपनी के पास दस साल थे और इस दौरान वह सोती रही।
- हम चाहते हैं कि हम ऐसा उत्पाद बनाएँ, जो तकनीक के लिहाज से छलाँग लगानेवाला हो, किसी भी मोबाइल उपकरण से स्मार्ट और इस्तेमाल में एकदम आसान। आईफोन वैसी ही चीज है। ओ.के., तो हम फोन को एक नया रूप देनेवाले हैं।
- जब आप जवान होते हैं, आप टेलीविजन की तरफ देखकर सोचते हैं, यह एक साजिश है। तमाम नेटवर्क एक होकर हमें मूर्ख बनाने की साजिश रच रहे हैं। लेकिन जब आपकी उम्र थोड़ी ढल जाती है, आप महसूस करते हैं कि वह सच नहीं था। नेटवर्क अपना कारोबार कर रहे हैं और लोगों को वही दे रहे हैं, जो वे चाहते हैं।
- स्टाइलस (सुई) किसे चाहिए? आपको उसे निकालना पड़ता है और फिर अलग रखना पड़ता है, और फिर वे गुम हो जाते हैं। छिः, किसी को भी स्टाइलस नहीं चाहिए।
- हमारी तकनीक के साथ, चीजों के साथ, सही मायने में एक गैराज में 3 लोग वह तूफान खड़ा कर सकते हैं, जो माइक्रोसॉफ्ट में 200 लोग मिलकर करते हैं। वे सही में तूफान खड़ा कर सकते हैं।
- कॉरपोरेट अमेरिका की एक जरूरत है। वह इतनी बड़ी है कि उससे बहुत ज्यादा पैसे बच सकते हैं या उससे बहुत सारे पैसे बनाए जा सकते हैं, या अगर वह मिस हो गई तो इतने ज्यादा पैसे खर्च हो सकते हैं कि जिससे एक वस्तु की क्रांति शुरू हो सकती है।
- वह अब अपने तरीके से जिंदगी जी रहा है। वह करीब पाँच साल से ऐपल के साथ नहीं है। लेकिन उसने जो किया, वह इतिहास के पन्नों में दर्ज होगा।
- अपने पूरे व्यावसायिक जीवन में मैंने कुछ-न-कुछ नया खोजा है—कुछ नवीन से नवीनतम। मैं सिर्फ देखता हूँ कि चीजें कैसे काम करती हैं और उन्हें अपने आप वैसे ही काम करने देता हूँ। धंधे में कोई गहराई से इन बातों को नहीं सोचता—मैंने यह सीखा है और बस इसी के अनुसार अपना काम करता हूँ।
- पैसा एक माध्यम है, जो आपको धंधा करने के योग्य बनाता है। यह आपको आपके सपनों में निवेश के योग्य बनाता है। उस समय पैसा मेरे लिए अहमियत नहीं रखता था। सबसे अहम चीजें थीं—कंपनी, लोग और हमारे उत्पाद। वे उत्पाद, जो लोगों को हमसे जोड़नेवाले थे। हम माल नहीं बेच रहे थे।

• बचपन में 'साइंटिफिक अमेरिकन' पत्रिका में मैंने एक लेख पढ़ा था। इसमें भालू, चिंपेंजी, रेकून, मछली, पक्षियों आदि की चाल के बारे में बताया गया था। वे 1 किलोमीटर चलने में कितनी कैलोरी खर्च करते हैं। मानव की गति का भी आकलन किया गया था। इनमें कॉण्डोर (एक प्रकार का गिद्ध) अव्वल रहा। आदमी तीसरे नंबर पर रहा, लेकिन यह भी बताया गया था कि साइकिल पर सवार होकर आदमी कॉण्डोर को पीछे छोड़ सकता है। इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया।



- आदमी मशीनें बनाता है। मशीनों के जरिए हम अपनी ताकत को कई गुना बढ़ा सकते हैं। यही मेरी प्रेरणा बना और मैंने पर्सनल कंप्यूटर बनाया।
- मेरा मानना है कि पर्सनल कंप्यूटर इतिहास से लेकर अब तक का सबसे उम्दा मानव आविष्कार है। यह सही वक्त पर, सही स्थान पर और सही दिशा में बना एक शाहकार है।
- पिकासो ने कहा है—“अच्छे कलाकार नकल करते हैं और महान् कलाकार चोरी करते हैं।” हम बड़ी बेशर्मी से महान् विचारों को चुरा लेते हैं। मैकितोश को महान् सफल बनानेवालों में संगीतकार, कवि, कलाकार, जीव-विज्ञानी और इतिहासकार जैसे लोग शामिल रहे हैं। वे विश्व के सर्वश्रेष्ठ कंप्यूटर विज्ञानी भी रहे हैं, लेकिन अगर कंप्यूटर विज्ञान नहीं होता तो ये लोग अन्य क्षेत्रों में नाम कमा रहे होते।
- हम सभी दिशाओं से प्रेरित होकर खुले दिमाग से काम करके नई चीजें बनाते हैं। आपका दिमाग संकुचित होगा तो आप बड़े काम नहीं कर सकेंगे।
- कंप्यूटर का धंधा मेरे लिए एक नदी की तरह है। जब नदी की धारा तेज होती है तो उसमें कचरा, काई और कीचड़ नहीं होता; लेकिन धारा धीमी होती है तो बदबूदार, कीचड़ भरी और काई-युक्त हो जाती है। मुझे ये चीजें गलाकाट राजनीति की तरह दिखाई पड़ती हैं। लेकिन इस समय हमारा धंधा तेज चाल से चल रहा है। पानी एकदम साफ है, इसलिए गंदगी ठहरने का सवाल ही नहीं उठता।
- नई खोजों के लिए बहुत जगह है।
- मैं महज एक अर्धशिक्षित व्यक्ति हूँ, जो देखकर और पूछकर सीखता व करता है।
- मैंने देखा है कि कंप्यूटर के जितने भी महान् तकनीशियन हैं, सभी खबू हैं। है न मजेदार!
- मैं उभयहस्त हूँ—मैं दोनों हाथों से काम कर सकता हूँ।
- अरबपति बनने के बाद सचमुच कुछ नहीं बदला, क्योंकि मैं इस बारे में ज्यादा नहीं सोचता। जो इस बारे में ज्यादा सोचते हैं, मैं उनसे कभी नहीं मिलता।
- ऐपल जब शुरू हुई, पहली ऐसी कंपनी थी, जिसने अपने नीचे से ऊपर तक के सभी कर्मचारियों को शेयर दिए।
- बौद्ध धर्म के प्रति रुझान और शाकाहार में रुचि के कारण मैं मांस नहीं खाता और हर रविवार को चर्च नहीं जाता।
- मैं जानता हूँ कि दुनिया की किस्मत अमेरिका के हाथों में है। मैं ऐसा अनुभव करता हूँ। मैं देश की उन्नति में अपना सर्वश्रेष्ठ करनेवाला हूँ।
- कंप्यूटर की तरह राजनीति में आने के बारे में ज्यादा नहीं सोचता। दोनों दलों (डेमोक्रेट्स एवं रिपब्लिकन) के लोग बुलाते हैं और इस पर चर्चा करते हैं, लेकिन मैं समझता हूँ कि मैं जिस क्षेत्र में हूँ, वहीं रहकर समाज की ज्यादा सेवा कर सकता हूँ। राजनीति में बहुत से उत्तराधिकारी पहले ही मौजूद हैं।
- महान् उत्पाद दो दृष्टिकोणों को मिलाकर बनते हैं। ये दृष्टिकोण हैं—तकनीकी दृष्टिकोण और ग्राहक दृष्टिकोण। दोनों जरूरी हैं। आप ग्राहकों से पूछकर उनकी मरजी का उत्पाद नहीं बना सकते। ये ध्यान में रखें, वे कुछ नया चाहते हैं।
- 'नेक्स्ट' कंप्यूटर बनाने में हमें 3 साल लगे। अगर हम ग्राहकों की पसंद के अनुसार कंप्यूटर बनाएँ तो वे उससे एक साल खुश रहेंगे। इसके बाद हमें फिर पूछना पड़ेगा कि अब आगे वे क्या चाहते हैं?
- प्रौद्योगिकी तेजी से बदलती है और ग्राहक अनुमान नहीं लगा सकते कि प्रौद्योगिकी क्या कर सकती है। वे वह चीज नहीं माँगेंगे, जिसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन प्रौद्योगिकी उनकी सोच से आगे चलती है। अगर आप उन्हें कुछ बताएँ तो वे कहेंगे, 'बेशक, हम उसे लेंगे।' यह तार्किक तो लगता है कि पहले ग्राहकों से पूछा जाए कि उन्हें क्या चाहिए, फिर वह उन्हें बनाकर दे दिया जाए। लेकिन वे कठिनाई से यह बता सकते हैं कि उन्हें क्या सचमुच चाहिए।
- ग्राहक बहुत होशियार हैं। वे ब्रांड की सीमाएँ जानते हैं।
- लोग नए उत्पादों की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं। ज्यादातर उत्पाद वास्तव में पुराने उत्पादों के ही विस्तार हैं।
- ऐपल में चमत्कारों से भरे लोग मौजूद हैं; लेकिन पिक्सर में समर्पित महारथियों का ऐसा समूह है, जैसा मैंने कहीं नहीं देखा। वहाँ कंप्यूटर से

पेड़-पौधे, फूल-पत्ती, घास आदि बनानेवाला एक पी-एच.डी. उद्यमी है। एक शख्स फिल्मों पर चित्र उतारने में विश्व का सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ है। पिक्सर में सारा काम अनुशासनबद्ध ढंग से होता है।

- आप आप हैं और आप अन्य लोगों के साथ काम करते हैं। अगर आप किसी को प्रेरित करते हैं तो इससे उस व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

- किसी खास समुदाय को ध्यान में रखकर उत्पादों को डिजाइन करना बेहद मुश्किल होता है; क्योंकि बहुत से लोग नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, जब तक आप उन्हें दिखाएँ नहीं।

- नई खोज एक लीडर और एक अनुयायी के बीच अंतर बताती है।

- आपका समय सीमित है, इसलिए इसे किसी और की जिंदगी जीकर व्यर्थ मत कीजिए, बेकार की सोच में मत फँसिए। अपनी जिंदगी को दूसरों के हिसाब से मत चलाइए। औरों के विचारों के शोर में अपनी अंदर की आवाज को, अपने इंटीयूशन को मत डूबने दीजिए। वे पहले से ही जानते हैं कि आप सच में क्या बनना चाहते हैं, बाकी सब गौण है।

- डिजाइन सिर्फ यह नहीं है कि चीज कैसी दिखती या महसूस होती है, डिजाइन यह है कि चीज काम कैसे करती है।

- मुझे लगता है कि हम मजे कर रहे हैं। मुझे लगता है कि हमारे ग्राहकों को वास्तव में हमारे उत्पाद पसंद हैं और हम हमेशा बेहतर करने की कोशिश कर रहे हैं।

- इस बात को याद रखना कि मैं बहुत जल्द मर जाऊँगा, मुझे अपनी जिंदगी के बड़े निर्णय लेने में सबसे ज्यादा मददगार होता है; क्योंकि जब एक बार मौत के बारे में सोचता हूँ, तब सारी उम्मीद, सारा गर्व, असफल होने का डर सबकुछ गायब हो जाता है और सिर्फ वही बचता है, जो वाकई जरूरी है। इस बात को याद रखना कि एक दिन मरना है, किसी चीज को खोने के डर को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका है। ऐसा कोई कारण नहीं है कि आप अपने दिल की न सुनें।

- गुणवत्ता का मापदंड बनिए। कुछ लोग ऐसे वातावरण के आदी नहीं होते, जहाँ उत्कृष्टता की उम्मीद की जाती है।

- माइक्रोसॉफ्ट बेशर्मी के साथ हमारी नकल करने की कोशिश कर रही है। मगर हकीकत यह है कि हमारा उत्पाद 'टाइगर' महीने के अंत में बाजार में आ जाएगा, जबकि उसके उत्पाद 'लॉन्ग हॉर्न' को बाजार तक आने में दो साल लग जाएँगे। वह तेजी से नकल करना भी नहीं जानती है।

- कई कंपनियों ने छँटनी करने का फैसला किया है, शायद उनके लिए यह सही होगा। हमने अलग रास्ता चुना है। हमारा विश्वास है कि अगर हम ग्राहक के सामने अच्छे उत्पाद रखेंगे तो वे अपना पर्स खोलते रहेंगे।

- दिलचस्प विचारों और नई प्रौद्योगिकी को कंपनी में परिवर्तित करना, जो वर्षों तक नई खोज करती रहे। यह सब करने के लिए बहुत अनुशासन की आवश्यकता होती है।

- आप ग्राहक से यह नहीं पूछ सकते कि वे क्या चाहते हैं और फिर उन्हें वह बनाकर दें। आप जब तक उसे बनाएँगे तब तक वे कुछ नया चाहने लगेंगे।

- शायद मौत ही इस जिंदगी का सबसे बड़ा आविष्कार है।

- हमने जैसा वातावरण निर्मित किया है, उसके तहत सभी से उत्कृष्टता की अपेक्षा की जाती है। कार्य चाहे जैसा भी हो, उसका उत्कृष्ट होना जरूरी है।

- मेरा योगदान यही है कि मैं हमेशा उम्दा चीजों का निर्माण करने पर जोर देता हूँ—मैं हरेक पहलू को शानदार बनाने पर विश्वास रखता हूँ।

- जब लोग आईमैक को देखते हैं तो उन्हें डिजाइन शानदार लगता है। मगर ज्यादातर लोग केवल बाहरी खूबसूरती पर ही ध्यान देते हैं। आईमैक के बाजार में आने के बाद दो साल तक उसकी नकल तैयार कर पाना किसी के लिए संभव नहीं हुआ। यही गौर करने की बात है।

- आईमैक को बनाने के लिए जिस विशिष्ट इंजीनियरिंग का इस्तेमाल किया गया, वही उसकी सबसे बड़ी खूबी है। क्यूब और दूसरे उत्पादों के बारे में भी मेरी यही राय है।

- ऐपल के वजूद को अगर किसी उत्पाद के जरिए व्यक्त करना हो तो वह आई पॉड है। इस उत्पाद में ऐपल की विलक्षण प्रौद्योगिकी और उम्दा डिजाइन का संगम देखा जा सकता है। इसे दिखाकर हम कह सकते हैं कि हम इसी तरह चीजें बनाते हैं। अगर कोई मुझसे पूछेगा कि धरती पर ऐपल के वजूद का मकसद क्या है, तो उसे उदाहरण के तौर पर मैं आई पॉड दिखलाना पसंद करूँगा।

- अधिकतर उद्योग जगत् दस सालों से मैकिंटोश का इस्तेमाल करता रहा है और मैक के क्रांतिकारी यूजर इंटरफेस की नकल की जाती रही है। अब नए आविष्कार का समय आ गया है और ऐपल से बेहतर आविष्कार और कौन कर सकता है?

- ऐपल ही उद्योग जगत् की अगुवाई करता रहा है—पहले ऐपल टू, फिर मैकिंटोश और लेजर राइटर। अब हम जो विलय कर रहे हैं, उसके जरिए 'नेक्स्ट' के उन्नत सॉफ्टवेयर का मेल ऐपल के विकसित हार्डवेयर और वितरण तंत्र के साथ होगा, जिससे एक जबरदस्त उत्पाद दुनिया के सामने आएगा। ऐपल नए सिरे से अगले दस वर्षों तक उद्योग जगत् की अगुवाई करता रहेगा। ऐपल के प्रति अभी भी मेरे मन में गहरा लगाव

है और ऐपल के भविष्य को रचते हुए मुझे अपार खुशी महसूस होती है।

- आपका समय सीमित है, इसलिए इसे किसी और की जिंदगी जीकर व्यर्थ मत कीजिए, बेकार की सोच में मत फँसिए, अपनी जिंदगी को दूसरों के हिसाब से मत चलाइए।
- औरों के विचारों के शोर में अपनी अंदर की आवाज को, अपने इंट्यूशन को मत डूबने दीजिए। वे पहले से ही जानते हैं कि तुम सच में क्या बनना चाहते हो।
- अभिकल्पना किसी यंत्र की बाहरी बनावट मात्र नहीं है। अभिकल्पना तो इसकी कार्यविधि का मूल है।
- गुणवत्ता की कसौटी बनें। कई लोग ऐसे वातावरण के अभ्यस्त नहीं होते जहाँ उत्कृष्टता अपेक्षित होती है।
- दिलचस्प विचारों और नई प्रौद्योगिकी को कंपनी में परिवर्तित करना, जो सालों तक नई खोज करती रहे। ये सब करने के लिए बहुत अनुशासन की आवश्यकता होती है।
- अपने मन और अंतर्दृष्टि का अनुसरण करने का साहस करें; क्योंकि उन्हें किसी तरह से पहले से पता है कि आप सच में क्या बनना चाहते हैं।
- आप यहाँ ब्रह्मांड पर अपनी छाप छोड़ जाने के लिए हैं।
- गुणवत्ता प्रचुरता से अधिक महत्वपूर्ण है। एक छक्का दो-दो रन बनाने से कहीं बेहतर है।
- मैं इससे सहमत हूँ कि सफल और असफल उद्यमियों में आधा फर्क तो केवल अध्यवसाय का ही है।

□

संदर्भ-सूची

1. वाट वुड स्टीव जॉब्स डू? लेखक : पीटर सेंडर
2. बिहाइंड ऐपल : एंथोनी इंबीम्बो
3. स्टीव जॉब्स : द जर्नी इज द रिवार्ड : लेखक : जेफरी एस. यंग
4. द प्रेजेंटेशन सीक्रेट्स ऑफ स्टीव जॉब्स : लेखक : कारमाइन गेलो
5. आइकन स्टीव जॉब्स : जेफरी एस. यंग, विलियम एल. सीमोन
6. द सेकंड कमिंग ऑफ स्टीव जॉब्स : लेखक : एलन डचमेन
7. स्टीव जॉब्स : ऐपल एंड आई पॉड विजर्ड : लेखक : स्कॉट गिलोम
8. स्टीव जॉब्स : कंप्यूटर जीनियस ऑफ ऐपल : लेखक : वर्जीनिया ब्रेकेट
9. द सीक्रेट लाइफ ऑफ स्टीव जॉब्स : लेखक डेनियल लियोस
10. स्टीव जॉब्स : वाल्टर इसाकसन
11. www.webdunia.com
12. www.ptibhasha.com
13. Steve Jobs: The man who thought different by karen Blumenthal
14. allaboutslevejobs.com
15. www.apple.com
16. www.farbies.com
17. www.crunchbase.com
18. www.stevejobsthebiography.com
19. www.ted.com/.../steve jobs how to live before you die.ht
20. www.forbes.com/profile/steve-jobs/
21. www.biography.com
22. www.brainyquote.com/quotes/authors/s/steve jobs.html
23. www.businessinsider.com
24. स्टीव जॉब्स : थिंक्स डिफरेंट : एन ब्रेशेअर
25. allaboutstevejobs.com/pics/w
26. www.nypost.com/p/news.steve_jobs
27. www.latimes.com/.../la-steve-jobs-apple-pictures
28. computer.howstuffworks.com/mac/s/steve-jobs-pictures.htm
29. www.imdb.com/name/nm0423418/mediaindex
30. www.chicagotribune.com/.../sns-steve-jobs-years-pictures, 0,4005203.ph
31. www.ndtv.com › Photos › Gadge
32. content.time.com/time/photogallery
33. www.biography.com › People › Steve Jobs
34. knowyourmeme.com/memes/events/steve-jobs-death/photos
35. www.washingtonpost.com/.../steve-jobs-image
36. screenrant.com/ashton-kutcher-steve-jobs-photo
37. www.complex.com/tech/2012/.../gallery
38. www.wired.com/.../unpublished-photos-of-steve-jobs-and-silicon-valleys
39. gizmodo.com/5301470/the-life-of-steve-jobs
40. www.achhikhabar.com

41. www.hindisahityadarpan.in
42. inspiringquotes.in/steve-jobs
43. quotesihb.wordpress.com
44. www.indiblogger.in/indipost.php?post=102329
45. hindianmolvachan.in/tag/steve-jobs
46. yogeshboss.wordpress.com/tag/steve-jobs-quotes
47. www.dubzer.com/read?a=1945&show

□□□